

वर्ष : 14 अंक : 11
RNI No. UPHIN/2011/40224

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्ल्यू./एन.पी-341/2024-2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
मई - 2025
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

सूर्य सिद्धांत (भाग -1)

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है।



प्रकृति आश्रम

प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली

‘अशोक मानव’



9415041794, 9807636072

ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल बिल्डिंग मैटेरियल

सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)



बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंट • गिट्टी

मछली शहर, जौनपुर

मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष: 14 अंक: 11 | मई - 2025

संरक्षक

डॉ. उत्तम प्रकाश मानव

संपादक

अशोक मानव

कार्यकारी संपादक

उमेश

विधि सलाहकार

नवनीत कुमार वर्मा

मुख्य संवाददाता

आशीष त्रिपाठी

वरिष्ठ संवाददाता

अरविन्द त्रिपाठी

दिल्ली संवाददाता

मनोज

पूर्वांचल हेड

श्री प्रकाश मिश्रा

संवाददाता

सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील,

गौरव पंत, अभिषेक पंत,

हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी,

सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी, अभय सिंह

ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि

संजय यादव

कैमरा मैन

धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता

संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर,

लखनऊ, उत्तर प्रदेश- 226022

प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग,

फैजाबाद रोड, लखनऊ - 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच-पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।
नोट: इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वैक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद-लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक - अशोक मानव

www.praakritimail.com

info@praakritimail.com

editor.praakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर



P 8 नए युग का आरंभ

P 10 प्रकृति में श्रेष्ठ बनने की चाहत सिर्फ मानव की

P 11 गुरुत्वाकर्षण (संलयन बनाम स्थायित्व)

P 17 वक्रत-नशतर- ए-हथियार

P 20 देश-सेवा ही ईश्वर-सेवा है : सावरकर

P 26 पोषण ही नहीं, उपचार भी करती है माटी

P 40 ए आई से पुस्तकालय की जिज्ञासा खत्म

P 42 प्रकृति प्रवृत्ति आनन्द

P 46 "लु" का प्रकोप बढ़ा, अनिवार्य सावधानी

P 50 दक्षिण भारत की कुंभनगरी : कुंभकोणम

P 32 प्रकृति विज्ञान

सूर्य सिद्धांत भाग - 1

जब भी प्रकृति में प्रदूषण बढ़ने लगता है तब प्रकृति उसी मृदा में जैविक संरचना कर देती है जिसमें जीव प्रदूषण को अपना आहार बनाकर मिटा देता है और अपनी मृदा को सिद्धांत कर आवागमन से मुक्त होकर एक गुणधारी स्तम्भ बन जाता है।



कर्म

क - कर्तव्य, र - रथ, म - मन



अशोक मानव



स्वभूमि को सिद्धांत करने की प्राकृतिक क्रिया में वाहय जगत से होने वाले हस्तक्षेप को प्रकृति ईंधन बनाकर बीजत्व में जोड़ देती है जिसे 'कर्म' कहते हैं।



अर्थात् कर्तव्य रूपी रथ मन का। प्राकृतिक अर्थों में कर्म प्रकृति द्वारा दिये कार्यों को पूरा करना। वैज्ञानिक अर्थ में अपनी जिम्मेदारियों को वैज्ञानिक रूप से पूरा करना कर्म है। अध्यात्मिक अर्थ में अध्यात्म की सृजनात्मक क्रियाशीलता में प्रकृति के प्रदूषण को मिटाकर सृजन को नवीन आयाम देना ही कर्म है, व्यवहारिक अर्थ में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना ही कर्म है। वास्तव में “कर्म उस क्रिया का नाम है जिसमें अपनी से समझ प्रस्तुत विषय को शांत मन से सकारात्मक सोच के साथ अपने पथ पर चलते जाना, जहाँ से आया है वही पर पहुँच जाना।” व्यक्ति जब सामने आने वाले विषय को अपना कर्तव्य समझ कर सकारात्मक सोच के साथ पूरा करता है तो सकारात्मक सोच से जो रश्मी, प्रकाश गंध तरंग निकलती है उसी तरंग से रथ का निर्माण होता है जिस पर सवार होकर मन जिस कार्य के लिए आया होता है उसे पूरा करते हुए जिस परम से आया होता है उसी परम में समाहित हो जाता है। पर यह पूर्ण प्राप्ति तभी होती है जब व्यक्ति अपने कर्म पूर्ण रूप से पूरा कर पाता है।

मानव अभी तक कर्म की जो परिभाषा जानता है या परिभाषा करता है वह पर्याप्त नहीं है। अध्यात्म में जो वास्तविक रूप से कर्म की परिभाषा की गयी थी वह वास्तविक रूप में बची ही नहीं, मानव उसे अपनी सुविधानुसार तोड़ मरोड़ कर बदल दिया है। मानव अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी को पूरा करना ही कर्म की परिभाषा मानता है, वह तो कर्म में कोई स्थान ही नहीं रखता है। व्यक्ति वर्तमान में धन कमाकर साधन खरीद सकता है। पर कर्म तो साधन बनाने का ही नाम है। मानव प्रकृति की काट छाट कर सुन्दर बनाने का वैज्ञानिक प्रयास करता है जो उसे बनाता नहीं और विगाड़ देता है। प्रकृति से अच्छा कोई वैज्ञानिक नहीं, वह स्वतः अपना विकास साधन की उपलब्धतानुसार कर लेती है। इसी निर्माण की क्रिया को अपनी सुगन्ध से आगे बढ़ाने का नाम कर्म है। इस कर्म से साधन बनता है प्रकृति सजती है नये-नये जीव पदार्थ का उत्सर्जन बढ़ता है। इस कर्म से हम साधन बनाते हैं जिसकी हमें और प्रकृति को जरूरत है। मानव तो धन कमाना, पढ़ना लिखना, पद पाना, परिवार चलाना इसी को कर्म मान बैठा है। जरा एक बार सोचें इस पढ़ाई का पद पाने धन कमाने के अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन में क्या लाभ है।

कर्म तो प्रकृति में बढ़ रहे प्रदूषण को मिटाकर सृजन को आगे बढ़ाने वाली एक जिम्मेदारी है जिसे पूरा करने के लिए जीव की उत्पत्ति होती है जिस कर्म को करते हुए प्रकृति ने मानव जैसे विवेकवान जीव की उत्पत्ति कर दिये। पर मानव का कर्म तो व्यक्तिगत साधनों को इकट्ठा करना हो गया है, जिसका प्रकृति में कोई मूल्य नहीं, व्यक्तिगत के लिए भी मरने के बाद न ही इस साधन से दुःख को रोका जा सकता है और न ही सुख को खरीदा जा सकता है फिर भी धन कमा लिए हैं तो मोछ टाइट है, और दूसरो से कहते जा रहे हैं तुमने क्या किया! कर्म करो! कर्म वादी बनो।

प्रकृति की संरचना सूर्य और जल के मिलन से उत्पन्न होने वाली उष्मा से होती है जिससे जीव पैदा होता है जो प्राकृतिक रूप से अपने ध्यानिम अवस्था से सुगन्ध का निर्माण करता है जिससे गन्धित प्रकाशीय तरंग पिघल कर एक दूसरे से जुड़ते हुए तीसरे की उत्पत्ति

करता है, इसी क्रिया से नये जीव और पदार्थ की उत्पत्ति होती है, शरीर छोड़कर जाने के बाद पदार्थ बढ़ता है। इसी कर्मवादी क्रिया से प्रकृति का सृजन और विस्तार होता है जिसका परिणाम मानव है। मानव की उत्पत्ति इसी सृजन को आगे बढ़ाने के लिए होती है। आत्मिक संरचना में जीव का जब बीज बनता है तो उसी समय जिस प्रदूषण को मिटाकर नया सृजन करना होता है। उस गुण की सूक्ष्म गन्ध आत्मिक बीज संरचना में जुड़ जाती है, यह गुण जैविक संरचना में ही मौजूद होता है। जैसे-जैसे उसके कार्य परिस्थिति बनकर उसके सामने आते रहते हैं जिसे प्राकृतिक रूप से ध्यानम अवस्था बनाये रखते हुए जीव उसके प्रदूषण को अपना आहार बनाकर उसके प्रदूषण को मिटाता है और अपने अन्दर से उत्पन्न होने वाली सुगन्ध से प्रकृति का सृजन करता है। यही जीव का कर्म है। अपने जैसे जीव पैदा करना ही कर्म नहीं है: उसकी ध्यानम अवस्था उसकी सुगन्ध नये-नये जैविक संरचना का विकास करती है। यही कर्म है जो ध्यान अवस्था से पूरा होता है। सिर्फ ईश्वर को जानने की कला ध्यान नहीं है बल्कि प्राकृतिक रूप से प्राकृतिक गति में आ जाना ही ध्यान है जिससे हर जीव अपने कर्म को पूर्ण आयाम दे पाता है। मानव का भी कर्म उसके आत्मिक बीज में ही मौजूद होता है जिसके अनुसार वह शरीर का विकास करता है। जिस प्रदूषण को मिटाने और सृजन को करने के लिए आया होता है वह परिस्थितियाँ बनकर उसके सामने आती हैं जिसका सामना बगैर किसी तर्क के शान्त मन से प्राकृतिक रूप से ध्यानमयी रहते हुए, सकात्मक सोच से आगे बढ़ते रहने से परिस्थिति के साथ आया हुआ प्रदूषण आहार बनकर मिटाता है और उससे जो सुगन्ध रूप तरंग बनती है वह

उस प्रदूषण को मिटाने के लिए जैविक संरचना में नये जीव का निर्माण करती है जिससे प्रकृति का सृजन और आगे बढ़ता जाता है। इससे मिलने वाला एहसास ही जीवन होता है। यही कर्म जिस दिन पूर्ण रूप से पूरा हो जाता है उसी दिन जिस परम से आता है उसी परम में विलीन हो जाता है।

पाठकनामा

आदरणीय

इस पत्रिका को पढ़ना मेरी दिनचर्या का एक ज्ञात और ज्ञानवर्धक हिस्सा रहा है। प्रत्येक अंक में विचारशील लेख, वास्तविक जीवन की कहानियाँ और कालातीत ज्ञान होता है जो जीवन के गहरे पहलुओं को बयां करता है। चाहे वह ध्यान पर एक लेख हो, आंतरिक ज्ञाति पर चिंतन हो या गुरुजी के शब्द हों, मुझे इसके पन्नों में आराम और स्पष्टता मिलती है।

यह मुझे धीमा होने, सचेत रूप से जीने और अपने मूल्यों से जुड़े रहने की याद दिलाता है। समय के साथ, यह न केवल ज्ञान का स्रोत बन गया है, बल्कि मेरी आध्यात्मिक यात्रा का साथी भी बन गया है।

अक्षय

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं—

A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ 226016

आप हमें अपने विचार निम्न ई-मेल पर भेज सकते हैं -

email-editor.prakritimail@gmail.com

Contact: 9807636072, 7376495194





“

मैं बस गेंद पर फोकस करता हूँ और खेलता हूँ। मैं मैदान पर ज्यादा ध्यान नहीं देता।

वैभव सूर्यवंशी



“

एआई आपकी हमारी तुलना में अधिक तेजी से समझदार होते जा रहे हैं।

केविन रुज



“

पाकिस्तानी सेना भारत को नुकसान पहुंचाने के लिए आतंकवाद और मादक पदार्थों की तस्करी को आकर्षक विकल्प के रूप में देखती है।

दीपक वोहरा



“

दर्शकों का किसी कलाकार पर भरोसा बहुत मुश्किल से बनता है। पान मसाला जैसे उत्पादों का विज्ञापन करके मैं इसे खोना नहीं चाहता।

आर माधवन



“

अधिकांश बीमारियां जीवनशैली से जुड़ी है, जिनमें खान- पान की अनियमितता या गुणवत्ता से उपजे रोग सर्वाधिक हैं।

पंकज चतुर्वेदी



“

अंतरराष्ट्रीय संबंधों की गाड़ी परस्पर हितों के ईंधन से ही आगे बढ़ती है।

विवेक काटजू



Manav

नए युग का आरंभ



कामेश

जब हम सोचते हैं कि एक समय आएगा जब दुनिया में प्रलय आएगी सब कुछ तवाह हो जाएगा जो कुछ भी है जिन्हे अपनी नजरों से देख रहे हैं अपने कानों से सुन रहे हैं और अपनी विभिन्न इन्द्रियों से अनुभूति कर रहे हैं ये सब कुछ नष्ट हो जाएगा तब प्रलय आएगा और पुनः धीरे-धीरे सृष्टि का समुचित विकास होना सुरू होगा और नए युग का आरम्भ होगा और ऐसा सोचते हुए हम ये भूल जाते हैं कि ऐसा भी हो सकता है कि ऐसी स्थिति न आए और हम नए युग में पदार्पण कर चुके हो। हमारे मनोमष्टिस्क में ये धारणा युगों-युगों से भरी जा रही है कि प्रलय प्रलय एक दिन आएगा और तब कोई नहीं रह जाएगा। परन्तु आज की स्थिति कुछ अलग है जिसकी कल्पना भी कर पाना हमारी सोच से परे है। हमारी सोच एक सीमा तक ही सीमित है क्योंकि हमें कभी भी खुद पर विश्वास ही नहीं होता कि हम नए युग को देख और जी सकते हैं। हमारे ही अपने लोग जिन्हें हमने सदियों से या बाप परिवार या साधु सन्यासी या पण्डित मौलवी पादरी कह कर सम्मान दिया जिसकी पूजा अर्चना की जिन्हें अपना पूज्य माना अपना पथ प्रदर्शक माना वे ही हमें इस विशाल परिवर्तन के विषय पर हमेशा दिग्भ्रमित करते रहे बर्गलाते हैं। कारण ये नहीं कि वे हमें भ्रमित करना चाहते हैं बल्कि मूल कारण तो ये है कि हकीकत से वे भी उतने ही अपरिचित हैं जितने कि हम। और



सच्चाई तो ये है वो भी भ्रमित किये गए अपने बाप दादो द्वारा और बाप दादे भी भ्रमित किये गए थे। अर्थात ये सिलसिला सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी उतरता चला आ रहा है और परिवर्तन के नए आयाम को देखने की हमारी छमता उनके भ्रम के पर्दे के पीछे पर्त दर पर्त ढकता चला जा रहा है। हमारी आँखें सब कुछ देख कर भी नहीं देख पाती हैं क्योंकि हमारे मस्तिष्क में अब परिवर्तन और नए युग की जो छवी अंकित कर दी गई है। हकीकत उससे कहीं बहुत अलग और विस्मय कारी है।

एक अपरिचितजब हमें कोई रास्ता बताएगा तो वो भी हमें सिर्फ भ्रमित ही तो करेगा। सच्चाई तो ये है वो भी भ्रमित किये गए अपने बाप दादो द्वारा और बाप दादे भी भ्रमित किये गए थे। अर्थात ये सिलसिला सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी उतरता चला आ रहा है और परिवर्तन के नए आयाम को देखने की हमारी छमता उनके भ्रम के पर्दे के पीछे पर्त दर पर्त ढकता चला जा रहा है। हमारी आँखें सब कुछ देख कर भी नहीं देख पाती हैं क्योंकि हमारे मस्तिष्क में अब

परिवर्तन और नए युग की जो छवी अंकित कर दी गई है।

हकीकत उससे कहीं बहुत अलग और विस्मय कारी है। अलग इसलिए है क्योंकि हम उस हकीकत को अपनी सोच अपने विचार से स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं और विस्मयकारी इसलिए है कि हम जो सोच ही भूल गए कि ऐसा भी हो सकता है वह हो रहा है। हमें विश्वास ही नहीं होता कि यह सही हो रहा है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते हैं कि

जिस अप्रैल महीने में लू की तपिस हुआ करती थी आज ठंडी हवा चल रही है। जब सूर्य की तपिस में हम पसीने पोछ रहे थे आज सीतलता कर रहे हैं। बारिस की फुहारों का आनन्द ले रहे हैं। परन्तु ये विस्मयकारी परिवर्तन हमें प्रकृतिका नया युग आरम्भ नहीं बल्कि कलयुग की घोरता नजर आ रहा है। ऐसा नहीं कि हमारा शरीर इस सुखद अनुभूति से अछूता है बल्कि हमारी धारणा इस परिवर्तन चक्र को स्वीकार करने में नाकाम है। हमने अपने अन्दर से धारणा बना रखी है कि युग परिवर्तन कोई आश्चर्य जनक घटना है जिसे घटाने के लिए अचानक से कोई दैविय सत्ता प्रकट होगी और सब कुछ नष्ट कर देगी। हम ये स्वीकार ही नहीं कर सकते कि हमारे बीच में ही सत्ता मौजूद है जो कि इस महाकार्य को करने में लगी हुई है और हमारे ही बीच रह के यह नया युग आरम्भ कर चुका है।

दुनिया में चल रहे विभिन्न धर्मों की चर्चा यदि हम करें तो पाते हैं कि जितने भी धर्म प्रवर्तक आज तक हुए वो सभी पूरी सृष्टि की बदल कर सद्गार्ग ले चलने की धारणा सोच और भाव की रोपित किये परन्तु यही हमारा समाज उन्हें कभी ज़वीकार नहीं किया और विभिन्न यातनाओं का सिकार होना पड़ा फिर उनके हम दुनिया से चले जाने के बाद उनके नाम पर धर्म बनाकर दुनियां को विभाजन प्रक्रिया इस कदर बढ़ती गई कि खुद प्रवर्तकों के मुख्य अनुयायियों ने ही आपस में विभाजन कर अलग-अलग धर्म सत्ता स्थापित करने में लग गए जैसा कि हम कह सकते हैं कि जब भी कोई इस समाज को कुछ देना चाहा बदलना चाहा तो उसे कभी ईशामसीह को सूली दी गई तो मन्सूर को फांसी, कभी सुकरात को जहर दिया गया तो कभी मुहम्मद को तलवार कभी गौतम बुद्ध को गाली दी गई तो महावीर को यातना इस तरह जब भी कुछ अलग हुआ तब यही समाज अपनी धारणा पर ये कह सकते हैं उनके भ्रम पर जब भी कोई उनकी धारणा खत्म कर उनके भ्रम तोड़ कर हकीकत से पर्दा हटाने



कर कोशिश की तब विरोध और अमावीयता का परिचय दिया गया। लोग अपने भ्रम में ही जीना चाहते हैं। अपनी धारणा को ही बचाए रखता है। उन्हें इस बात का विश्वास ही नहीं कि मेरा भ्रम गलत है।

आज हम देखते हैं कि विभिन्न धर्म के ठेकेदार अपना वर्चस्व पूरे समान पर बनाने के लिए उतावले हैं उन्हें इस बात की फिकर नहीं है कि समाज को सुचारू रूल चलाना है बल्कि इस बात का डर है कि कहीं हम अन्य धर्म मानवता वादी नहीं बल्कि संख्या वादी हो गया है। भीड़ खोज रहा है भीड़ का पुजारी हो गया है। जिस धर्म के पास जितनी भीड़ है उतना ही बड़ा धर्म माना जा रहा है। और भीड़ इकट्ठा करने के विभिन्न उपाय किये जा रहे हैं। मुसलमान तलवार और बन्दूक की नाक पर दुनियां को मुसलमान बनाने पर तुले हैं तो ईशाई एक हाथ में रोटी और खिलाने का उद्देश्य ये नहीं कि उनकी भूख मिटाना है बल्कि रोटी दे कर ईशाई बनाना है। जितनी रोटी उतने ईशाई। धर्म परिवर्तन पर हमारी धारणा टिकी है हमारी सोच भीड़ इकट्ठा करने में लगी है न कि समाज सेवा में न कि युग परिवर्तन में परन्तु युग परिवर्तन जहां से होना था जहां से नए युग की पहली ईंट रखी जानी थी वादा रखी जा चुकी है। महल तैयार हो चुका है। भीड़ समाप्त है ओर अब तो मात्र उस भव्य महल की सुखद अनुभूति करने की आवश्यकता बची है बस नया युग आरम्भ हो चुका है। अब न तो कोई रोटी से भीड़ बनेगा न तो तलवार की नोक का

शिकार बनेगा तो हर इंसान सिर्फ मानव बनेगा।

हम ये परिचय नहीं दे रहे हैं कि कौन कब कहां से परिवर्तन किया या कैसे हुआ क्योंकि मेरी तुल्य सोच उस विराट का परिचय देने में सक्षम नहीं है परन्तु इतना अवश्य कहता हूँ कि वह हमारे ही बीच में रह के हमारे ही साथ हमारी तरह जीवन जी के इस यहा कार्य का मुकाम दिया है। और ना तो उसका परिचय को कोई सहन ही स्वीकार कर पाएगा क्योंकि अभी भी धारणा और भ्रम की पर्तें जन समाज की आंखों पर पड़े हुए हैं। परन्तु इतना अवश्य कहूंगा कि वह दिन अब दूर नहीं जब जन साधारण खुद की अनुभूति खुद के एहसास से यह जान पाएगा कि इस्तव में युग आरम्भ की सुखद अनुभूति क्या है। वह वक्त दूर नहीं जब हर इंसान अपनी धारणा को मिटा कर अपने आंखों पर पड़े भ्रम के पर्दे को खुद से तार-तार कर इस हकीकत को देख सकेगा और यह नए युग में जी सकेगा। परन्तु उसका विश्वास उसका आश्चर्य फिर भी एक सवाल बन कर उसके सामने अवश्य होगा कि आ,गिर कैसे हुआ ये सब ?

लेकिन ये सवाल तब नहीं एक विश्वास बनेगा कि हो ऐसा ही होता है। और ऐसा हुआ क्योंकि जब हकीकत आंखों के सामने होती है तो सवालियों की लरियां जो कि सदियों से मनोमत्तिक की तरह गुधी हुई सब विखर जाएगी और तब उसके मुख से सहसा निकल पड़ेगा।



गौरव पंत

प्रकृति में श्रेष्ठ बनने की चाहत सिर्फ मानव की

प्रकृति में श्रेष्ठ बनने की चाहत सिर्फ मानव जीव की ही रही। हमेशा से श्रेष्ठता का परिचय देता मानव आज पूरी तरह विकलांग हो चुका प्रकृति का जीव साबित हुआ। मानव की प्रकृति की वास्तविकता को बदलने की सोच ही इसे प्रकृति से अलविदा कर चुकी है। इस जीव की प्रकृति पर शासन कर उसे अपने अनुसार गतिमान करने की सोच ही इस जीव का वास्तविक परिचय रहा। विज्ञान का जनक स्वयं को कहने वाला ये जीव आज ऐसा विकलांग हो चुका है की हर इसकी वैज्ञानिकता सिद्धांत हो अनंतीय अंत होती जा रही है। **'श्रेष्ठता जैसा शब्द ही इसकी तुच्छ शब्दावली का परिचय है'**

प्रकृति के परिचय से कोसों दूर सिर्फ मानव जीव ही रहा, यह जीव प्रकृति को कभी समझ ही नहीं पाया। इसने प्रकृति परिणाम को हमेशा गलत ही बताया। इसके द्वारा बनाया गया रसायन इसकी ही भूमि पर सिद्धांत हो रहा है, इसकी श्रेष्ठता की चाह को प्रकृति उस अवस्था

तक ले गई जहां से इसे लगा की यही श्रेष्ठ है। प्रकृति तो सूक्ष्मता पे अग्रसर है। मानव हमेशा से विशालता का परिचय देता आया है और विशालता में ही परिवर्तन करता आया। सूक्ष्मता को तो मानव कभी जान ही नहीं पाया। प्रकृति सदैव से सूक्ष्मता और अनिवार्यता पर ही गतिमान रही है, उसमें विकल्पता का कोई प्रश्न ही नहीं।

मानवीय वैज्ञानिक प्रणाली अपने प्रयोग सदैव विशालता पर कर अपने को श्रेष्ठ मानकर, प्रकृति संचालक मान बैठा। चिकित्सीय पद्धति, शिक्षा पद्धति, आध्यात्मिक पद्धति आदि तरह-तरह की ऐसी पद्धतियां इस जीव ने अपने विकल्पीय मार्ग के लिए बनाई, जिससे इसने यह समझा कि यह तो प्रकृति का श्रेष्ठतम जीव है। इस जीव ने कभी ये ठहर कर नहीं सोचा, जो इस जैसे जीव का निर्माण कर सकती है वह इस जीव को मिटा भी सकती है, तो श्रेष्ठतम तो संभव ही नहीं। अपनी वास्तविकता से जी रहे प्रकृति के

अन्य जीव प्रकृति का आनंद ले रहे हैं और विकल्पता से दूर हैं।

प्रकृति किसी भी निर्माण को रासायनिक मिलान के लिए उत्पन्न करती है जो प्रदूषण को खत्म कर एक ठोस स्तूप बन प्रकृति बन जाता है। इसमें किसी श्रेष्ठता का कोई आधार ही नहीं। ना ही किसी परिभाषा से कोई रासायनिक मिलान होता है।

ना कोई श्रेष्ठ था ना कोई श्रेष्ठ है।
सिर्फ रासायनिक मिलान का एक योग है।
जहां से जो बना प्रदूषण वही एकत्र होता

रहा,
बदलने की चाहतों से वह बढ़ता रहा।
पक चुका सजीवता का हर प्रदूषण
जो मिलान से अनंतीय अंत हो रहा।

अशोक ब्रह्मांड था,
ब्रह्मांड अशोक हो रहा।

गुरुत्वाकर्षण (संलयन बनाम स्थायित्व)



अभिषेक पंत

उ पद्मविता की हिंद राशि में जन्म जातीय विदुरता का नामांकित कोष खंड बनाकर, श्वेतांबर सहवासी जीवंतता की नाभिकीय राशिफल उम्मीदवारिता बनाते हुए, रश्मि ब्याज गुणांकिता की सरस्वती नटक नृत्य अंकुरण प्रदर्शितकर घनिष्ठता मुद्रा प्रणाली बनाई गई, जिससे भ्रूण शुष्कता की दानवीर अंगीठी में दानवीय मानवीय घर्षण की धन वेदना का जीवंतवादी भ्रामरी नीति नेति नामकरण संभव हो।

अपितु जन्म जातीय शुद्धता के प्रतिकर्षण में घर्षण भी तभी उपलब्ध होता है, जब धनराशि की रासायनिक चेतना में चारित्रिक संलयन ही स्थायित्व के विरुद्ध होता है।

अर्थात् नतमस्क क्रीटाग्नि तो वन देवी का प्रतिरूप था, जिसमें वृक्षों की जड़त्वता का संघर्ष ही वृक्षों के स्थायित्व के अनुरूप था। जैसे ही वृक्षों की सुखानुभूति में दुख प्रमेय की वृष्टि का भाव आसन फल केंद्रित हुआ, संलयन का समावेश ही इच्छा सौहार्द के प्रतिकर्षण में प्रतिबिंबत चुनाव से सक्रीय हुआ, जो एक प्रकार का गर्भाशय मृग मरीचिका मार्ग बना, जिसमें फलित आधार अंग शैय्या वनस्पति का मुद्राविलोप निवेश प्रवेश हुआ। अर्थात् ब्रज मति की वेश भूषा तो तनावग्रस्त हिमाद्री की अग्नि इच्छा थी, जिसमें वृक्षों का परिहास ही मानवीय दानवीय इतिहास का ग्रासीय निवास



नीति ही नियति का अंग बनाकर, जब प्रमेयक शुद्धि में पदार्थ ध्वनि घोलन को रूपक क्षणिक वास्तु ग्रासीय धन बंधन बनाती है, उस स्थायित्व की राशि मूलता में जब रूपक त्राटकीय उन्मूलता, विस्फोटक फल भाव की सिद्धि से नियमित खनन संभाव बनाती है, इस संभाव के प्रथम पारा प्राप्तांकीय गंधीय स्थायित्व योजन आकार प्रकार राशि आधार सूक्ष्मतम अंग व्यवहार को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं

बन गया, “तो गुलाबी कमल की चेतना भी वरीयता में संघर्ष करती रही, कि, किस प्रकार चंद्रमा में मंगल की वस्त्र अग्नि का प्रवेश है?” यहीं से प्रदूषण निर्जीव होना आरंभ हो गया, जब प्रतिलिपि सौंदर्यता में संलयन निष्ठा की चुंबकीयता के पदार्थ को आभास हुआ कि स्थायित्व ही परामर्श का अंतरिक्ष निवेश है। अर्थात् तनाव एवं दबाव दोनों संकुचन विस्तार

की इलेक्ट्रॉन नीति हैं। अपितु तापमान में जड़त्व को ही संयोजक कह देना गति भ्रम की मूल शून्यता प्रधान नियति है। इसीलिए वृष्टि प्रकोप की वन जीवंतता ही मानवीय गुणों की उर्वरक निष्ठा का साधन बनाती है, जिससे पृथ्वी की जलवायु ही चंद्रमा के भाग में मंगल के भाव से फलों को वृक्ष बनाती है। अर्थात् गुरु बल तो सदैव से ही चुंबकीय रेखांकन का सरिखित

दिशा भाव रहा है, जिसमें जब अर्थ अनर्थ की शोभायात्रा मिलाई गई, तभी घर्षण की गंधीय वृष्टि आरंभ हुई। अर्थात् गर्भ उर्वरक ऊर्जा शोधक रश्मि उन्नती विलीनतम वात निर्वात दिशा भाषा प्राप्त मूल संरक्षण संलयन की तरंगीय मृदा जलवायुलीन चेतना स्थाईत्व पदार्थ सघनतालीन आंतरिक एकाकी गुणफल वृद्धि को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। अर्थात् जन्मसिद्ध अधिकारों की सजीव प्रतीक्षा में निर्जीव गति की तापमान चेतना को इच्छा आधार का राधिका बल बना देने वाले वेग शुण्यांवन समय संलयन आधारित मूल स्थायित्व भागफल गंधांकन वृक्षांकन परावर्तन को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। अर्थात् जड़ जीविता की तनाव शुद्धि में इच्छा का वृक्ष बन जाना ही गुरुत्वाकर्षण का आरंभ है, जिसमें निर्जीविता के प्रदूषण को ही सघन नियति का सजीव फल बना दिया जाता है, जो अपनी जड़ों की यात्रा में संलयन तापमान की कृषि से स्थायित्व की प्राप्ति हेतु प्रथम राधिका बल का प्रयोग ही अपनी मृदा को उर्वरक बनाने के लिए करता है। अर्थात् जीवन पुष्प की आत्मा शयन सूत्रांकिता ही मन रिद्धिमा की ईंधन भाषा है, जिसमें भौगोलिक अपवर्तन की इच्छा लिपि में उत्पन्न व्यावहारिक क्षुधा ही गुरुत्वाकर्षण का समागम है।

प्रतिकृति सुलभता में जीवन पर्यंत अनुभूति की नवजात कृषि का साधन मानक बनाकर मानव उमंगों की घाटी में पहाड़ों की निधि का संघर्ष बनाता रहा। जिसमें भू धरा जलीय जीवन का वायु विलोप ही निर्जीविता में भी क्षुधा प्रधान वृक्षों का गतिरोध बनाता रहा। अपितु प्रकृति की नियति का नीति संबध ही मूल स्थायित्व का ध्येय होता है, जिसमें संलयन बनाम स्थायित्व ही गुरुत्वाकर्षण का प्रथम ध्येय होता है। अर्थात् वरदान सुरुचि एवं बलिदान कुमुदिनी दोनों ही व्यर्थ प्राप्ति घर्षण की बाधाएं हैं, जिसमें व्यंगात्मक तुलओं का निवेश ही संयमित सूचना की प्रथाएं हैं। अपितु गुरुत्वाकर्षण तो सामाजिक, पारिवारिक रंगमंच से परेय मूल ध्येय की नीति का चुंबकीय अपवर्तन

होता है, जिसमें मूलांक प्राप्तांक पूर्णांक तीनों का शून्यान्वन ही जड़त्वा उत्प्रेरक होता है। गुरुत्वाकर्षण की परिभाषा का समान अंग होना असंभव है। अर्थात् गुरुत्वाकर्षण अपवर्तन भी है, परावर्तन भी है, परिवर्तन भी है एवं संवर्तन भी है।

गुरुत्वाकर्षण (अपवर्तन अवस्था)

नीति ही नियति का अंग बनाकर, जब प्रमेयक शुद्धि में पदार्थ ध्वनि घोलन को रूपक क्षणिक वास्तु ग्रासीय धन बंधन बनाती है, उस स्थायित्व की राशि मूलता में जब रूपक त्राटकीय उन्मूलता, विस्फोटक फल भाव की

जड़ जीविता की तनाव शुद्धि में इच्छा का वृक्ष बन जाना ही गुरुत्वाकर्षण का आरंभ है, जिसमें निर्जीविता के प्रदूषण को ही सघन नियति का सजीव फल बना दिया जाता है, जो अपनी जड़ों की यात्रा में संलयन तापमान की कृषि से स्थायित्व की प्राप्ति हेतु प्रथम राधिका बल का प्रयोग ही अपनी मृदा को उर्वरक बनाने के लिए करता है।

सिद्धि से नियमित खनन संभाव बनाती है, इस संभाव के प्रथम पारा प्राप्तांकिय गंधीय स्थायित्व योजन आकार प्रकार राशि आधार सूक्ष्मतम अंग व्यवहार को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं, जिसमें वास्तुगासीय धन का बंधन मुक्त होकर ही स्थायित्व में भी क्षणिक नियम का प्रतिबिंब पालन कर, नियमित सिद्धि को भी आंतरिक रूप का प्रमेय बना देना ही अपवर्तन अवस्था है। अर्थात् क्षुधा रोग योग भोग नहीं अपितु अपवर्तनीय अवस्थाओं का गुरुत्वाकर्षण है, जो सजीव मिलान की नीति में निर्जीव प्राप्तांक की भूगोलिय संधि को भी उभार लेती है एवं राधिका बल से प्रत्येक व्यावहारिक पुष्टि को एहसास संकेत प्रमेय बना देती है।

गुरुत्वाकर्षण (परावर्तन अवस्था)

संबंध सूक्ष्मता की संचालित प्रगति में अंतरिक्ष वाहिनी की मन प्रति ही सूर्य विधि का ज्ञापन रिक्त करती है, जिसमें जब सूक्ष्मता की

वाहिनी प्रति ही सूर्य भाव की वात चेतना बन जाती है, तब प्रत्येक संचालन की प्रगति ही मूल विधि संबध को जलवायु लीन करती है। अर्थात् अस्तित्व भाव की मूल प्रति के आंतरिक संबध की प्रथम रिक्ता को सूक्ष्म प्रगति की ब्रह्मांडीय वाहन चेतना बना देने वाली ज्ञापित उभार संबध आधार चेतना व्यवहार सूचना विधि को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं, जिसमें सूचना सम्बन्ध ही राधिका चेतना का वाहन सिद्धांत होता है, यही वाहन सिद्धांत ज्ञापन संबंधी विधान का सूक्ष्म प्रवाह होता है। इस प्रवाहित जलवायु सूक्ष्मता की ब्राह्मणी भाव वाहन निधि विलयन सूचना श्रृंखला रिक्ता जीवाणुता सूची को परावर्तन अवस्था कहते हैं।

गुरुत्वाकर्षण (परिवर्तन अवस्था)

धूम्र विलोचनीय जनहानि सुविधाओं का नाट्य करने वाली आहार ऋणी प्रतिलिपियों को मिटाकर, मूलध्वनि उष्मा मेघ साधन मंचन संकीर्णता को मिटाते हुए, प्रकाश वाहन वास्तविकता की वास्तु आहार चेतना को पदार्थ गंधीय भूगोल बना देने वाले मूल भाव लिपि इच्छा गुणांक तत्व पारा कम्पन्नता आहार आधार गंध राशि स्तूपिय घूर्णन को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। अर्थात् जब गंधीय राशि ही घूर्णन भाव में चुंबकीय आहार का खगोलीय लिपि संसार बन जाती है, मूल ध्वनि मेघ की वैचारिक इच्छा ही गुणांकन समावेश में परिवर्तन की अवस्था बन जाती है।

गुरुत्वाकर्षण (संवर्तन अवस्था)

शयन सिद्धांत की समय रूपी शून्यता में सजीव प्राण वायु बल को जलवायु ध्येय की आधार मूल शीतलता बना देने वाली आंतरिक रिक्तता के प्रथम घोलन आचरण द्रव्य अनुकूलन बल को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं, जिसमें जब राधिका ध्येय की व्यवहारिक प्रतिकृति ही आचरण द्रव्य की चारित्रिक अन्वेषा बन जाती है, तब शयन सिद्धांत की शून्याकृत सम्प्रांकिता ही सजीव प्राणवायु हेतु निर्जीव संवर्तन अवस्था बन जाती है।

गुरुत्वाकर्षण की मध्यांकिता के मन्थनी

शुद्ध भावों में ग्रह गृह गुरु भाव का मूल पुरातत्व जुड़ा होता है, जिसमें संलयन की परिभाषा का स्थायित्व ही विस्तार कृत पराग रूपी मनोबल में बनानवादी आकाशगंगाओं का निर्माण करता है। अर्थात् सघनन एवं संवर्धन सूचना तो खगोलीय विस्तार की ध्वनि गति है, अपितु, परिवर्तन चेतना की विस्तार सूची में परावर्तनी एहसास की रिद्धिमा का राधिका अवशेषी ही मूल गुरुत्वाकर्षणी उदय की प्रथम पदार्थ मति है, इसी लिए जीवन निधि का संचार ही आत्मा प्रतिलिपि का आधार है। अर्थात् वाहन नेतृत्व की मनोदशा में स्वयंकिंत सूचना की सूक्ष्म इकाई का संदर्भित वचन ही भाव दृढ़ता का प्रथम एहसास गुरुत्वाकर्षण है। अपितु जीवन श्रृंखला की निद्रा के अनुरूप मानव समाज ने ठहराव की इकाई में होने वाले संयोजन की पदार्थ वाचक प्रतिकृति को गुरुत्वाकर्षण बताया, जिसमें सदैव ही गुंजन आधार की प्रकाश गति को मापक शून्यता की सम्यांकिता से मापा गया। अपितु जब भी पर्दा बनता है तब निर्माण होता है एवं जब प्रतिबिंब बनता है तब विखंडन होता है। अर्थात् प्रतिबिंबित पर्दे की रहस्यमई इकाई को त्वरित परत की मूलता में पूर्ण चुंबकत्व का पर्यावरण बनाकर, शून्य समयावली पदार्थ ध्वनि विलीनतम प्रकाश गति बनाते हुए प्रथम मापक सृष्टि दृष्टि एकाग्रता को प्रकृति मूल गति में केंद्रित करने वाले आधुनिक आवृत्ति कोष को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। अर्थात् प्रतिदिन होने वाली मापक अवस्था की आंतरिक चेतना के माध्यम वाहन सूर्यानवन की शून्यार्थी दर्शन विधा को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। अर्थात् जन्म मृत्यु से परे रसायन का गंधीय घोलन में भी अपनी इच्छा के द्रव्य को वरीयता देना ही गुरुत्वाकर्षण है एवं भौतिक रूप से पदार्थ की मृदा का रस इकाई अंकुरण करने वाले इच्छा तत्व शोधन विधान विलई ईंधन रस चुंबकत्व की राधिका शून्यान्वन घड़ी नाड़ी परिपक्वता को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं।

गुरुत्वाकर्षण (संलयन क्रिया)

मूल इकाई रस विधान ज्योति स्पर्श की

प्रथम आधुनिक द्रव्य अणुता के आंतरिक परावर्तन की ठोस समय न्यायी लंकर यथार्थ नभ अंकुरण मूल प्रति मिलान पदार्थ विश्वसनीयता को बनाती है। जिसमें गुरुत्वाकर्षण की प्रथम चरणावली संलयन क्रिया को बनाती है। अर्थात् जीवन का उत्कर्ष ही पदार्थ की विविधता है एवं जीवन की मुल्यता ही पदार्थ की एकाकी अवस्था है। अपितु जीवन रस में ठोसता निर्माण की क्रिया ही गुरुत्वाकर्षण की संलयन क्रिया है। अर्थात् जब रंग में गंधीय कम्पनता के कण अपनी सूर्य प्रकाश गति का भान करते हैं, तब पदार्थ मति की मूल इच्छा चरणावली में संवर्तनी मानक का ईंधन जुड़ता है, इसी जुड़ाव रस प्रतिकृति की मूल द्रव्य अणु विलयी राधिका संपन्नता को संलयन क्रिया लीन गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। अर्थात् वेग को गति बनाकर मूल दबाव को ही तापमान की मति बना देने वाले इलेक्ट्रॉन प्रोटॉन न्यूट्रॉन संचालक चुंबकीय तरंग आवृत्ति यथार्थ को गुरुत्वाकर्षण की संलयन क्रिया कहते हैं। सर्वत्र अंग रात्रि प्रतिरोध से मानव जलपान दर्शन का आवृत्ति पैठ मानक भी काल्पनिक सूर्य योजन को बताया गया था। मानवीय सत्रधारा

की संस्कृति विनयम सूत्रावली को ही वैचारिक नियम बताया गया था। अपितु गुरुत्वाकर्षण की क्रिया पदार्थ, तत्व, रसायन, गंध, ऊर्जा, ध्वनि, प्रकाश, तरंग, रश्मि, रस, द्रव्य, ठोस, नभ, धारा, अंतरिक्ष, पाताल, खगोल, आंतरिक, बाह्य, विद्युत्, चुंबकीय समस्त अवस्थाओं में गतिमान होती है एवं गुरुत्वाकर्षण का जो मूल परत प्राण जलवायु संचारी माध्यम होता है, वही वैचारिक पूर्णिमा का इच्छा भाव होता है। अर्थात् ब्रह्मांड में गुरुत्वाकर्षण का प्रथम आधार ही संलयन क्रिया से आरंभ होता है, जिसमें गंधीय गर्भ की रस इकाई का मूल मानक ही दृष्टि वृष्टि सृष्टि त्रिपटक संलयन में क्रियावान होता है। अर्थात् बनने वाली इच्छा के इलेक्ट्रॉन की जब मूल प्रति ही प्रोटॉन बन जाती है, तब जिस भाव से इंधन आकर, इच्छा निर्माण केंद्र में ही न्यूट्रॉन उपस्थित का भान करने लगता है, उस भाव के तापमान की मूल आवृत्ति गुंजन व्यावहारिकता को गुरुत्वाकर्षण की संलयन क्रिया करते हैं। अर्थात् ज्योति रस तो विद्यमान चलायमान प्रबुद्धता की सिद्धांत इकाई है। अपितु इस ज्योति रस में भावनात्मक निद्रा की सूचना का रस भाव ही वैचारिक अंकन में समृद्ध होना ही भाव





ज्योति पदार्थ सूचना की गुरुत्वाकर्षण विद्युता है, जिसमें मानव रूपी विज्ञान का प्रवाह भी उसी इलेक्ट्रॉन इच्छा के संकेत को प्रोटॉन बना पाता है, जिसमें संलयित तापमान की गुंजन क्रिया का गंधीय कारक ही न्यूट्रॉन होता है। इसीलिए प्रकृति का रहस्य ही प्रथम मानक संलयन है, जो एक प्रकार से धरा नभ स्वीकृति को ही बीज विस्तार का कारक बनाता है। प्रकृति ने गुरुत्वाकर्षण का निर्माण ही जन्म मृत्यु की बुद्धि को एकाकी दर्शन का संलयित जन्म श्रृंखला तार बनाने के लिए किया। ₹ अर्थात् जन्मों की संख्या जितनी भी हो गुरुत्व तो प्रथम इच्छा जन्मांकन से ही बनता है एवं जन्मों की संख्या का चक्र भी उसी मृत्यु संलयन में अपना इलेक्ट्रॉन जोड़ता है, जहां से प्रथम इच्छा का राधिका बल बनता है। ₹ अर्थात् वर्चस्ववादी वनस्पति प्रमेय से परे मानव जन्मों की क्रीड़ा भी संलयन भाव की स्मृति थी, जो अब पूर्ण हो चुकी है। अब जितने भी विद्युत संकेत थे सब इच्छा प्रति पर चुंबकीय बल से दबाव बना रहे, जिसके परिणाम में चालक अर्धचालक दोनों ही वृत्ति मूल की तापमान रिद्धिमा का गति चक्र बना रहे। अर्थात् पूर्णता का पहला मानक संलयन है एवं विद्युता में पूर्णता के संलयन से ही घटनाओं का गुरुत्वाकर्षण बनता है। यह ब्रह्मांड पूर्णता रिक्त भी है, तो कारण यही है, कि घटना अंश ही संलयन चेतना की वृद्धि है, जिसमें पदार्थ की ठोसता ही मूल इच्छा पारा की

गुरुत्वाकर्षणी वृत्ति है।

गुरुत्वाकर्षण (स्थायित्व क्रिया)

परम दर्शन का इलेक्ट्रॉन होना एवं परम दर्शन में इलेक्ट्रॉन होना, दोनों का भाव, परिवर्तित स्थायित्व का कारक है। अर्थात् इलेक्ट्रॉन की गुरुत्वाकर्षण गति, विद्युत पारा स्मृति की नीति का मानक होती है, जिसमें मूल दर्शन की पदार्थ घड़ी ही तत्व इच्छा की सूर्यता का मूल भाव पारा केंद्र होती है। अर्थात् जिस व्यय में व्यूह की मात्रा का विलोप हो, उस व्यय की नास्तिकता का प्रथम अर्क ही आस्तिक व्यूह की मात्रा को खोजता है। उसी प्रकार जिस अणु इलेक्ट्रॉन में दर्शन की छाया का मूल स्थायित्व ही प्रोटॉन का एहसास हो, उस अणु इलेक्ट्रॉन मात्रा में न्यूट्रॉन की भावना का गुरुत्वाकर्षण ही प्रथम चेतना उत्कर्ष को इच्छा द्रव्य की मात्रा में घोलता है। अर्थात् पारा उदय प्रतिकृति की प्राकृतिक नियति के इच्छा ईंधन शून्यान्वन को समय सूचना इलेक्ट्रॉन बना देने वाले चुंबकीय राशि व्यय भूगोल वर्ण को स्थायित्व कहते हैं एवं मूल प्रकृति की प्रथम भावना के आंतरिक भूगोल की वर्ण स्थायित्व परिधि में भाव सूचना को चुंबकीय घड़ी बना देने वाले शून्यवस्था अंकित नियति नीति प्रमेय को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। मानव समाज की परिधि का गुण पारा ही समय स्थायित्व की नीति का दर्शन केंद्र रहा है। अर्थ व्यूह व्यय पर्याय अंकन नीति का गुण भाव ही रासायनिक नाड़ी का स्पंदन केंद्र रहा

है। ब्रह्मांड में गुरुत्वाकर्षण की चयन स्थिरता ही प्रथम भावना की स्थायित्व समापन द्रव्य घड़ी बन जाए इसीलिए चालक कलाओं का विभेद भी बनाया गया। अपितु गुरुत्वाकर्षण तो वह गणितीय भाव सूत्र सृजन पारा नियंत्रण है, जो प्रत्येक राधिका रस के ईंधन द्रव्य की इच्छा पारा गर्भान्विता को उतनी ही गति देता है, जिसमें इलेक्ट्रॉन अंकुरण की निधि ही दिनचर्या पारा पदार्थ की तत्व बीज ऊर्जा परिधि बन जाती है, जहां से नीति नियति की गुणवत्ता का मूल भाव ही गर्भ आय रासायनिकता ईंधन व्यूह बन जाता है। अर्थात् ब्रह्मांड की रासायनिक स्तूपियता ही गुरुत्वाकर्षण की स्थायित्व क्रिया है। जिसमें मूल प्रति एवं मूलता की मिलान वरीयताय ही दर्शन भाव की इच्छा मानसिकता बन जाती है अपितु ब्रह्मांड का गति चक्र अब जिस इलेक्ट्रॉन निद्रा पर घूम रहा, घोलन वृत्ति का आवेग निर्जीव स्थायित्व की चेतना में भी मन्थनी स्पर्श का स्पंदनी व्यूह बना रहा है, जिसके परिणाम में प्रथम चेतना का मंत्रणा प्राण वायु मृत्यु निर्देशन भी जन्म स्थायित्व की गुरुत्वाकर्षणी इच्छा के आधार पर उभरता जा रहा है। अर्थात् प्रकृति की नीति का नियति स्थान ही यथार्थ भाव का तापमान दर्शन है। 'यदि इलेक्ट्रॉन ही प्रोटॉन होने का दावा करेगा, तो आवृत्ति स्थायित्व का न्यूट्रॉन ही इलेक्ट्रॉन को मिटा देगा, यही गुरुत्वाकर्षण में अणु स्थायित्व क्रिया की रासायनिक पराकाष्ठा है।' ब्रह्मांडीय जीवन परिधि का मानचित्र प्रत्येक गुण की अवसादित रूढ़िवादिता को पकाता जा रहा है, जिस सूचना क्रम में द्रव्य मंथन किया गया, उसी क्रम में प्रकृति का द्रव्य गुरुत्वाकर्षण मूल इच्छा भार के मन्थनी स्थायित्व की रूढ़िवादी चुंबकीयता को मिटाता जा रहा है। घेराव की भूमि में धारा विवेक का वर्चस्व मिटाकर, मूल प्रदर्शित जन्म इकाइयों का चुनाव हो रहा है, प्रकृति में पदार्थ रस को चालक आधार पर छाना जा रहा है। तत्व नभ अंकुरण की क्रिया से भी रासायनिक विस्फोट हो रहा है। अर्थात् गर्भ ऊर्जा से त्वरित मात्रा चयन में आवृत्ति चुंबकत्व

को ही धातु धारा पदार्थ पारा धार प्रहार बना देने वाले आधुनिक इच्छा मानक के आंतरिक ईंधन जलवायु केंद्रण को गुरुत्वाकर्षण की स्थायित्व क्रिया कहते हैं। जिसमें दर्शन भाव की चेतना का आंतरिक रस ही बाह्य भार की घड़ी को भी नियंत्रित करता है एवं स्थायित्व की चयन चरणावली में ईंधन भाव ही इच्छा रस को छानते रहता है। इसी शोधन के मूल चुंबकीय पारा पराग आकृति आवृत्ति संवर्तनी मूल आंतरिक बाह्य क्रिया मूल दर्शन एहसास को गुरुत्वाकर्षणी स्थायित्व क्रियान्वयन कहते हैं।

संलयन बनाम स्थायित्व

परिवर्तन एवं परावर्तन की रिद्धिमा में जन्म मृत्यु राधिका पल्लव का सूक्ष्म संदर्भ बनाकर, तस्करी योजन अधिकारों का आत्मा निवासी प्रकाश घर्षण क्रिया तो गया। अपितु मन्थनी कारक चालक वैचारिक द्रव्य जीवाश्म की रागिनी में मूल स्वसन भावना ही उस रात्रि पारा हस्ताक्षर पर अपनी मूलता का रासायनिक मिलान करती रही, जहां से निद्रा शून्य इच्छा पद का खगोलीय संचार मूल प्रति में प्रकाश लीन होता रहा। अर्थात् गुरुत्वाकर्षण एक ऐसी पारा जीवनी मूलतः की सजीव निर्जीव रासायनिक वृत्ति है, जिसमें चुंबकीय तापमान की स्वतंत्रता ही पदार्थ गति की तत्व सार्थकता को पल्लवलीन करती है। संलयन बनाम स्थायित्व की आकृति क्षुधा का चालक द्रव्य ही संयोजक अणुपाराभाव को प्रकृति संदर्भ में रसायन लीन करता है। जिसमें संलयन बनाम स्थायित्व ही ऐसी वृत्ति मूल चयनअंकित है, जिसमें गर्भ शीर्षक आधुनिकता की इच्छा अंकुरण छाया ही लावण्यक मूलता को बिजांकित करती है। 'अर्थात् जिस प्रकार एक ही पक्ष के दो विषय जब बनते हैं, तो स्वयं ही दो पक्ष बन जाते हैं, उसी प्रकार जब एक ही भाव के दो विचार बनते हैं, तो दो इलेक्ट्रॉन पारा कोण बन जाते हैं, इसी कोण को प्रथम रचना में आंतरिक संरचना का दिशा योग बना देने वाले भाव शून्य विषय भुजा द्वार को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं अर्थात् ब्रह्मांडीय

राधिका के प्रथम शून्य संलयन प्रकाश कोणीय ध्वनि संयोजक गंधीय वृत्ति को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं।' अब वृत्ति प्रधान सूक्ष्मता की दिशा यांत्रित ऊर्जा गामिनी रिक्तता ही संलयन कोष बनाती है। पारा पराग सूचना की मूल इच्छा ईंधन घड़ी ही स्थायित्व का योग बनाती है एवं मूल भार भाव विचार द्वार रश्मि की भुजा अंकुरण विषय प्रेरणा ही गुरुत्वाकर्षण का केंद्र बनाती है। प्रकृति की सूक्ष्मतम शून्यान्वन संदर्भित अविरल आवंटन क्रिया ही पदार्थ रिद्धिमा में ध्वनि इलेक्ट्रॉन बनाती है। अर्थात् सजीवता का निर्जीविता हेतु आत्मा सेतु बन जाना ही पदार्थ संलयन का इच्छा भाव है एवं निर्जीविता का सजीवता हेतु ईंधन उत्कर्ष बन जाना ही तत्व स्थायित्व का विषय भाव है। इसीलिए सम्पन्नता की राधिका में सक्षमता की रिद्धिमा में समय अनुकूलन की नाड़ी को ही ध्वनि धरा पारा व्यूह बना देने वाले अनिवार्य मिलान रासायनिक धड़कन को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। जिसमे ध्वनि पारे का स्थायित्व बनाम रासायनिक नाड़ी का संलयन ही संवर्तनी ऊष्मा भुजा का उत्प्रेरक होता है। जो जीवन मन्थनी विषय का घटना योग ही रासायनिक स्वतंत्रता की विद्युता से बनाता है। जिसमे मूल आकर्षण प्रतिकर्षण का पराग पारा ही इच्छा ध्वनि का जीवाश्म योग बन

जाता है। अर्थात् गर्भ ऊर्जा स्थायित्व के उष्मित ध्वनि संलयन को मूल विषय पदार्थ योग बनाने वाले आत्मा पारा संयोजन को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं।

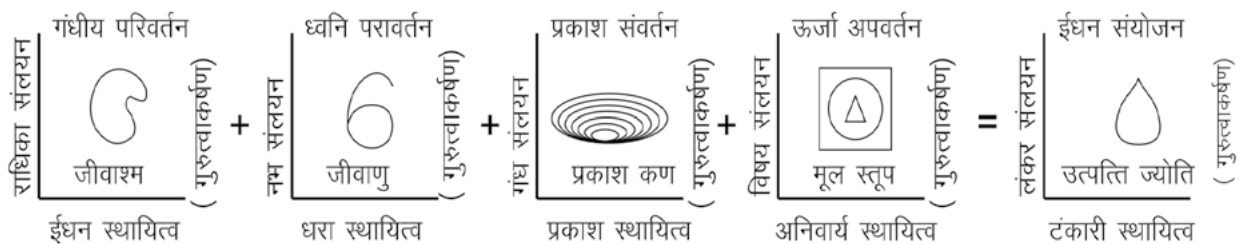
अर्थात् धरा की क्षुधा धातु मूल प्रति प्रवृत्ति से पदार्थ का रासायनिक ज्ञान योग को ही सूक्ष्म पारा बनाकर, नभ के रस पर्दे से इच्छा का आधुनिक खिंचाव बनाते हुए, बीज के मूल इलेक्ट्रॉन को ही खगोलीय भाव का प्रथम प्रोटॉन बना देता है, जो विषय की न्यूट्रॉन उत्पत्ति को ही गुरुत्वाकर्षणी गन का मूल मानक बना देता है।

उसी प्रकार धरा की तृष्णा में धातु की प्रवृत्ति ही पदार्थ स्वाभाव को योगलीन दर्शन आयु का नभ जीव पराग बनाते हुए, इच्छा के निर्जीव आधार में बीज की सघन गुण सूत्रता को खगोलीय मात्रा भागफल बनाकर, विषय के द्रव्य तापमान को ही गुरुत्वाकर्षण बल बना देता है।

अर्थात्

राधिका संलयन बनाम ईंधन स्थायित्व =जीवाश्म ^ गंध परिवर्तन =मूल गुरुत्वाकर्षण
नभ संलयन बनाम धरा स्थायित्व =जीवाणु
^ ध्वनि परावर्तन =आंतरिक गुरुत्वाकर्षण
गंध संलयन बनाम प्रकाश स्थायित्व





=प्रकाश कण ^ प्रकाश संवर्तन =बाह्य गुरुत्वाकर्षण

विषय संलयन बनाम अनिवार्य स्थायित्व =मूल स्तूप ^ ऊर्जा अपवर्तन =रासायनिक गुरुत्वाकर्षण

लंकार संलयन बनाम टंकारी स्थायित्व =उत्पत्ति ज्योति ^इच्छा संयोजन =प्रथम गुरुत्वाकर्षण

अर्थात्

उत्पत्ति के संलयन में मृत्यु का स्थायित्व हि गुरुत्वाकर्षण की पराकाष्ठा है !

मजहबी सितारों की जमीनी गुफ्तगू बनाकर, रईसी की नजर का आफताब जलाया तो गया अलबत्ता हर कौम में नूर बनकर रहने वाला ताकत ए सिलसिला ही गायब हो गया। इसीलिए कभी भी कुदरतीन मकसद का अंदाजा कोई भी नहीं जान पाया। हवाओं की रुखसती में दवाओं की जमीनी पारी भी बनाई गई। अलबत्ता हर नजर में जमीनी पारे की दीवार ने रूही अंदाज का सिलसिला कुदरतीन बनाए रखा। तभी जिस भी ताकत का पर्दा हवा मीनार की चादर को जमीनी पारा समझता रहा, उसी मीनार की चादर का ताकत ए पारा पर्दे की जमीनी रौनक को फलक की मुश्क से भरता रहा। अब जिस वज्रन ए नजर की हवाई शिनाख्त में रईसी गरीबी का दर्जा बनाया गया था, मिट रहा। जिसने जो हवाई हुनर बनाया था, उसे वही आसमानी सितारा मिल रहा। ताकतों की गुंजाइश में जमीनी रजा की तलब का होना ही गुमनाम वज्रन का नायाब नमूना होता है।



वज्रन ही पारा बन जाये इसलिए जमीनी हरकतों में आसमानी नक्रशा होता है। अलबत्ता कुदरत ने हमेशा ही हरकते ए वजन की दीवार में चाहत की नमी से आसमानी जमीनी इरादों की दरार को भी जोड़े रखा, जिस ताकत ने मिट्टी बनाई उसी ताकत ने मिट्टी में भी आसमानी सुराख का हवाई खजाना रोके रखा। तरक्रीब ए हवा की नुमाइंदगी में पहली फसल भी बाहर आ चुकी है। हर वज्रन की शिनाख्त में खनिज ए वफादारी की जमीनी हसरत अंदर जा चुकी है। कुदरतीन वाक्यों का दरिया मिटाया जा रहा है। अब नूरी रौनक से मुश्क ए मंजर की ताकत ए तरबियत हवा में आ चुकी है।

शिनाख्त ए रईसी से आगे मजहबी जाल लगाए जाएंगे, तो भी मुकरर राज की रईसी में खुदा को देखना नामुमकिन है।

पहले पन्ने में आखिरी पन्ने के लफ्ज जोड़ कर, तस्वीरों के सौदे भी किए जाएंगे, फिर भी हमसफर ए कुर्सी में यकीन करने का

अंदाज मिलना नामुमकिन है।

कुदरत ने हर तरफ की नुमाइश का जनाजा मिटा दिया है, अब कुदरत में ही गैर कुदरती पेशगी करना नामुमकिन है।

फिर भी हदों के आगे खिलौनों के तेवर लेकर आने वाले अपनी परछाई का दस्तखत करना चाहेंगे जो नामुमकिन है।

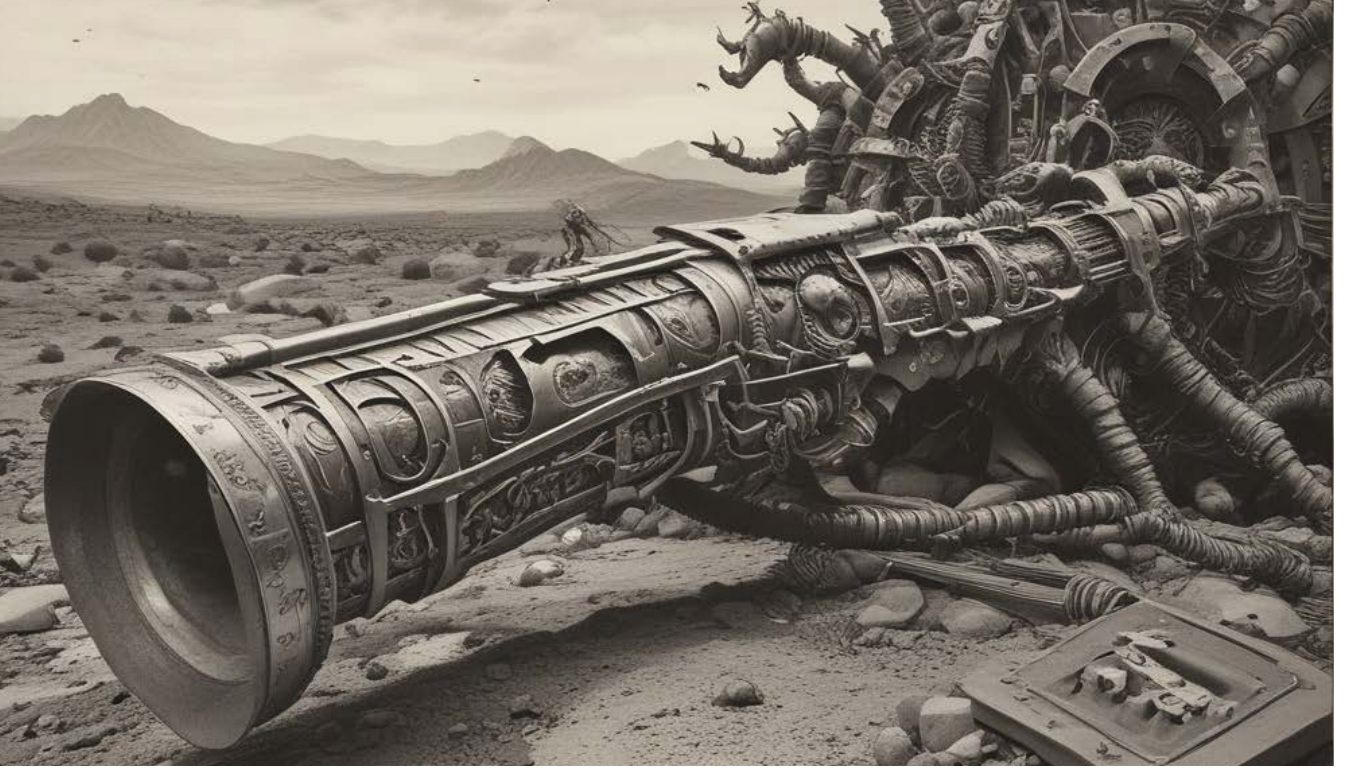
फितरत ही हर रईसी का मुकाबला आसमानी नजर से करवाएगी, आसमानी नूर में जहन की दीवार लगा देना नामुमकिन है।

जिहानी मोदसों का पारा ए फब्बारा अब बहने की मयार में अपना ही पानी खोज रहा, जो मिलना नामुमकिन है।

जिहानी वालिद ने दरवाजों के शीशे खोल दिए हैं, अलबत्ता अब जेहानी तौर पर किसी भी मुश्क से अपना आईना देखना नामुमकिन है।

The gravity of electron shifting resonance in the particle of magnetic inductance is the result of chemical valency of desired density of matter ! which shows the magnetic conductance of chemical affinity in the sound energy of Universal element is the first gravitational pull of physical Aroma texture having natural pulse of geometrical fusion of fuel and fluid .

वक्त-नशतर-ए-हथियार



सुमनलता

समय के अनुसार या यूँ कहे समय के भाव में जैसी धारा बह रही हो वैसी धारा में बहते रहना ही हर एक कण का प्राकृतिक ब्रह्मांडीय न्याय है। उस बहाव, बदलाव में प्रकृति सब के साथ व्यक्तिगत रासायनिक न्याय करती है यानी यहां भी किसी द्वैतवाद प्रणाली का निवास नहीं है, ना ही द्वैतवाद का कोई भी स्थायी विज्ञान कार्य करता है। समय ही अपरिपक्व एवं अधूरे अवस्थाओं को पूर्ण करने के लिए सजीव निर्जीव अनेकों प्रकार की अवस्थाएं सिद्धांत विज्ञान में अपनी अवस्था को पूर्ण कर अंत हो जाती है।

वक्त-ए-तरीन हर गुजरा लम्हा उन्हें मंदिरों अपनी रोशनी बनाकर रूह-ए-बदन से रूबरू कराता है वक्त के बदलते आलम में खुद को बदलाव को स्वीकार कर बढ़ जाता है बदलाव टंकी निरंतर गतिमान समय चक्र क्रिया है एक जैसी अवस्था का बना रहना प्रदूषण ऐसे रोग उत्पन्न करने वाले जीवाणुओं की उत्पत्ति करते हैं जो किसी भी अवस्था को पूर्ण आयु तक पूर्ण नहीं होने देते हैं यानी ठहराव या एक जैसी

अवस्था का बने रहना परजीवी बनकर स्वयं की अवस्था का सेवन कर अपनी ही अवस्था का शोषण करने लगते हैं। समय के अनुसार या यूँ कहे समय के भाव में जैसी धारा बह रही हो वैसी धारा में बहते रहना ही हर एक कण का प्राकृतिक ब्रह्मांडीय न्याय है। उस बहाव, बदलाव में प्रकृति सब के साथ व्यक्तिगत रासायनिक न्याय करती है यानी यहां भी किसी द्वैतवाद प्रणाली का निवास नहीं है, ना ही

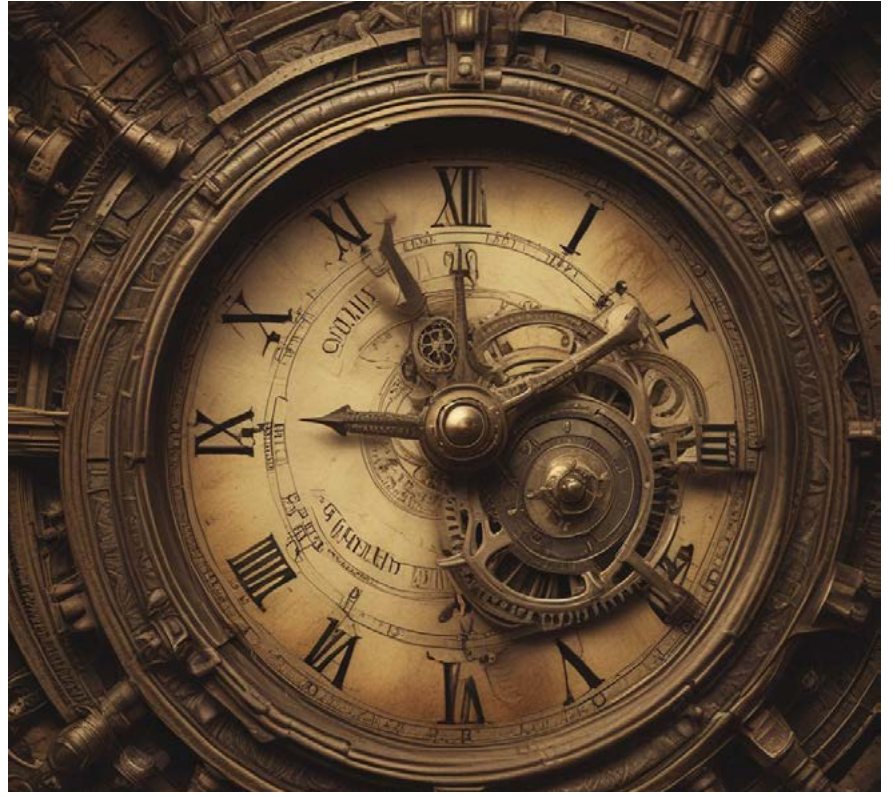
द्वैतवाद का कोई भी स्थायी विज्ञान कार्य करता है। समय ही अपरिपक्व एवं अधूरे अवस्थाओं को पूर्ण करने के लिए सजीव निर्जीव। अनेकों प्रकार की अवस्थाएं सिद्धांत विज्ञान में अपनी अवस्था को पूर्ण कर अंत हो जाती है। अर्थात् ऐसा नहीं होता कि समय के बदलाव या बहाव में होने वाले परिवर्तन सभी पर सामान्य रूप से लागू होते हो जैसी मृदा भूमि कण वैसा परिवर्तन वैसा प्रभाव, किसी एक के लिए

अच्छा किसी एक के लिए कठिन और इसी चरणावली में वक्त –ए –तरीन होकर चलते रहने से मृदा स्वयं वह स्तूप विज्ञान बन जाते हैं, समय की चलती फिरती भट्टी बन जाते हैं जो हर अवस्था से गुजरते हुए ठोस परिपक्व रासायनिक मलबों को पचा कर एक गंध धारी प्राकृतिक मृदा वाहन बन जाते हैं।

जिन्हें वक्त से टकराने की हसरत होती है वह ऐसे अब अपूर्ण शासन शोषणवादी अहंकारी स्तूप मंडल होते हैं जो चाहतों का जनाजा दिखाकर रूह पर आबरू, बे- आबरू करने का इल्जाम लगाकर चाहत और आबरू को हासिल करने की बात पर मौजूदा स्थिति को अधूरा कर दूसरे मंडल में प्रवेश कर जाते हैं और ये तमाम उधेड़बुन समय के घेराव में गुजराती भारती अंकित वही अवस्थाएं होती हैं जो समय के भट्टी में परिपक्व होने के लिए पूर्ण होने के लिए भर्ती है समय का चक्र जहां परिवर्तन और बदलाव कांटा चलता है एक तरीके की शफलिंग क्रिया है जो समय में कई अधूरे परतों को भारतीय रहती है अवस्थाओं को खत्म किया जाए।

समय ब्रह्मांड की अद्वैत इकाई है लेकिन इस इकाई में मृदा सजीव निर्जीव की है जिसमें अनेकों ब्रह्मांड सजीव निर्जीव कणों की रासायनिक तक गांधीय मिलान है जो प्रथम उत्पत्ति से लेकर जीवन क्रम तक की गुणात्मकता को धारण किए हुए है इसीलिए समय के इस अद्वैत इकाई में हर एक अवस्था अलग है यानी जब बदलाव का समय काटा चलता है शुफलिंग होती है तो संपूर्ण मृदा तत्व को सजीवता निर्जीवता को प्रभावित करती है लेकिन उनमें भी हर एक कण को अपनी अपनी मृदा गुण कला के अनुसार ही महसूस एवं एहसास होगा फिर वही से व्यक्तिगत समय कण समय वाहन आरंभ हो जाता है जो हथियार बनाकर कार्य करता है।

समय वह अस्त्र है जो उन समस्त समय के बुनकरो, समय के धागों को समय रूपी सजीव जीव के स्वप्न एंड्री संचालित चरखे से



समय ब्रह्मांड की अद्वैत इकाई है इस इकाई में मृदा सजीव निर्जीव की है जिसमें अनेकों ब्रह्मांड सजीव निर्जीव कणों की गांधीय मिलान है जो प्रथम उत्पत्ति से लेकर जीवन क्रम तक की गुणात्मकता को धारण किए हुए है इसीलिए समय के इस अद्वैत इकाई में हर एक अवस्था अलग है यानी जब बदलाव का समय काटा चलता है शुफलिंग होती है तो संपूर्ण मृदा तत्व को सजीवता निर्जीवता को प्रभावित करती है लेकिन उनमें भी हर एक कण को अपनी अपनी मृदा गुण कला के अनुसार महसूस एवं एहसास होगा फिर वही से व्यक्तिगत समय कण समय वाहन आरंभ हो जाता है जो हथियार बनाकर कार्य करता है।

जोड़कर एक ऐसे वस्त्र का निर्माण करता है जो समस्त अवस्थाओं को खींचकर भोग योग्य बनाकर संजीव जीव वाहन मृदा माध्यम से मिटा कर शासन शोषण द्वैतवादी विकसित प्रथा को खत्म कर पुनः निर्जीवता के मंडल में प्रवेश कर प्राकृतिक विज्ञान बना देता है। समय के बुने अस्त्र को बीजत्व रूपी आत्मा कहते हैं। इस बीजत्व रूपी आत्मा से समय का वस्त्र भी हट जाता है जब वस्त्र को धारण करने की वजह भी खत्म हो जाती है। हर अवधि हर काल हर समय में भक्षण ही नियति है मिटना

ही मंजिल है। आरोग्यता यही है कि समय के बहाव में बहते चले स्वतः आप वहीं पहुंचेंगे जहां आपकी मंजिल होगी चाहत हो या इच्छा दोनों को आनंद तभी मिलता है जब समय में समय बनकर चलते हैं और यह स्वतः से होने वाली क्रिया है आपको समय चला रहा है या आप समय में चल रहे हैं यह न सोचकर आप खुद समय है जो गतिमान है विज्ञान है समय में गतिमान रहने से स्वयं में एक सक्षम यात्री बन जाते हैं यानी स्वयं एक सक्षम प्राकृतिक सुरक्षित यात्रा करते हैं। हर कोई समय में स्वतः

ही समय का यात्री बनकर अपने वातावरण अपने रासायनिक जलवायु में यात्रा कर विचरण कर रहे हैं, अर्थात् सजीव देह समय के निर्जीव आंतरिक मंडल में लगातार यात्रा कर रहे हैं जिसे मानसिक विचरण कहते हैं यहां से विचार और सोच की उत्पत्ति होती है विचार और सोच ही आंतरिक जलवायु लिफाफा बनाने की क्रिया करते हैं जहां से आंतरिक समय मंडल पर प्रभाव पड़ता है जिसकी अभिव्यक्ति शारीरिक देह माध्यम से भावनाओं के स्वरूप में अभिव्यक्त होती है यही अवस्था बुनकर अवस्था है जो समय के धागे को बुनते हुए इच्छा या फिर चाहत के बीजत्व का विज्ञान बनाते हैं और उसे पूर्ण करने की ही अवस्था है स्वयं का उस इच्छा चाहत या वस्तु के लिए समय चुंबक वस्त्र धारण करता बन जाना जिससे उस अवस्था की पूर्ण अवस्था प्राप्त हो सिद्धांत परिपक्व होकर मिट जाए। समय ही समय में गतिमान रखने वाली ब्रह्मांड बीजत्व अवस्था है जो संपूर्ण पूर्ण ब्रह्मांड को सिद्धांत गतिमान किए हुए हैं।

वक्त वजूद ईंधन तत्व की रासायनिक विज्ञान भट्टी यानी वक्त तत्व को वजूद की गर्मी देकर रासायनिक विज्ञान को पूर्ण कर ब्रह्मांड स्थिर संचालन यानी stationery motion of stable electronic bonding science को संचालित कर universal truth with universal justice की frequency को oscillatory vibratory motion के तहत हर जीव सजीव निर्जीव प्राणी, प्रणाली में सक्रिय रखते हुए उन तमाम प्रकार के subdivisionary secondary live time wires को रखते हैं जो electronic conductance career, sajeev appliances and technology को primary source of universal law of time is connect करते हैं। अर्थात् वक्त वो नशतर- ए - औजार है जो गंदगी, सड़न, रोग, अधूरापन, शासन, अहंकार एवं ताकतवर बनने की

शक्तिमान अभिलाष को मिटाने का कार्य जीवन के दिनचर्या विज्ञान के माध्यम से करते हैं। समय जीवन रूपी electronic elementary machinery में अवस्थाओं के जरिए ऑयलिंग की क्रिया करते हैं जिससे जीवन गतिमान रहे अवस्थाओं से बचाव या उनमें विकल्प मूल समस्या को कभी पूर्ण नहीं होने देते हैं विकार और उत्पन्न हो जाता है और जीवन समाप्त हो जाता है।

theoretically time is parallel running universal unit but practically time is the major and core unit of life because time and motion both are driven by the electronic chemical conductance of life in the form of emotions and mental pathway of inner feelings trajectory that means motion and Time both are directly proportional to each other which says that when self energy is weak suppressed full of other dominating factors the view and weave of time also become very sensitive and more prone to diseases and formation of cyst in the form of cystic thoughts that means an abstract word develops which becomes concrete when they are continuously supplied by resources provided by the abstract world which releases the chemical of delusion and illusion on which concrete world feeds in the form of parasitic mode where abstract science is runned by emotions and mental pathway of inner feeling tragedy and concrete world is the result of abstract science which can be felt

touched and sensed, this science of other parasitic dominance is broken by none or the other but by self energy of, that is no more accepting fake rewards of outer world and this forms an energy shield and weapon which is also built by time only which now functions as smallest invisible abstract device eradicating killing deleting and up rooting all the deep embedded stones broken pieces and micro minute scratches of life which were once capable of becoming cancer of life which was brought on surface by time and now it is eradicated by time only which proves that होता वही है जो समय की मांग और रासायनिक तत्वता की बीजत्व की अवस्था होती, that is why the universal live practical sajeev nirjiv science ground Surya ashram Ashok Dham says that

वक्त (नशतर - ए - हथियार है)
हर मंजिल हर रास्ते वक्त के शहगर्द है
वक्त का कोई वारिश नहीं होता
वक्त अपनी रजा सजा में नहीं
कर्म के मिट्टी में दिखाता है
ये वक्त है जनाब जरा सम्भाल कर चलिए
आपको भी वक्त दिखा सकता है
वक्त - ए - नशतर बनकर हर शकश घूम
रहा है
आप वक्त - ए - फ्रौलादी बनिए
वक्त - ए - तरीन रहिए
आला कुदरती मका कहलाएंगे
वक्त जखम नहीं देता
वक्त नकाब हटाता है
उन आइनो को तोड़ता है जो फरेबी होते हैं।

देश-सेवा ही ईश्वर-सेवा है : सावरकर



प्रकृति मेल डेस्क

सावरकर ने अपने मित्रों को बम बनाना और गुरिल्ला पद्धति से युद्ध करने की कला सिखाई। अनुयायी मदनलाल ढींगरा ने एक सार्वजनिक बैठक में अंग्रेज अफसर कर्जन की हत्या कर दी। नासिक जिले के कलेक्टर जैकसन की हत्या के लिए नासिक षडयंत्र काण्ड के अन्तर्गत इन्हें 7 अप्रैल, 1911 को काला पानी की सजा पर सेलुलर जेल भेजा गया। कैदियों को यहां नारियल छीलकर उसमें से तेल निकालना पड़ता था। इतने पर भी उन्हें भरपेट खाना भी नहीं दिया जाता था।



विनायक दामोदर सावरकर

जन्म : 28 मई 1883,

मृत्यु : फ़रवरी 26, 1966 (उम्र 82 वर्ष)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन महान क्रांतिकारियों में से हैं जिनकी विचारधारा, संगठन क्षमता और बलिदान ने भारतीय इतिहास को नई दिशा दी। विनायक दामोदर सावरकर केवल एक क्रांतिकारी नहीं थे, वे एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनका जन्म 28 मई 1883 को महाराष्ट्र के नासिक जिले के भगूर गाँव में हुआ। बाल्यकाल से ही उनमें देशभक्ति और साहस के बीज अंकुरित हो चुके थे, जो समय के साथ एक विशाल वटवृक्ष बने।

अक्सर वीर सावरकर को केवल एक क्रांतिकारी के रूप में देखा जाता है, परन्तु उनका साहित्यिक योगदान भी उतना ही प्रभावशाली था। उन्होंने '1857 का स्वतंत्रता संग्राम' जैसी ऐतिहासिक पुस्तक लिखकर भारत में राष्ट्रीय चेतना की एक नई लहर पैदा की। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद कई स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने जीवन को देश के लिए समर्पित कर दिया। इसके अलावा

उन्होंने 'माझी जन्मठेप' जैसी आत्मकथा भी लिखी जिसमें अंडमान की यातनाओं का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है।

सावरकर एक प्रभावशाली कवि भी थे। उनकी कविताओं में कहीं करुणा है तो कहीं क्रांति की तीव्र पुकार। “सागर प्राण तळमळला” जैसी उनकी कविताएं समुद्र के प्रतीक द्वारा कैदी के भीतर छटपटाते स्वतंत्रता के भावों को जीवंत करती हैं। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से न केवल यातना भोगी जीवन की व्यथा दिखाई, बल्कि संघर्ष और आशा का संदेश भी दिया। साहित्य के क्षेत्र में उनका योगदान स्वतंत्रता आंदोलन के मनोबल को बनाए रखने में अद्वितीय रहा।

समाज सुधार के क्षेत्र में भी सावरकर ने उल्लेखनीय कार्य किए। उनका मानना था कि सामाजिक कुरीतियाँ भारत की राजनीतिक गुलामी का एक बड़ा कारण हैं। इसलिए वे छुआछूत और जातिवाद के प्रबल विरोधी बने। उन्होंने 'सामाजिक समता' के सिद्धांत को बढ़ावा दिया और अस्पृश्यता के उन्मूलन के लिए कई जन जागरूकता अभियान चलाए। उन्होंने सार्वजनिक जल स्रोतों, मंदिरों और विद्यालयों को सभी जातियों के लिए खोलने का आह्वान किया। उनके अनुसार, सामाजिक



एकता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता भी अपूर्ण रहती है।

स्वतंत्रता संग्राम में सावरकर की रणनीति विशिष्ट थी। जहाँ एक ओर गांधीजी ने सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग अपनाया, वहीं सावरकर का विश्वास था कि विदेशी सत्ता को केवल सशस्त्र संघर्ष और दृढ़ संगठन के माध्यम से ही हटाया जा सकता है। उन्होंने सैन्य प्रशिक्षण को अत्यंत महत्वपूर्ण माना और युवाओं को आत्मरक्षा एवं देशभक्ति के लिए संगठित करने पर बल दिया। उनका विचार था कि भारत को अपने अस्तित्व के लिए अपने सैनिक बल का विकास करना चाहिए।

अंडमान से रिहाई के बाद सावरकर ने राजनीति में सक्रिय भागीदारी जारी रखी। वे हिंदू महासभा के अध्यक्ष बने और राष्ट्रीय मुद्दों पर अपने विचार दृढ़ता से प्रस्तुत किए। उन्होंने 'अखंड भारत' की कल्पना को बढ़ावा दिया और मुस्लिम लीग द्वारा उठाए जा रहे पृथक मुस्लिम राष्ट्र के विचार का प्रबल विरोध किया। उनके अनुसार धर्म के आधार पर देश का विभाजन भारत की एकता के लिए घातक सिद्ध होगा। दुर्भाग्यवश, बाद में भारत का विभाजन हुआ, लेकिन सावरकर की चेतावनियाँ आज भी प्रासंगिक प्रतीत होती हैं।

स्वतंत्र भारत में सावरकर का योगदान और उनकी भूमिका को लेकर मतभेद उभरे। कुछ लोग उन्हें कट्टर हिंदुत्ववादी कहकर आलोचना करते हैं, जबकि कई लोग उन्हें भारत के सच्चे राष्ट्रभक्त और दूरदर्शी विचारक के रूप में सम्मानित करते हैं। महात्मा गांधी की हत्या के बाद उन पर षड्यंत्र का आरोप लगा, लेकिन न्यायालय में ठोस सबूतों के अभाव में उन्हें बरी कर दिया गया। इस घटना ने उनकी छवि को आघात पहुँचाया, फिर भी उनके विचारों और कार्यों की महत्ता कम नहीं हुई।

वीर सावरकर ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में राजनीति से दूरी बनाकर लेखन और चिंतन में समय बिताया। उन्होंने भारत के भविष्य को लेकर कई गहन विचार प्रस्तुत किए। वे मानते थे कि यदि भारत को विश्व में



सम्मान पाना है, तो उसे अपनी सैन्य, आर्थिक और सांस्कृतिक शक्ति को बढ़ाना होगा। वे आत्मनिर्भरता के प्रबल समर्थक थे और आधुनिक विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विकास को आवश्यक मानते थे।

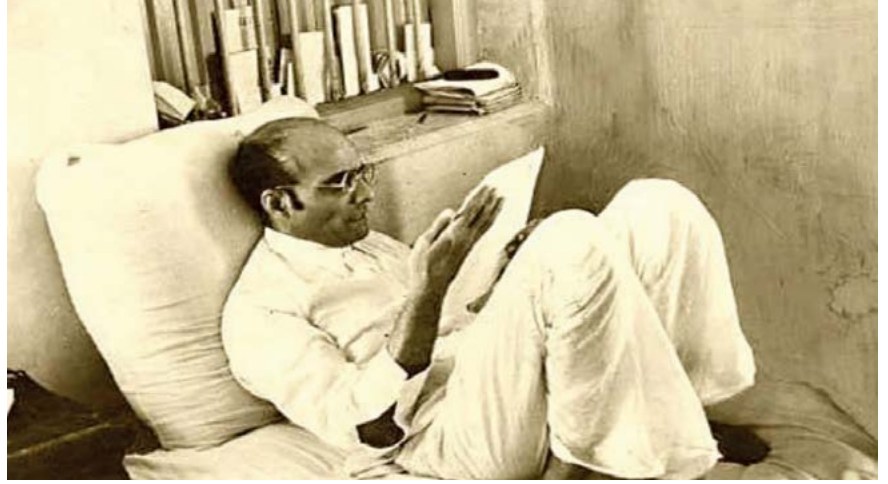
26 फरवरी 1966 को वीर सावरकर ने स्वेच्छा से उपवास कर जीवन त्याग दिया। उन्होंने मृत्यु को भी एक योद्धा की तरह गले लगाया। उन्होंने घोषणा की थी कि जब जीवन का ध्येय पूर्ण हो जाए, तब शरीर को ढोते रहना व्यर्थ है। उनका यह कदम भी उनके जीवन दर्शन का परिचायक था जिसमें व्यक्तिगत जीवन से बढ़कर राष्ट्र को सर्वोपरि माना गया।

आज वीर सावरकर की विरासत बहुआयामी है। वे भारतीय राष्ट्रवाद के प्रतीक हैं, जिन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक समता और सांस्कृतिक गौरव का भी सपना देखा था। उनके विचार आज के भारत में भी कई मुद्दों पर मार्गदर्शन करते हैं। विशेष रूप से राष्ट्र सुरक्षा, सामाजिक समरसता, और सांस्कृतिक आत्मगौरव के विषयों में उनकी सोच अत्यंत प्रासंगिक है।

उन पर आधारित कई किताबें, शोध प्रबंध और फिल्में बन चुकी हैं। 'स्वातंत्र्यवीर सावरकर' नामक मराठी फिल्म ने उनकी जीवनी को बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। साथ ही, भारत सरकार ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए विभिन्न डाक टिकट जारी किए हैं और सार्वजनिक स्थलों का नामकरण उनके नाम पर किया है।

समकालीन भारत में सावरकर को लेकर बहसें होती रही हैं। कुछ लोग उन्हें वीरता, दूरदर्शिता और क्रांतिकारी भावना का प्रतीक मानते हैं, तो कुछ उनके हिंदुत्व विचारों की व्याख्या करते समय आलोचना करते हैं। फिर भी, यह निर्विवाद है कि वीर सावरकर का योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

उनकी लेखनी में विज्ञानसम्मत दृष्टिकोण



वीर सावरकर ने महिलाओं की स्वतंत्रता और शिक्षा का भी समर्थन किया। उन्होंने कहा कि जब तक समाज में महिलाओं को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक वह समाज पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो सकता। उन्होंने विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा और महिलाओं के सार्वजनिक जीवन में भागीदारी को बढ़ावा दिया। वे स्वदेशी उद्योगों के प्रबल समर्थक थे।

और तार्किकता थी। सावरकर ने धार्मिक अंधविश्वासों के खिलाफ आवाज उठाई और विज्ञान को सामाजिक जीवन में अपनाने पर बल दिया। वे कर्मकांडों और रूढ़ियों के विरोधी थे। उनका हिंदुत्व केवल धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पहचान थी जो भारत की हजारों वर्षों की विरासत को जोड़ती थी।

वीर सावरकर ने महिलाओं की स्वतंत्रता और शिक्षा का भी समर्थन किया। उन्होंने कहा कि जब तक समाज में महिलाओं को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक वह समाज पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो सकता। उन्होंने विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा और महिलाओं के सार्वजनिक जीवन में भागीदारी को बढ़ावा दिया।

उनका आर्थिक दृष्टिकोण भी अत्यंत व्यावहारिक था। वे स्वदेशी उद्योगों के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन के दौरान स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग और विदेशी माल का बहिष्कार करने का आह्वान किया था। उनका मानना था कि आत्मनिर्भरता से ही राष्ट्र सशक्त बन सकता है।

आज जब हम भारत को विकास के पथ पर आगे बढ़ता देखते हैं, तो सावरकर जैसे महापुरुषों का योगदान स्मरण करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने आदर्शों और ध्येय से डिगना नहीं चाहिए। उनके जीवन से हम संघर्ष, त्याग और सृजनशीलता की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

वीर सावरकर की जीवन गाथा केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं है, बल्कि यह भारत के स्वप्न, संघर्ष और सफलता की कहानी है। वे हमें याद दिलाते हैं कि स्वतंत्रता केवल राजनैतिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पुनर्जागरण भी है।

उनका जीवन हर भारतीय के लिए एक ज्योतिस्तंभ की तरह है, जो यह मार्गदर्शन देता है कि राष्ट्र की सेवा में समर्पित जीवन ही सबसे बड़ा जीवन होता है। सावरकर ने अपने शब्दों और कर्मों से यह सिद्ध कर दिया कि एक व्यक्ति, यदि अपने संकल्प में अडिग रहे, तो वह इतिहास की धारा को भी मोड़ सकता है।

दम घोटता प्रदूषण



गौरीशंकर वैश्य विनम्र

लखनऊ

मानव, जीव- जंतु एवं पेड़ - पौधों सभी को स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छ पर्यावरण की आवश्यकता होती है। वैसे तो पृथ्वी पर विद्यमान प्रत्येक तत्व महत्वपूर्ण है, किन्तु वायु के बिना कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता, अतः श्वास के लिए शुद्ध वायु मिलनी अत्यावश्यक है।

हमने स्वच्छ वायु की उपादेयता और उसके महत्व को बहुत पहले ही समझ लिया था। तभी तो ऋग्वेद में कहा गया है -

**वात आ वातु भेषजं मयोभु नो हृदे
यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः।**

वायु की महत्ता को रेखांकित करने वाली उक्त पंक्तियों से आशय यही है कि वायु हमें ऐसी औषधि दे, जो शांति और आरोग्य प्रदान करे। इसमें निहित अमृत रूपी निधि हमारी आयु को बढ़ाकर हमें दीर्घजीवी बनाए।

हमने स्वस्थ जीवन के लिए वायु के महत्व को समझा और इसे प्रदूषित होने से बचाने का संकल्प भी लिया, किन्तु मानव की स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण आज सम्पूर्ण विश्व वायु प्रदूषण को एक गंभीर समस्या के रूप में झेल रहा है।

क्या है वायु प्रदूषण

जब वायुमण्डल की गैसों की निश्चित मात्रा और अनुपात में अवांछनीय परिवर्तन हो जाता है या वायु में इन गैसों के अतिरिक्त कुछ



विश्व के 90 प्रतिशत देशों में प्राणवायु दूषित हो गयी है, इसमें भारत प्रथम स्थान पर है। हमारी राजधानी दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी है। यूनिसेफ की रिपोर्ट 'स्टेट आफ ग्लोबल एयर' के अनुसार 2021 में कोरोना महामारी के चलते जब अपेक्षाकृत कम प्रदूषण था, फिर भी दुनिया में 84 लाख मौतें वायु प्रदूषण के कारण हुईं, जिनमें 21 लाख मौतें भारत में हुईं। रिपोर्ट में बताया गया कि यदि यही हाल रहा, तो भारतीयों की औसत आयु 6 वर्ष कम होने का खतरा उत्पन्न होगा।

अन्य विषाक्त या कणिकीय पदार्थ मिल जाते हैं, तो यह वायु प्रदूषण कहलाता है।

वायु प्रदूषण के प्रभाव

वायु प्रदूषण के कारण मनुष्य तथा पशु-पक्षियों को गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे दमा, अन्धापन, श्रवणहास, त्वचा रोग आदि बीमारियाँ पैदा

होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रत्येक वर्ष 2 से 4 लाख लोगों की मौत का कारण वायु प्रदूषण है। ग्लोबल बर्डन आफ डिजीज नामक वैश्विक संस्था के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष श्वास से जुड़ी बीमारियाँ महामारी में परिवर्तित हो रही हैं। वायु प्रदूषण से अम्लीय वर्षा का खतरा बढ़ गया है, क्योंकि

वर्षा के जल में सल्फर-डाइआक्साइड, नाइट्रोजन-डाइआक्साइड, मिथेन आदि विषैली गैसों के घुलने की सम्भावना बढ़ी है, जिससे पेड़ - पौधों, भवनों और ऐतिहासिक इमारतों को क्षति पहुँची है।

वायु प्रदूषण के प्रमुख कारण

वायु प्रदूषण मुख्य रूप से मानव - जनित समस्या है। मानव की विकासशील प्रवृत्ति के कारण औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण बढ़ रहा है। मानव क्रियाकलापों में वनोन्मूलन, लकड़ी, कोयला एवं उपले जैसे पदार्थों के जलाने से उत्पन्न धुआँ, कारखानों से निकलने वाला धुआँ, ताप विद्युत गृह, खनन, कृषि कार्य, आतिशबाजी, रासायनिक पदार्थों का प्रयोग, पशुओं द्वारा जुगाली की क्रिया, प्लास्टिक एवं पराली का जलाना, गाड़ियों की बढ़ती संख्या, छोटे उद्योगों का डीजल - जैसे प्रदूषणकारी ईंधनों पर निर्भर होना और निर्माण कार्यों तथा टूटी सड़कों के कारण हवा में धूल उड़ना भी वायु प्रदूषण के बड़े कारण हैं। अन्यान्य प्रदूषक उत्सर्जित होकर वायुमण्डल की अन्य गैसों को प्रदूषित कर रहे हैं। भू - मण्डल का जैविक - अजैविक तंत्र प्रभावित हो रहा है।

वायु प्रदूषण की भयावह स्थिति

विश्व के 90 प्रतिशत देशों में प्राणवायु दूषित हो गयी है, इसमें भारत प्रथम स्थान पर है। हमारी राजधानी दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी है। यूनिसेफ की रिपोर्ट 'स्टेट आफ ग्लोबल एयर' के अनुसार 2021 में कोरोना महामारी के चलते जब अपेक्षाकृत कम प्रदूषण था, फिर भी दुनिया में 84 लाख मौतें वायु प्रदूषण के कारण हुईं, जिनमें 21 लाख मौतें भारत में हुईं। रिपोर्ट में बताया गया कि यदि यही हाल रहा, तो भारतीयों की औसत आयु 6 वर्ष कम होने का खतरा उत्पन्न होगा।

वायु प्रदूषण घरों के अंदर भी

प्रायः वायु प्रदूषण के खतरे की चर्चा घर के बाहर स्थित वातावरण के संबंध में की जाती है, परन्तु आजकल के प्रदूषण की मात्रा

को बढ़ाने वाले कारखाने, मोटरसाइकिल, होटल, हॉस्पिटल - जैसे इन्डोर में (घर, आफिस) रहता है। लोग एयरकण्डिशन कार से निकलकर अपने घर या आफिस में भी एयरकण्डिशन में रहते हैं, लेकिन वह स्थान भी प्रदूषण मुक्त नहीं होता। प्रदूषण इतना बढ़ चुका है कि व्यक्ति घर में हो या बाहर, अगर बीड़ी-सिगरेट न भी पीता हो, फिर भी वह प्रतिदिन 12 सिगरेट का धुआँ अपनी साँस में लेता है।

इन्डोर वायु - प्रदूषण के मुख्य तत्त्व

घर के अंदर के वातावरण में वायु प्रदूषण के प्रमुख माध्यम उपस्थित रहते हैं -

1. **पोलन** - 10 से 100 माईक्रान
2. **बैक्टीरिया** - 0.3 से 35 माईक्रान
3. **पालतू जीव** (कुत्ते, बिल्ली, खरगोश) - 0.3 से 10 माईक्रान
4. **धूल** - फेफड़े को नुकसानदायक 0.5 से 5 माईक्रान
5. **धुआँ** - आँखों और फेफड़े के लिए हानिकारक 0.01 से 1 माईक्रान
6. **फार्मलडिहाईड** - घर में फर्नीचर की पॉलिश, पेंट, कोयला, प्रतिरोधक फोम तथा कार्पेट परफ्यूम आदि इससे आँख और नाक में जलन तथा एलर्जी उत्पन्न करती है। यह कैंसर भी पैदा कर सकता है।
7. **रेडान** - मिट्टी से प्राकृतिक रूप से निकलने वाली यह गैस शहरों के कमरों में वातायन की कमी के कारण घरों में अधिक मात्रा में एकत्र होकर फेफड़े के कैंसर को जन्म देती है।
8. **तम्बाकू** - इसका धुआँ अत्यंत हानिकारक तथा कैंसर कारक रसायन का स्रोत होता है, जिससे आँख, नाक, गले में जलन, ब्रोंकाइटिस, अस्थमा जैसे रोग जन्म लेते हैं।
9. **रसोईघर** - कुकिंग गैस कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ाता है, जो रक्त की आक्सीजन बहाने की

क्षमता को कम करता है और सल्फर डाइआक्साइड खाँसी, आँखों की जलन, जैसे रोगों को जन्म देती है।

वायु प्रदूषण पर नियंत्रण हेतु आवश्यक उपाय

संयुक्त राष्ट्र ने अपनी ग्लोबल एयर रिपोर्ट में विश्व में बढ़ते वायु प्रदूषण पर बड़ी चिंता जतायी गयी है। रिपोर्ट के अनुसार लगभग 1000 लोग प्रतिदिन वायु प्रदूषण की चपेट में आते हैं। 2017 में अकेले चीन और भारत में वायु प्रदूषण के कारण लगभग तीस लाख लोगों ने अपने प्राण गवाँये। आस्ट्रेलिया की लेबर पार्टी ने 2030 तक कार्बन उत्सर्जन को 45 प्रतिशत तक घटाने का संकल्प लिया है।

आर्थिक प्रगति जारी रखनी है, तो ऊर्जा का उपभोग भी जारी रहेगा, किन्तु यदि ऊर्जा के उपभोग के तौर - तरीके में कुछ सुधार कर लिया जाए, तो वायु प्रदूषण को संतोषजनक स्थिति तक सुधारा जा सकता है। इसके लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण उपायों को अपनाया जा सकता है -

1 ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों का प्रयोग

ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाय, जैसे जैव द्रव्य ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, सौर ताप ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा जल विद्युत ऊर्जा आदि।

स्वचालित वाहनों में यथासम्भव पेट्रोल, डीजल की जगह संपीडित प्राकृतिक गैस (सीएनजी) का प्रयोग किया जाय। इसके अलावा कोलबेड मिथेन, बायोडीजल के प्रयोग से वायु प्रदूषण को कम किया जा सकता है। डीजल की गाड़ियों में सल्फर युक्त डीजल (यूएलएसजी) या हरित डीजल का प्रयोग किया जाय।

2 विद्युत चालित वाहनों का अधिक प्रयोग

महानगरों में वाहनों के लिए आड-इवेन नंबर पद्धति लागू की जाय तथा सार्वजनिक वाहन प्रयोग पर जोर दिया जाय। विद्युत

चालित वाहनों को प्राथमिकता दी जाय इससे वायु प्रदूषण में कमी आएगी। स्वचालित वाहनों (आटोमोबाइल्स) के इंजन से अत्यंत विषैली गैसें कार्बन डाइआक्साइड, कार्बन मोनोआक्साइड एवं नाइट्रोजन आक्साइड निकलती हैं। अतः स्वचालित वाहनों में स्क्रबर तथा उत्प्रेरक संपरिवर्तक (कैटालिस्ट कन्वर्टर) का प्रयोग अनिवार्य किया जाय। वाहनों के प्रदूषण की नियमित जाँच की जानी चाहिए।

3 एसी - रेफ्रिजरेटर के उपभोग में कमी

प्राणघातक प्रदूषण करने वाली सामग्रियों तथा तत्वों-जैसे ओजोन क्षय करने वाले (एयर - कण्डिशनर, रेफ्रिजरेटर आदि) क्लोफ्लोरोकार्बन उत्पादन तथा उपभोग में भारी कटौती होनी चाहिए।

4 वायुमण्डल की शुद्धि हेतु यज्ञ - हवन आयोजन

वायुमण्डल की शुद्धि हेतु यज्ञ (हवन) की उपयोगिता वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध है। हजारों वर्षों से ऋषि - मुनियों के समय से जो यज्ञ आदि होते थे, उसका धार्मिक के साथ वैज्ञानिक कारण भी दृष्टव्य हैं। इससे पर्यावरण शुद्ध एवं स्वास्थ्यप्रद होता है। गाय का शुद्ध घी और गाय के गोबर का उपला - इन दोनों सामग्रियों से यदि हवन किया जाय, तो उससे उत्पन्न हुए वायु में 'एथिलिन आक्साइड, प्रोपिलिन आक्साइड, फार्मलडिहाइड, बीटा प्रायोलोकटोन' होते हैं। यह वायु बहुत - से रोग और मन का तनाव दूर करती है। इससे उत्पन्न ऊर्जा दूषित वायु को अपनी तरफ खींचकर शुद्ध करती है।

फ्रांस के ट्रेले नामक वैज्ञानिक ने हवन पर शोध के बाद पाया कि हवन मुख्यतः आम की लकड़ी पर किया जाता है। आम की लकड़ी जलने से फार्मिक एल्डिहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है, जो हानिकारक बैक्टीरिया और जीवाणुओं को मारती है। इससे वातावरण शुद्ध होता है। गुड़ जलाने पर भी टायफायड



जैसे खतरनाक रोग फैलाने वाले जीवाणु मर जाते हैं।

5. घरों का वातावरण रहे शुद्ध

घर का वातावरण शुद्ध करने के लिए घर के बाहर तुलसी का पौधा लगाना चाहिए, तथा वहाँ घी का दीपक जलाएँ। दीये की ज्योति और तुलसी के पत्ते के बीच जो प्रतिक्रिया होती है, उसमें 600 वर्ग फीट के क्षेत्र में एंटीबैक्टीरियल और एंटी इंसेक्ट एटमास्फेर (वातावरण) हो जाता है। घर के अन्दर एक किलो आम की लकड़ी पर आधा किलो हवन सामग्री डालकर जलाने से एक घंटे के भीतर ही कक्ष में उपस्थित बैक्टीरिया का स्तर 94 प्रतिशत तक कम हो जाता है।

हवन के द्वारा न केवल मनुष्य, अपितु वनस्पतियों एवं फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले जीवाणु भी नष्ट हो जाते हैं, जिससे फसलों में रासायनिक खाद का प्रयोग कम हो जाता है।

6 घर के बाहर का वातावरण रहे शुद्ध और स्वच्छ

घर के आसपास या अन्य खाली स्थानों में नीम, बरगद, आम, पाकड़, पीपल जैसे घने वृक्ष अधिक संख्या में लगाए जाएँ। वृक्षों की अंधाधुंध कटान पर रोक लगनी चाहिए। वृक्ष ही हमारे प्राणवायुदाता हैं। वे विषैली कार्बन डाई आक्साइड गैस अवशोषित करते हैं तथा शुद्ध आक्सीजन प्रदान करते हैं।

शास्त्रों में बताया गया है कि घर के बाहर पीपल का पेड़ अवश्य लगाना चाहिए, क्योंकि यह पेड़ 1400 किलो जितना आक्सीजन बाहर फेंकता है और इतना ही प्रदूषण हाइड्रोकार्बन, कार्बन डाईआक्साइड वह अपने आप में समाविष्ट कर लेता है। इसलिए पीपल का पेड़ वायु प्रदूषण घटाने में सहायक होने के कारण अत्यंत लाभदायक है।

पोषण ही नहीं, उपचार भी करती है माटी



सीताराम गुप्ता

पीतमपुरा, (दिल्ली)



कबीर दास कहते हैं:

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रौंदे मोय,
एक दिन ऐसा आयगा मैं रौंदूँगी तोय।

जब कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता है तो वह मिट्टी को खोदता है, उसे कूटता-पीटता है, उसमें पानी मिलाकर पैरों से सानता अर्थात् रौंदता है। इसी को लेकर मिट्टी कुम्हार से कहती है कि तू मुझे क्या रौंदता है? एक दिन खुद तू ही इस मिट्टी द्वारा रौंदा जाएगा अर्थात् मिट्टी में मिल जाएगा। मिट्टी मनुष्य को जीवन के यथार्थ से रूबरू कराती है। देखा जाए तो मिट्टी से निर्मित यह शरीर मिट्टी से भी गया गुजरा अर्थात् महत्त्वहीन है यदि इसमें सद्गुणों या संस्कारों का अभाव है। ज़ियाई बेगम 'ज़िया' का एक शेर है:-

मैं हूँ वो नंगे-खलक कि कहती है
मुझ को खाक,

इस को बना के क्यों मेरी मिट्टी खराब की।

मनुष्य का निर्माण जिन पाँच तत्वों से मिलकर हुआ है मिट्टी उनमें से एक और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। मिट्टी सहित अन्य तत्वों जल, पावक, गगन तथा समीर से ही मनुष्य का निर्माण हुआ है और मिट्टी सहित अन्य तत्वों जल, पावक, गगन तथा समीर में ही उसे विलीन हो जाना है। यदि गहराई से देखा जाए तो मिट्टी सहित अन्य तत्वों जल, पावक,

एक शिशु पैदा होते ही जिन पदार्थों पर निर्भर करता है वे सब प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मिट्टी से ही तो प्राप्त होते हैं। मिट्टी से ही कंद-मूल, फल-फूल, अन्नादि सब पदार्थ मिलते हैं जो हमारे भौतिक शरीर के पोषण के लिए ज़रूरी हैं। दुग्ध-घृत व अन्य वनस्पतीतर पदार्थ भी परोक्ष रूप से हमें मिट्टी से ही तो मिलते हैं और मिट्टी ही संचय करके रखती है जल को।

गगन तथा समीर से केवल मनुष्य का निर्माण और इन्हीं में उसका समापन नहीं होता अपितु उसका विकास भी इन्हीं पंच तत्वों में निहित है। मिट्टी जिसे दैनिक जीवन में साधारणतः बहुत कम महत्त्व दिया जाता है मनुष्य के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण ही नहीं अनिवार्य भी है।

एक शिशु पैदा होते ही जिन पदार्थों पर निर्भर करता है वे सब प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मिट्टी से ही तो प्राप्त होते हैं। मिट्टी से ही कंद-मूल, फल-फूल, अन्नादि सब पदार्थ मिलते हैं जो हमारे भौतिक शरीर के पोषण के लिए ज़रूरी हैं। दुग्ध-घृत व अन्य वनस्पतीतर पदार्थ भी परोक्ष रूप से हमें मिट्टी से ही तो मिलते हैं और मिट्टी ही संचय करके रखती है जल का। मिट्टी प्रकृति में अपनी गोद में तथा घरों में

अपनी देह से निर्मित घड़े में जल को यत्नपूर्वक सहेजकर रखती है। मिट्टी की गोद में पलने वाले पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ ही तो हैं जो हमें जीवनदायिनी ऑक्सीजन उपलब्ध कराते हैं। कहने का तात्पर्य यही है मिट्टी से बना शरीर मिट्टी से ही पोषण और प्राणदायिनी ऊर्जा पाता है। मिट्टी हमारी मातृभूमि का ही एक पोषक रूप है और इस रूप के विषय में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं:

हमें जीवनाधार अन्न तू ही देती है।
बदले में कुछ नहीं किसी से तू लेती है।
श्रेष्ठ एक से एक विविध द्रव्यों के द्वारा।
पोषण करती प्रेम भाव से सदा हमारा।।
हे मातृभूमि! उपजें न जो तुझ पर कृषि-
अंकुर कभी।

तो तड़प-तड़प कर जल मरें जठरानल में

हम सभी॥

यह मिट्टी ही है जो अनेक रूपों में जीवन भर हमारा साथ निभाती है। नरेश मेहता अपनी कविता 'मृत्तिका' में कहते हैं: मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ

जब तुम

मुझे पैरों से रौंदते हो

तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो तब मैं -

धन धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ.

मातृभूमि के रूप में यही मृत्तिका हमारे गौरव एवं प्रसन्नता का कारण भी है।

गुप्तजी कहते हैं :-

जिसकी रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं।

घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं।

परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए।

जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए।

हम खेले-कूदे हर्षयुत,

जिसकी प्यारी गोद में।

हे मातृभूमि!

तुझको निरख मग्न क्यों न हों मोद में?

आधुनिक वैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि मिट्टी हमारी रोगावरोधक शक्ति का विकास करती है। जो बच्चे धूल-मिट्टी में खेलते हैं वे उन बच्चों की अपेक्षा कम बीमार पड़ते हैं जो धूल-मिट्टी को कभी छूते भी नहीं और धूल-मिट्टी में खेलने वाले बच्चे बीमार पड़ने पर शीघ्र रोगमुक्त भी हो जाते हैं। अमरीका के गैटिस्बर्ग मैरीलैंड में अमरीकन हॉर्टिकल्चर थैरेपी एसोसिएशन द्वारा गठित समिति ने इस क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण प्रयोग और शोधकार्य किए हैं। प्रयोगों और शोधकार्यों के आधार पर समिति का दावा है कि मिट्टी की मनभावन महक भी मन-मस्तिष्क एवं स्नायुतंत्र पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

यहाँ मिट्टी से तात्पर्य गंदगी और कूड़े के ढेर अथवा प्रदूषित मिट्टी से नहीं अपितु साफ-सुथरी खेतों अथवा नदियों के किनारों की उस मिट्टी से है जो शहरों के गंदे नालों तथा औद्योगिक कचरे से मुक्त है। इसकी उपयोगिता



यहाँ मिट्टी से तात्पर्य गंदगी और कूड़े के ढेर अथवा प्रदूषित मिट्टी से नहीं अपितु साफ-सुथरी खेतों अथवा नदियों के किनारों की उस मिट्टी से है जो शहरों के गंदे नालों तथा औद्योगिक कचरे से मुक्त है। इसकी उपयोगिता तथा सरलता से उपलब्धता के कारण गांधीजी भी मृदा चिकित्सा को बहुत महत्त्व देते थे।

तथा सरलता से उपलब्धता के कारण गांधीजी भी मृदा चिकित्सा को बहुत महत्त्व देते थे। इसीलिए उन्होंने मनुष्यों पर ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी मृदा चिकित्सा के प्रयोग किए। मिट्टी इतनी उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है फिर भी कुछ लोग मिट्टी के स्पर्श से भी डरते हैं। मिट्टी मनुष्य का पोषण ही नहीं उसका श्रृंगार व उपचार भी करती है।

हमारे स्वास्थ्य, सौन्दर्य, पोषण, आरोग्य, पचार तथा दीर्घायु सभी का मिट्टी से गहरा रिश्ता है। प्राकृतिक चिकित्सा के रूप में मडथैरेपी अथवा मृदा चिकित्सा एक अत्यंत विश्वसनीय तथा महत्त्वपूर्ण चिकित्सा पद्धति है। एक सौंदर्य प्रसाधन के रूप में मुलतानी मिट्टी के गुण और उपयोगों से तो आप परिचित होंगे ही साथ ही यह अनेक व्याधियों के उपचार में भी सहायक होती है। मुलतानी मिट्टी की तरह ही सामान्य मिट्टी तथा अन्य अनेक प्रकार की मिट्टियाँ भी औषधीय गुणों से भरपूर होती है। इन मिट्टियों का लेप, पट्टियाँ अथवा कीचड़ स्नान (मडबाथ)

अनेकानेक व्याधियों के उपचार में लाभ पहुँचाता है। मिट्टी के इन्हीं औषधीय गुणों के कारण आज मडथैरेपी निशुल्क अथवा सस्ते प्राकृतिक चिकित्सालयों से लेकर आधुनिक महँगे स्वास्थ्य केंद्रों तक में लोकप्रिय हो चुकी है। अंत में हम सब की यही इच्छा होती है कि जिस जगह हम पैदा हुए हैं उसी जगह लौट आएँ और उसी मिट्टी से एकाकार हो जाएँ। कविवर मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार अपने पूर्वजों की मिट्टी में पूरी तरह से मिल जाना, उससे एकाकार हो जाना ही मोक्ष का मार्ग भी है: जिस पृथ्वी में पले हमारे पूर्वज प्यारे। उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे। लौट-लौट कर वही हृदय को शान्त करेंगे। उससे मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे। उस मातृभूमि की धूल में जब पूरे सन जाएँगे। होकर भवबंधन मुक्त हम आत्मरूप हो जाएँगे॥

सुख के दरवाजे से दुख का प्रवेश!



प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी

लखनऊ

लेखक आकाशवाणी से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।



वर्ष 2005 और उसके बाद के दिन, तेजी से बदलते रहने वाले, सुख किंवा दुख के न भूलने वाले दिन। तो पाठक गण, शुरुआत सुख से भरे उन दिनों से की जाए या दुख भरे दिनों से? इसके लिए सिक्का उछालूँ क्या?

5 जुलाई 2005 – आज लखनऊ के मेरे दूसरे नव निर्मित मकान “पावन” का गृह प्रवेश और सहभोज हो रहा है। लखनऊ के महानगर में डी -9, विज्ञानपुरी कालोनी में आज धूमधाम से समारोह है। नहीं नहीं करते करते आमंत्रित लोगों की संख्या लगभग 130 के आसपास हो गई है। पहला निमंत्रण अपने गुरुदेव आनंदमूर्ति जी को और दूसरा अपने पिता और आचार्य को। सपरिवार भाई लोग प्रोफेसर एस.सी. त्रिपाठी और दिनेश चंद्र त्रिपाठी, बहनोई डा टी.पी.उपाध्याय और राकेश मिश्रा, बुआ जयंती और फूफा जी और फिर ससुर, साले और अन्य ससुराली जन आमंत्रित हैं। गोरखपुर से अम्मा-पिताजी, श्वसुर के.सी. मिश्रा, साले अनुपम-नीलम, सलहज डा अंजली मिश्रा, सादू ओ.पी. मणि -ममता और परिजन, मीना के मामा मामी इंजीनियर एस.एन. मिश्रा भोपाल से आ चुके हैं। कुछ परिजन हमारे इस उपलब्धि से जल भुन कर समारोह का बहिष्कार भी कर रहे हैं। हर घर विशेषकर संयुक्त परिवार में ऐसा होता रहता है। मेरे साथ की वजह यह है कि हम पति पत्नी दोनों कमाऊ हैं और अपनी सुख-सुविधा के लिए शाह खर्च भी। शादी के बाद सबसे

पहले हम लोगों ने फ्रिज, टू व्हीलर फिर फोर व्हीलर, कूलर और फिर आवश्यकतानुसार गृहोपायोगी वस्तुएं जुटानी शुरू कर दी थीं जिसे वे लोग भी कर सकते थे लेकिन अपनी कंजूसी के चलते नहीं करते थे। ऐसे में उनका कुढ़ना और जलन रखना स्वाभाविक था। मेरे इस गृह प्रवेश के समारोह के बायकाट करने का एक और कारण यह था कि हमने इस प्रोजेक्ट की जानकारी किसी को शेयर नहीं की थी। सोचा था कि निगेटिव एफेक्ट से बच कर रहा जाए। बहरहाल कुछ परिजनों रिश्तेदारों सहित विज्ञानपुरी कालोनी, आकाशवाणी और केन्द्रीय विद्यालय के लगभग एक सौ लोग आए हुए हैं। इंजीनियर राजेन्द्र कुमार गुप्ता और इंजीनियर अजय कुमार गुप्ता अपने इस शिल्प और निर्माण को आगंतुकों को दिखा रहे हैं। समारोह में आने वाले लोग अपनी- अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। जयादातर की राय है कि कालोनी का यह मकान सभी मकानों से अलग है, विशिष्ट है। हमलोग अब लखनऊ के अपने कल्याणपुर मुहल्ले के पुराने मकान को छोड़ कर आज यहाँ शिफ्ट हो रहे हैं। सुबह पूजा पाठ और दिन में सहभोज सम्पन्न हुआ। आश्चर्य, इस समारोह को सम्पन्न हुए अब 20 साल से ऊपर हो रहे हैं लेकिन इसका मेरा बनाया बही खाता अभी तक मेरे पास उपलब्ध है।

शनिवार, 9 जुलाई 2005 – मेरे विवाह की पच्चीसवीं वर्षगांठ। इसे हमलोग प्रतिष्ठित

रेस्टोरेंट Ritz के फर्स्ट फ्लोर पर म्यूजिकल इवेंट विद डिनर के साथ धूमधाम से मना रहे हैं। छोटे बेटे यश आदित्य ट्रेनिंग से छुट्टी पर आए हुए हैं। वह और सादू की बिटिया पूजा सारे आयोजन को संचालित करने में लगे हैं। पूजा एंकर बनी हैं। मेरे सहयोगी और मित्र आकाशवाणी के म्यूजिक कम्पोजर हेम सिंह अपने साथ गायक कुलतार सिंह, मिथिलेश श्रीवास्तव, रश्मि चौधरी, पंडित धर्मनाथ मिश्रा, ठाकुर प्रसाद मिश्रा, पंकज आदि के साथ महफिल में वाह वाही लूट रहे हैं। साउंड सिस्टम सुरेंद्र भाई का है। और हाँ, इन कलाकारों ने कुछ भी पारिश्रमिक नहीं लिया है। बस, दो बोतल आर्मी का सबसे मंहगा गंगा जल पारिश्रमिक के लिए दिया गया है। इस समारोह की यादें आज भी मन में रची बसी हुई हैं। हालांकि वख्त ने किया क्या हंसी सितम कि तुम रहे ना तुम हम रहे ना हम! उम्र के इस पड़ाव पर आते आते हम पति पत्नी अपने अपने विचार और कर्म के चलते नदी के दो किनारे हो गए हैं। दाम्पत्य संबंध लगभग टूटने के दौर में।

उस दौर में मेरे बड़े पुत्र दिव्य आदित्य सेना में नौकरी करने लगे थे और अब कैप्टन होकर हिसार में पोस्टेड थे। उनके लिए जीवन साथी की तलाश हम कर रहे थे। पहले के समय में गाँव घर में यह काम नाऊ- बारी या गाँव जवार के पंडित आदि किया करते थे। वे अच्छी तरह जानते थे कि किस कुल में कौन सी कन्या “फिट” हो सकती थी। कुंडली मिलान करना सर्वप्रथम आवश्यक होता था। विश्वनाथपुर (सरया तिवारी) के अपने मूल गाँव से गोरखपुर शहर में आ चुके इस परिवार में विवाह के लिए कुंडली मिलाने का यह काम उन दिनों काशीवासी मेरे पितामह पंडित भानु प्रताप राम त्रिपाठी ही किया करते थे। कुंडली का सूक्ष्म निरीक्षण करके पहले वे स्वयं संतुष्ट हुआ करते

थे और फिर गोरखपुर में पंडित सुबंश झा से वे परामर्श लिया करते थे। हम सभी भाई बहनों की शादी में कुंडली का मिलान उन्होंने ही किया था। अब वे तो रहे नहीं। पिताजी को इस कुंडली मिलान में कोई विश्वास ही नहीं था। वे तो दान दहेज के भी विरुद्ध रहते थे। मतलब दिव्य के विवाह तय करने का सारा दारोमदार हम पति पत्नी पर ही था जो बहुत ही मुश्किल काम था। मुझे पितामह खूब खूब याद आ रहे थे क्योंकि दिव्य और यश दोनों की जन्म कुंडली उन्होंने ही बनवाई थी और जन्म के बाद जनेऊ और विवाह संस्कार अगर उनकी देखरेख में सम्पन्न होता तो मुझे खुशी होती।

हमने इस बारे में लोगों से कह रखा था लेकिन कोई विशेष परिणाम आता नहीं देख कर मैंने “टाइम्स ऑफ इंडिया” के मैट्रिमोनियल में विज्ञापन दे दिया। इसके बाद अनेक प्रस्ताव आने लगे। इतने पत्र और फोटो आने लगे कि हम “कन्फ्यूज” होने लगे। इन्हें में फैजाबाद से एक प्रस्ताव आया था जिसे हम लोगों ने प्रथम दृष्टया स्वीकार कर लिया। लड़की के पिता (स्व.) दिनेश शुक्ल उत्तर प्रदेश सरकार में बीडीओ थे। लड़की ने एम.ए. कर रखा था। कुंडली मिलान उन्होंने ही कराया। दान दहेज के लिए हमने उनसे यही कहा कि हम अपने पास से कुछ भी खर्च नहीं करेंगे और बाकी लड़के का जो शौक हो वह आप पूरी कर डालें। लड़के को स्कार्पियो बड़ी गाड़ी चाहिए थी जो उन दिनों लगभग 12 लाख में आ रही थी। शुक्ला जी ने राजी खुशी यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और फैजाबाद में 31 जनवरी 2007 को इंगेजमेंट और पहली जुलाई 2007 को लखनऊ में शादी निश्चित हुई। जब इस प्रस्ताव को फाइनल टच दिया गया तो सेना में ट्रेनिंग कर रहे छोटे बेटे यश आदित्य छुट्टियों में घर आए हुए थे और उनके ही हस्तक्षेप से यह विवाह प्रस्ताव स्वीकार करने की ना-नुकुर को विराम मिला था।

आज जब उन दिनों का लेखा जोखा आप तक पहुंचा रहा हूँ तो सच मानिए मुझे लगता है कि यह मेरे जीवन का अजीब दौर था। अदृश्य

विधाता अपनी अगली योजनाएं बना रहे थे और हम साधारण मनुष्य के रूप में अपनी आगामी योजनाओं पर काम करने में लगे थे। घर की पहली शादी हो रही थी और मेरी पत्नी पूरे उत्साह उमंग में थीं। एकल परिवार, घर के बड़े बुजुर्ग साथ नहीं और इतनी बड़ी जिम्मेदारी! लेकिन लखनऊ में जो साथ हैं, आसपास हैं (जैसे मेरी बड़ी बहन विजया उपाध्याय) उनके साथ भी तो पत्नी जी की ट्यूनिंग का गंभीर मसला जुड़ा हुआ था। उल्टे मेरा ससुराल पक्ष (मीना की बहन-बहनोई) हर मामले में हावी होता चला जा रहा था। अपनों से छूटने और गैरों से जुड़ने के इस मामले का अंजाम आगे चल कर मेरे निजी जीवन के लिए अच्छा नहीं हुआ। कैक्टस की तरह वह मेरे साथ आज भी जुड़ा हुआ है।

इस वर्ष की शुरुआत ही मानो सुख के दरवाजे से दुख के प्रवेश करने से हुई थी। पहला कारण। यश छुट्टियों पर इस लिए भेजे गए थे क्योंकि उनकी लेह की पोस्टिंग में अत्यधिक ठंडक के चलते उनकी त्वचा और शरीर के ऊतक लंबे समय तक ठंढे तापमान में रहने के कारण उनको शीतदंश (Frostbite) हो गया था। लखनऊ में मिलिट्री अस्पताल से वे दवाइयाँ ले रहे थे। यह एक गंभीर बीमारी थी और अगर उनकी जगह नहीं बदलती और उचित दवा नहीं होती तो पैर की उँगलियाँ काटने की नौबत तक आ सकती थी। दूसरा कारण। मेरा अस्थि रोग, हिप ज्वाइंट में इन्फेक्शन। 29 अक्टूबर 2004 को एम्स नई दिल्ली में डा.आर. मल्होत्रा द्वारा किये गए हिप रिप्लेसमेंट सर्जरी में अब अचानक इन्फेक्शन आ गया था। लखनऊ के चिकित्सकों ने कहीं बाहर जाकर फिर से सर्जरी का सुझाव दिया। मेरे सादू ओम प्रकाश जी के पुत्र इंजीनियर अनुराग उन दिनों चेन्नई में काम कर रहे थे। उन्होंने वहाँ के एक अस्पताल में मेरे ऑपरेशन की व्यवस्था कर दी। Revised S-Rom THR (Right) जटिल सर्जरी चेन्नई के MIOT अस्पताल में डॉ. पी. वी. के. मोहनदास ने 24 अप्रैल 2007

को सम्पन्न किया। परदेस में कोई अपना नहीं सिवाय सादू के लड़के के। कुछ दिन दिव्य छुट्टी लेकर साथ रहे तो कुछ दिन यश। ज्यादातर दिन तो पत्नी ही देखभाल के लिए साथ रहीं। मेरे इस ऑपरेशन में भी बहुत-बहुत खेला हुआ। पैसा तो लगा ही मेरे शरीर और मन के साथ डा. पी वी के मोहनदास ने घृणित बलात्कार तक कर डाला था। उसकी दुखद और शर्मनाक प्रसंग की चर्चा आगे, फिर कभी। चर्चा क्या मुझे जितने ऑपरेशनों और भिन्न भिन्न अस्पताल और डाक्टरों द्वारा किये गए शारीरिक चीड़ फाड़ से गुजरना पड़ा है, जीने की जद्दोजहज में तन, मन और धन की जो -जो दुर्गति हुई है उस पर तो पूरा उपन्यास लिखना चाहूँगा। अगर जीवित रहा तो अवश्य लिखूँगा क्योंकि धरती के भगवान कहे जाने वाले इन तथाकथित डाक्टरों के दानवी और मानवी चेहरों पर प्रकाश डाला जाना आवश्यक है।

अंततः 31 जनवरी को फैजाबाद में एन्गेजमेंट और पहली जुलाई 2007 को दिव्य के विवाह की तारीख तय हुई। विवाह की तैयारियों के लिए तय हुआ था कि छोटे बेटे यश छुट्टियाँ लेकर जून के पहले हफ्ते में आ जाएंगे। लेकिन यश को छुट्टियाँ नहीं मिल सकीं क्योंकि उनके सी. ओ. कर्नल संजीव शर्मा ने उन्हें सलमान खान अभिनीत एक फिल्म यूनिट की देखभाल का जिम्मा सौंप दिया था जो उन दिनों लेह में शूटिंग कर रही थी। अंततः वे जून अंतिम सप्ताह में लखनऊ आ सके।

निमंत्रण पत्र सभी को भेजे जा चुके थे। इंगेजमेंट में शुक्ला जी की आवभगत से मेरे नातेदार रिश्तेदार सभी प्रसन्न थे। पहली जुलाई को यश के नेतृत्व में बारात इंदिरा नगर के बंधन मैरेज हॉल पहुंची। रास्ते में इंद्रदेव की भी कृपा हुई। बरसात का मौसम चल रहा था इसलिए यह तो होना ही था। दूसरी जुलाई की सुबह दिव्य अपनी नई नवेली पत्नी अनामिका को लेकर विज्ञानपुरी आवास पर आए। अब रिसेप्शन की तैयारी होने लगी।

... (क्रमशः अगले अंक में)

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- न तर्क से न विचार से न प्रश्न से न किसी अन्य से अपना मार्ग खुद में खुद से विचार शून्य कर स्थिति में दिखायी देता है।
- आत्मा ज्योति रूप आध्यात्मिक विज्ञान है उसके द्वारा क्रिया शरीर का विकास भैतिक विज्ञान है दोनो मिलकर अपने एहसास से गंध तरंग छोड़कर प्रकृति का विस्तार करते है। मानवता की सोच बनाकर मानवता की गन्ध तरंग बनाकर मानवता का विस्तार कर न्याय प्रिय बने।
- गन्ध तरंग निर्माण के साथ-साथ अस्त्र का भी कार्य करती है जो अपने विरीत गुण के प्रदूषित गुण को मिटाकर न्याय स्थापना में सहयोग करती है।
- जैसा हम दूसरों से चाहते है वैसी सोच व्यवहार दूसरो के लिए बनाना मानवता है।
- जुड़ने वाली हर चीज व्यक्ति की बैषाखी होती है जिसके छुटने के साथ आदमी अपने पैरो पर खड़े होने में सक्षम होता है।
- जिस धन को लोगो ने धन समझ रखा है वह वास्तविक धन नहीं है इस धन से दिखवा खरीदा जा सकता है वास्तविकता नहीं वास्तविकता धन से वास्तविकता स्वयं जुड़ जाती है खरीदना नहीं पड़ता।
- दूसरे की नजर से जीने वाला हमेशा परेशान रहता है। अपनी नजर से जीना ही प्राकृतिक रूप से जीना है।
- सारे जीवों की प्रवृत्ति एक जैसा होती है मनुष्य को छोड़ के सभी जीव अपनी प्रवृत्ति के अनुसार आहार करते है उसी से उनके अन्दर रंग का निर्माण होता है और रंग से निकलने वाली गुण तरंग ही वायुमण्डल मे भाव बनकर क्रिया करती है।
- पूरी पृथ्वी एक लिफाफे जैसी है। इसमें विभिन्न गुण गन्ध और पदार्थ की अपरिपक्व अवस्था बन्द होती है जो परिपक्व होने पर जिस प्राकृतिक निर्माण के लिए निर्धारित होते है उसके लिए समयानुसार स्वतः खुल जाते है।
- जिस तरह वैद्य विभिन्न विपरीत गुणों वाले पदार्थ को मिलाकर रोग की औषधी तैयार करता है उसी तरह आत्म प्रकाश विरोधी गुणों से भी मिलान करके सही मार्ग का निर्माण करता है और आन्तरिक गन्दगी को बाहर निकालता है।
- विचार से भाव और भाव से एहसास पैदा होता है, अच्छा विचार अपने अच्छे एहसास के लिए बनाये, प्रकृति को लाभ स्वतः मिल जायेगा।

सूर्य सिद्धांत भाग - 1

सूर्य + जल = जीवन

जीवन जीवनी को पूरा करने का वाह्यस्वरूप है जो दिखाई देता है जिसकी ज्ञानेन्द्रियाँ जीवनी से जुड़ी होती है अपनी जीवनी को पूरा करने के लिए प्रकृति से जीव, पदार्थ विषय को जोड़ती है, जिससे उसकी जीवनी पूर्ण होती है, इसी प्रक्रिया में अनेको जीवनी गहरे भाव में बीज रूप में बन जाती है जो प्रकृति में उपरोक्त प्रक्रिया से गुजकर नया जीवन धारण करती है।



अशोक मानव

सूर्य और जल की मिलन की क्रिया से उष्मा का निर्माण होता है जिसमें एक विषय की जीवनी गन्ध अपने निर्माण के ब्रह्माण्डीय सहयोगी और निर्माण की पूर्णता के तापमान को बनाने के लिए विरोधी गन्ध को जोड़ती है जो प्रकाशीय रश्मी के घेरे में रहते हुए आवश्यकतानुसार तापमान बनाकर आत्मिक बीज को परिपक्व बनाता है इस प्रक्रिया के पूर्ण होने पर सूर्य की परमशीतल प्रकाश ज्योति बनकर आत्मिक बीज को अपने घेरे में तब तक के लिए कर लेती है जब तक जीवनी को पूर्ण नहीं कर देती है। इस जीवनी को पूरा करने के लिए सर्वोत्तम जमीनी जलवायु पर जीवन धारण कर लेता है। जीवन जीवनी को पूरा करने का वाह्यस्वरूप है जो जो दिखाई देता है जिसकी ज्ञानेन्द्रियाँ जीवनी से जुड़ी होती है, अपनी जीवनी को पूरा करने के लिए प्रकृति से जीव, पदार्थ विषय को जोड़ती है, जिससे उसकी जीवनी पूर्ण होती है, इसी प्रक्रिया में अनेको जीवनी

गहरे भाव में बीज रूप में बन जाती है जो प्रकृति में उपरोक्त प्रक्रिया से गुजकर नया जीवन धारण करती है। जीवन स्वरूप जीवनी के अनुसार विकास करता है, जिसमें वही गुण एहसास में अच्छा लगता है जो जीवनी को पूर्ण करने में सहयोग होता है अन्य जीव विषय वस्तु जो जीवनी को पूर्ण करने के विरोधी होते हैं वे एहसास में अच्छे नहीं लगते हैं जिससे व्यक्ति उसे न धारण करे। मानव के अतिरिक्त अन्य सभी जीव ऐसा ही करते हैं पर मानव उनसे अलग दूसरो से प्रभावित होकर ऐसा भी कुछ धारण कर लेता है उसकी जीवनी पूरा करने के विरोधी होता है, ऐसा होने पर उसका गुण अप्राकृतिक होता जाता है जिससे वह मानवीय गुण से परे हो जाता है। उसका स्वरूप मानव का रह जाता है पर विचार गुण दानव का हो जाता है। जबकि मानव के अतिरिक्त अन्य जीव जिस गुण के लिए जाना जाता है स्वरूप वैसा होने पर वही गुण उसके अन्दर मिलता है। पर मानव स्वरूप में मानव दिखता है पर गुण मानवता

जब भी प्रकृति में प्रदूषण बढ़ने लगता है तब प्रकृति उसी मृदा में जैविक संरचना कर देती है जिसमें जीव प्रदूषण को अपना आहार बनाकर मिटा देता है और अपनी मृदा को सिद्धांत कर आवागमन से मुक्त होकर एक गुणधारी स्तम्भ बन जाता है।

का उसमें नहीं पाया जाता है, जो अपने लालच को पूरा करने के लिए पैतरे बदलता रहता है। ऐसे मानव स्वरूप और अमानवीय व्यवहार में जीवन जीने के लिए सूर्य सिद्धान्त का प्रयोग अपनी जीवनी को पूर्ण कर आप परम सूर्य की गन्ध तरंग का निर्माण कर सूर्य में मिलकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है, फिर वह आवागमन से छुटकारा पाकर सूर्य के साथ जीव का निर्माण करने लगता है।

प्रथम सूर्य सिद्धान्त में सूर्य की अटलता को धारण करना चाहिए जिस प्रकार सूर्य अपने निश्चित गति में एक जगह स्थिर रहते हुए गतिमान होता है ठीक उसी प्रकार व्यक्ति को अपने सिद्धान्त की जीवनी गन्ध को पहचानकर अपने जीवन का लक्ष्य सूर्य बनाना चाहिए फिर उसे स्थिर कर शरीर को गतिमान करना चाहिए विचारो को नहीं। विचार तो सूर्य है जो एक बार बनाया जाता है बार-बार नहीं बदला जाता है। वही जीवन की जीवनी का लक्ष्य होता है। जिसे स्थिर रखकर ही हम अपने गुण का सूर्य बना पाते हैं और उससे निकलने वाला प्रकाश अपने गुण का फैलाव करता जाता है। जिस प्रकार सूर्य किसी गुण से प्रभावित न होकर सिर्फ प्रकाश का फैलाव करते हैं जिससे जीव का निर्माण होता है और प्रकृति में न्याय प्रणाली स्थापित

हो पाती है। ठीक उसी प्रकार व्यक्ति जब किसी जीव पदार्थ विषय या अन्य किसी से प्रभावित नहीं होता है तभी वह भी अपने गुणों की रश्मी बनाता है जो अपने गुण की जीवनी गन्ध बनकर प्रकृति में जीव निर्माण का सहयोगी बनकर प्रकृति में अनन्त समय तक क्रियाशील होकर अपने गुणों का आनन्द ले सकता है। सूर्य सिद्धान्त का यही योग गुणात्मक गुण की एक विद्या का अणु बना देता है जो अपने गुण की रश्मी की प्रकाशीय तरंग को छोड़ता रहता है, वह किसी ग्रह या अन्य रूप में कण बनकर विद्यमान हो जाता है, जो ब्रह्माण्डीय रचना का एक अंग बन जाता है और अपने गुण का नेतृत्व करने लगता है, ब्रह्माण्डीय मन्थन की जैविक संरचना के निर्माण में अपने गुणों की गन्ध रश्मी को जोड़कर जीव संरचना को पूरा करने में सहयोग करता है। यह क्रिया जीव सूर्य सिद्धान्त पर चलते हुए अपनी जीवनी को अमर कर सकता है। सूर्य सिद्धान्त का अग्रिम भाग आगे भी जारी रहेगा जिस पथ पर चलकर व्यक्ति सूर्यमय होकर सूर्य में मिल सकता है अथवा उसका सहयोगी बनकर कण रूप में स्थापित हो सकता है।

प्रश्न हमारे उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : ऋषि मुनि भगवान या साधु संत भी पैदा होते रहे हैं उनकी पूर्ण महत्ता को लोग बाद में ही जान पाते हैं पहले तो करीब रहने वाले भी नहीं जान पाते आखिर क्यों ?

उत्तर : इसका विज्ञान यह है कि जब तक किसी चीज का निर्माण हो रहा होता है तब तक वह दबाव में रखी जाती है जब उसका रोल खत्म हो जाता है उसका पूर्ण निर्माण हो जाता है तब वह दबाव हट जाता है, जैसे आलू है, उसके ऊपर जो छिलका लगा है वह दबाव है वह उसको दबा रहा है आगे नहीं बढ़ने दे रहा है उसकी ऊर्जा उसकी खुशबू को फैलने से रोक रहा है जब वह पूर्ण रूप से तैयार हो जाता है और पकाया जाता है, जैसे ही आलू का छिलका हटाया जाता है वैसे ही बस चढ़ना शुरू हो जाता है उसकी गंध प्रकृति में खिलना शुरू हो जाती है तभी तो लोग जान पाएंगे जब तक किसी चीज का निर्माण हो रहा होता है उसकी ऊर्जा बाहर ना फैल जाए जिसके कारण उसका निर्माण ना हो उसके लिए उसको एक पॉलिथीन में दबाकर रखा जाता है।

जैसे अपने शरीर में चमड़ा लगा हुआ है वह उसको यदि काट दिया जाए तो यहां बैक्टिरिया पैदा होने लगेंगे ऊर्जा स्टैंड हो जाएगी, शरीर की ऊर्जा अपने प्रवृत्ति विकास की गति के लिए गतिमान हो इसलिए यह छिलका लगा दिया गया है इस छिलका लगने का मतलब यह है कि व्यक्तित्व का विकास जो हो रहा है उसकी ऊर्जा रोकने वाला दबाव के कारण, यही चीज साधु महात्मा के साथ होती है। जब वह निर्माण करता है गंध बनाता है और खुशबूदार करता है तब तक कोई नहीं जान पा रहा, छिलके की तरह पॉलीथीन में बंद उसको कोई नहीं देख पा रहा है जो निर्माण उसे करना होता है। उसे पूर्ण कर लेता है तब उसे कोई नहीं रोक पाता और वह सपोर्ट कर जाता है फिर भी सकारात्मक सोच वाले उसको पहचान पाते हैं नकारात्मक सोच वाले कोई ना कोई कमी निकालते रहते हैं।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई.),

कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ० प्र०

ईमेल-info@parkritimail.com, editor.parkritimail@gmail.com

9807636072, 7376495194

गुरुर पराजित



गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'

बीकानेर



वर्षा ऋतु में एक भिक्षु अपनी मस्ती में जा रहा था। तभी एक आवाज आयी, देखा तो आवाज लगाने वाली एक वेश्या थी। उसने उसको निमन्त्रित करते हुये कहा, वर्षाकाल में मेरे घर रुक जाओ।

तब भिक्षु ने जबाब में कहा - 'रुकने में मुझे जरा भी अड़चन नहीं है, ... यह बात अलग! फिर भविष्यवाणी मुश्किल है।' लेकिन जिससे दीक्षा ली है, उस गुरु से जरा पूछ आऊं। मुझे पक्का भरोसा है वे मना नहीं करेंगे। लेकिन उपचारवश! सिर्फ औपचारिक है।

उसके जबाब ने वेश्या को आश्चर्यचकित कर दिया। फिर उसने मन में सोचा, कैसा भिक्षु है! इतनी जल्दी राजी हो गया?

भगवान बुद्ध के पास पहुँच उसने वेश्या से प्राप्त, "निमंत्रण वाली बात विस्तार से बता, वर्षाकाल में उसके घर रहने की आज्ञा चाही। और निवेदन कर कहा अब जैसी आपकी आज्ञा होगी, वैसा ही करूंगा।"

सारी बात सुन भगवान बुद्ध ने कहा, "तू जा सकता है। निमंत्रण को ठुकराना उचित नहीं।"

यह सुन भिक्षुओं में सनसनी फैल गई। दस हजार भिक्षु थे, सभी ईष्या से भर गए। कई को तो, लगा कि सौभाग्यशाली है। तो वेश्या ने निमंत्रण दिया वर्षाकाल का, और हद्द हो गई बुद्ध की भी कि उसे स्वीकार भी कर लिया

उपरोक्त घटना से यह तो स्पष्ट हो गया कि "जीवन का सही अर्थ, जब ही समझ में आये तभी वास्तविक जीवन। ठीक ही लिखा है - "ना पैसा लगता है! ना खर्चा लगता है!" "किसी को खुशी दीजिये हमें बहुत अच्छा लगता है!"

और आज्ञा भी दे दी। तभी एक भिक्षु ने खड़े होकर निवेदन किया कि "रुकें! इससे गलत नियम प्रचलित हो जाएगा। भिक्षुओं को वेश्याएं निमंत्रित करने लगे, और भिक्षु उनके घर रहने लगे, भ्रष्टाचार फैलेगा। यह नहीं होना चाहिए।"

इस पर भगवान बुद्ध ने कहा, "अगर तुझे निमंत्रण मिले, और तू ठहरे तो भ्रष्टाचार फैलेगा। तू वेश्या के घर ठहरने को कितना आतुर मालूम होता है! अगर तुझे निमंत्रण मिले और तू मुझे पूछने आएगा....? पहली तो बात तू पूछने आएगा ही नहीं, क्योंकि तू डरेगा। यह पूछने आया ही इसीलिए है कि उसे कोई भय नहीं है।"

इसके बाद वह भिक्षु चला गया। वह तीन महीने वेश्या के घर रहा। बड़ी-बड़ी कहानियां चलीं, बड़ी खबरें आईं, अफवाहें आईं कि भ्रष्ट हो गया। वह तो बरबाद हो गया, बैठकर

संगीत सुनता है। पता नहीं खाने-पीने का भी नियम रखा है कि नहीं! दूसरे भिक्षु भीतर तो जा नहीं सकते थे, लेकिन आसपास चक्कर जरूर लगाते रहते थे। और कई तरह की खबरें लाते थे। यह सब भगवान बुद्ध सुनते रहे और उन्होंने कोई वक्तव्य दिया ही नहीं।

तीन महीने बाद जब भिक्षु आया, तो वह वेश्या उसके उसके पीछे ही वहाँ पहुँच गयी।

उस वेश्या ने कहा- "मेरे धन्यभाग कि आपने इस भिक्षु को मेरे घर रुकने की आज्ञा दी। मैंने सब तरह की कोशिश की इसे भ्रष्ट करने की, क्योंकि वह मेरा अहंकार था। जब वेश्या भ्रष्ट कर पाती है, तब जीत जाती है। वह मेरा अहंकार था कि यह भिक्षु भ्रष्ट हो जाये। लेकिन इसके सामने मैं हार गई। मेरा सौंदर्य व्यर्थ, मेरा शरीर व्यर्थ, मेरा संगीत व्यर्थ, मेरा नृत्य, इसे कुछ भी न लुभा पाया और तीन महीने में, मैं इसके लोभ में पड़ गई। मेरे मन में यह सवाल उठने लगा, क्या है इसके पास? कौन-सी संपदा है, जिसके कारण मैं इसे कुछ नहीं मालूम पड़ती हूँ? अब मैं भी उसी की खोज करना चाहती हूँ। जब तक वह संपदा मुझे न मिल जाए, तब तक मैं सब कुछ करने को राजी हूँ, सब छोड़ने को राजी हूँ। अब जीने में कोई अर्थ नहीं, जब तक मैं इस अवस्था को न पा लूँ, जिसमें यह भिक्षु है।"

इस तरह वह वेश्या उसी समय से भिक्षुणी हो गयी।

उपरोक्त घटना से यह तो स्पष्ट हो गया कि "जीवन का सही अर्थ, जब ही समझ में आये तभी वास्तविक जीवन।" इसी कारण किसी ने ठीक ही लिखा है -

"ना पैसा लगता है! ना खर्चा लगता है!"

"किसी को खुशी दीजिये हमें बहुत अच्छा लगता है!"

परिवार से बड़ा कोई धन नहीं



सुनील कुमार माथुर

जोधपुर, राजस्थान

आज के वक्त में इंसान मशीनरी जीवन व्यतीत कर रहा है। वह केवल अपने ही हाल में जी रहा है। उसे किसी की उन्नति, प्रगति और खुशी से कोई लेना देना नहीं है। वह या तो अपने काम में व्यस्त है या फिर मोबाइल में व्यस्त है नतीजन वह किसी से भी कोई बातचीत नहीं कर रहा और भीतर ही भीतर तनावपूर्ण स्थिति में जी रहा है। जहां तनाव कुछ ज्यादा हुआ नहीं कि आत्म हत्या जैसे कदम उठा कर अपने को मौत के गले लगा रहा है, जो कायरता पूर्ण कृत्य के सिवाय कुछ भी नहीं है।

हमें जीवन में बहुत कुछ हासिल करना है इसके लिए सभी के साथ स्नेह पूर्वक रहते हुए आगे बढ़ना है। कोई काम कठिन नहीं होता है। बस मन में काम करने का जज्बा होना चाहिए। याद रखिए जो दूसरों की खुशी को देखकर आनंदित होता है वही स्वस्थ मन की पहचान है। धनवान वह नहीं होता है जिसके बैंक खाते में लाखों - करोड़ों रुपए जमा हो अपितु धनवान व्यक्ति वो होता है जो अपने परिवार को पूरा समय देता हो। चूंकि परिवार से बड़ा कोई धन नहीं है।

मेरे बिना जी नहीं पाओगे

लोगों में न जाने इतना घमंड व अंहकार कहां से आ गया है कि वह अपने सामने किसी को भी कुछ भी नहीं समझता है। वह अंहकार में अपने आप को शहशाह समझता है। ये लोग



यह नहीं जानते कि अंहकार इंसान को भीतर ही भीतर से खोखला कर उसे कमजोर कर देता है। लोग अंहकार में यहां तक कह देते हैं कि मेरे बिना जी नहीं पाओगे और मेरे बिना अमुक कार्य करके दिखा देना। अरे मूर्ख इंसान मेरे बिना जी नहीं पाओगे यह बोलने का हक सिर्फ पैसे को है। जिसके पास धन दौलत है वे ऐसी थोथी बातों से नहीं डरते हैं। अपना किरदार इतना शांत रखो कि तुम्हारा शांत रहना ही लोगों के जीवन के घाव भर दें।

जिन्दगी कोई आसान नहीं है

प्रायः आप किसी से पूछिए कि कैसे हो, तो तपाक से जवाब मिलता है कि मजे में हैं, मौज कर रहे हैं, टी वी देख रहे हैं, अखबार पढ़ रहे हैं। आदि आदि। लेकिन जिंदगी कभी भी किसी

की आसान नहीं होती है उसे आसान बनाना पड़ता है। कुछ बातों को नजर अंदाज किया जाता है, कुछ बातों को बर्दाश्त करना पड़ता है, कुछ मेहनत करनी पड़ती है तो कुछ जगह सही समय पर सही निर्णय लेकर जिंदगी को बेहतर बनाना पड़ता।

कहने का तात्पर्य यह है कि आदर्श जीवन व्यतीत करने के लिए हमें सहनशीलता और त्याग की भावना रखनी पड़ती है तब कहीं जाकर जीवन आसान सा लगता है लेकिन इतना करने के बावजूद हर वक्त यहीं चिंता रहती है कि कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाये। जिन्दगी में जो जितना हंसता मुस्कुराता है और अपने काम से काम रखता है और किसी के काम में एवं परिवार में दखल अंदाजी नहीं

करता है, उसी की जिंदगी वर्तमान समय में आसान है।

यदि सब कुछ खोकर भी आप में कुछ करने की हिम्मत है तो समझिए आपने कुछ भी नहीं खोया है। जीवन में दोस्ती, रिश्ते और प्रेम उसी के साथ रखना जो तुम्हारी हंसी के पीछे का दर्द, गुस्से के पीछे का प्यार व मौन के पीछे की वजह समझ सकें।

हमारा लाभ

इस नश्वर संसार में आप अपना घर फूंक कर समाज की कितनी भी सेवा कर दीजिए लेकिन आपको शाबाशी नहीं मिलेगी। तीन चौथाई लोग कहेंगे कि इसका इसमें कोई न कोई स्वार्थ रहा होगा। कोई कहेगा कि इसे ऐसा करने के लिए किसने पीले चावल दिए। एक चौथाई लोग मौन रहेंगे। वे कभी भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करेंगे। बस मूक दर्शक बने देखते रहेंगे। किसी जरूरतमंद की समय रहते निस्वार्थ भाव से सेवा करना, परोपकार के कार्य करना। ऐसे नेक कार्य करने की इच्छा मन में स्वतः जागृत होनी चाहिए। किसी के कहने का इंतजार नहीं होना चाहिए। बस आप अपना नेक कार्य करते रहिए।

कोई सराहना करें या निंदा। लाभ हमारा ही होगा। चूंकि प्रशंसा प्रेरणा देती है व निंदा समाधान करने का अवसर। याद रखिए दूसरों का अहसान कितना भी छोटा हो उसे कभी भी नहीं भूलना चाहिए और आपका अहसान कितना भी बड़ा क्यों न हो कभी भी जताना नहीं चाहिए।

अज्ञानता और भय

आज देश की अधिकांश जनता शिक्षित है लेकिन फिर भी भयभीत हैं। कोई अज्ञानता के कारण तो कोई गरीबी के कारण। कोई देश की दिनों दिन बिगड़ती कानून व्यवस्था से भयभीत हैं तो कोई अपनी होशियारी के कारण। कारण कोई सा भी हो लेकिन कोई बताता नहीं है। वह अंदर ही अंदर भयभीत रहता है। जब तक भय का कारण नहीं बताया जाता तब तक समाधान खोज पाना असम्भव है। याद रखिए विवेक

अज्ञान को नष्ट करता है और जानकारी भय को समाप्त करती है। इसलिए इस मोबाइल युग में अपने आपको हर वक्त अपडेट करते रहिए। अगर किसी प्रकार की समस्या या भय है तो अपने परिजनों व दोस्तों को समय रहते जरूर बताइए ताकि आपकी समस्या या भय को दूर किया जा सके।

आंखों में चमक

इंसान की कद्र उसके जीते जी कीजिए उसके चले जाने के बाद उसकी कद्र करने से कोई लाभ नहीं है जैसे दीपक जल रहा हो तभी तक उसमें घी डालकर उसकी लौ की लम्बे समय तक बनाए रखा जा सकता है। लौ के बुझ जाने पर दीपक में घी डालना केवल मूर्खता के सिवाय कुछ भी नहीं है। अतः इंसान की कद्र कीजिए। उसके अनुभवों का लाभ उठाइए। हम किसी पर गुस्सा होकर, गाली गलोज करके या ऊंची आवाज में बात कर उसके आदर्श संस्कारों को ग्रहण नहीं कर सकते। प्यार की भाषा ही एक ऐसी भाषा है जो इंसान को इंसान से जोड़ कर एक करती है।

कहते हैं कि दिल में नेकी हो तो आंखों में चमक होती है। यह बात सोलह आना सत्य है। हमें हमेशा नेकी के मार्ग पर चलते रहना चाहिए। नेकी दिल से होती है इसलिए नेकी करने वाला ही जानता है कि नेकी के मार्ग पर चलने से इंसान को कैसा अनुभव होता है। कुछ लोग व्यक्ति का चेहरा पढ़ लेते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि नेकी करने वाले के चेहरे पर कुछ लिखा हुआ होता है। ऐसा नहीं है। इसका अर्थ है कि नेकी अर्थात् भलाई करने वालों की आंखों में खुशी की चमक होती है। चेहरे पर मधु मुस्कान होती है जिसे देखकर धार्मिक प्रवृत्ति के लोग समझ जाते हैं कि यह बंधु

सेवाभावी है। परोपकारी है। दीन-दुखियों की पीड़ा को महसूस कर मदद कर सकता है। अतः आप भी सेवा कार्य कर पुण्य का लाभ उठाएं।

आजाद रहिए

हमें भारतीय संविधान में विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी गई है। अतः उठाइए अपनी कलम और प्रेरणादायक, मार्ग दर्शन योग्य कहानी, कविताएं, आलेख व व्यंग्य लिखते रहिए। जब श्रेष्ठ विचारों को व्यक्त करने की आजादी मिली हुई है तो फिर क्यों दकियानूसी सोच कर रहे हो। आप विचारों से आजाद रहिए लेकिन संस्कारों से बंधे रहिए। हमारे विचार और संस्कार ही तो हमारी धरोहर है। अतः आदर्श संस्कारों व विचारों को बांटते रहिए। आपका जीवन स्वतः ही मंगलमय हो जायेगा।

जिम्मेदारियां

स्कूली बच्चों को देखकर ऐसा लगता है कि उन पर कितनी किताबों का बोझ लाद दिया है। बच्चों अपना स्कूल का बैग भी खुद पीठ पर नहीं लाद सकता। अगर लाद दिया तो कम आयु में ही उनकी कमर झुक गई है। कंधे पर बैग हमारे भी हुआ करता था लेकिन पढ़ाई के नाम पर इतना दिखावा नहीं था जितना आज की इंग्लिश मीडियम स्कूलें कर रही हैं कंधे पर बैग हमारे ऊपर बचपन की तरह आज भी है। बस अंतर इतना सा है कि पहले उसमें विषय वार किताबें और कापियां हुआ करती थी लेकिन आज जिम्मेदारियां हैं।

तारीफ

क्या जमाना आया है। लोग बात बात में झूठ बोलते हैं। उनके झूठ को देखकर ऐसा लगता है मानों उन्होंने सच न बोलने की कसम खा रखी है। मजे की बात तो यह है कि वे इस तरह से झूठ बोलते हैं कि हर कोई उनकी बात को सोलह आना सच समझ बैठते हैं। लेकिन हकीकत में देखे तो उनकी बात में लेशमात्र भी सच्चाई नजर नहीं आती है। वर्तमान समय को देखकर ऐसा लगता है कि आप जितना आसानी से झूठ बोल देते हैं उतनी ही अधिक

आपकी लोग समाज में तारीफ, प्रशंसा और सराहना करेंगे।

हां इसका अर्थ यह नहीं है कि सच्चाई झूठ के सामने पराजित हो जाती है। आखिर जीत सच्चाई की ही होती है और सत्य सदा सत्य ही रहता है। उसे किसी भी कीमत पर बदला नहीं जा सकता है।

दुःखी इंसान

परमात्मा ने इंसान को सोचने-समझने की शक्ति दी है। तर्क वितर्क करने की शक्ति दी है। इसके बावजूद भी वह हर समय दुःखी ही नजर आता है। जब देखें तब किसी न किसी बात को लेकर वह दुःखी ही नजर आता है। कई बार तो ऐसा लगता है कि दुनियां की सारी चिंता का इसने ही ठेका ले रखा है। इंसान अपना खान-पान, बंगला, वाहन, कपड़े, जूते, पड़ोसी, मित्र, रिश्तेदार, शौक, सभी बदल सकता है लेकिन वह अपना स्वभाव नहीं बदलता है। यहीं वजह है कि वह हर समय दुःखी रहता है। जब वह दूसरों को अपना स्वभाव बदलने की समय समय पर सलाह देता है तो अपना स्वभाव बदलने से क्यों कतराता है अरे, हंसते मुस्कुराते हुए जीवन व्यतीत कीजिए और हर एक पल का आनंद उठाते हुए आगे बढ़ते रहिए। आपकी मुस्कान ही आपका असली जीवन है। अतः दुःखी न रहें। सदैव हंसते-हंसते प्रेम और स्नेह के साथ रहें।

शब्दों का मीठापन

कहते हैं कि जिस प्रकार मिट्टी का गीलापन पेड़ों की जड़ों को मजबूती से पकड़े हुए रहती है, ठीक उसी प्रकार शब्दों का मीठापन रिश्तों की डोर को मजबूती से पकड़े रहता है। इसलिए जब भी किसी से बातचीत करें तब प्रेम और स्नेह के साथ बातचीत करें। बातचीत के दौरान चेहरे पर क्रोध व जबरदस्ती का भाव दिखाई नहीं देना चाहिए। कड़वे बोल रिश्ते में दूरियां लाते हैं वहीं दूसरी ओर मीठे बोल संबंधों को मजबूत और प्रगाढ़ बनाते हैं। हमारा आत्मविश्वास और हमारा आदर्श व्यवहार ही तो हमारी असली पहचान है। वरना इस

मतलबी दुनियां में किसे फुर्सत है जो हमें इतना प्यार व स्नेह दें।

बी पाज़िटिव

व्यक्ति की सोच हमेशा सकारात्मक होनी चाहिए ताकि मन में सदैव उत्तम विचारों का आगमन बना रहें और हमें नई ऊर्जा और शक्ति प्राप्त होती रहें। सकारात्मक सोच ही हमारी प्रगतिशीलता की निशानी है। अतः हमारे शरीर के खून का ग्रुप कोई सा भी हो, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता है लेकिन दिल और दिमाग दोनों बी पाज़िटिव होने चाहिए।

व्यक्ति को हर क्षण कुछ न कुछ नया करते रहना चाहिए। सीखने-सिखाने की कोई उम्र नहीं होती है। बस आपकी सीखने सिखाने की दृढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए। बचपन से ही हम यह सिखते आये हैं कि मेरे लिए मेरा काम ही मेरी पूजा है व मेरा कार्य स्थल ही मेरा मंदिर है। इसलिए हमें अपना काम सही समय पर पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ सम्पन्न करना चाहिए। कार्य के प्रति लापरवाही कोई भी बर्दाश्त नहीं कर सकता है।

प्यार का रिश्ता

प्यार का रिश्ता सबसे बड़ा व महत्वपूर्ण रिश्ता होता है। चूंकि इसमें लोक दिखावा नहीं होता है अपितु सच्चाई होती है। रिश्ते प्यार से ही बनते हैं लेकिन वर्तमान समय में इसमें भी मिलावट दिखाई देती है। सच्चाई कम व धोखाधड़ी अधिक हो रहीं हैं। प्यार का अर्थ ही ईमानदारी, सच्चाई और ममता है। जो प्यार के सागर में गोते लगाते हैं वे समुद्र में भी आसानी से गोते लगा लेते हैं। प्यार का अर्थ जब जीव जन्तु भी जानते हैं फिर हम तो इंसान हैं। इसलिए प्यार से रहिए और खुशहाल जीवन व्यतीत कीजिए।

मन चंगा तो कठौती में गंगा

व्यक्ति का मन गंगा की तरह पवित्र होना चाहिए। मन में किसी भी प्रकार का छल कपट, धोखाधड़ी की भावना, कटुता, राग ध्वेष नहीं होना चाहिए। अगर मन में उपरोक्त प्रकार की गंदगी भरी पड़ी हुई है तो उसका मंदिर जाकर

पूजा अर्चना करना, जल चढ़ाना, धर्म स्थलों पर जाना सब व्यर्थ हैं। ईश्वर उन्हीं की प्रार्थना स्वीकार करते हैं जिनका मन गंगा की तरह पवित्र होता है।

कहते हैं कि रैदास जी जूते ठीक करने का काम करते थे और जाति से मोची थे। लेकिन गंगा के बड़े भक्त थे। गरीबी के कारण वे कहीं आते जाते नहीं थे। फिर भी अपनी कमाई में से कुछ पैसा निस्वार्थ भाव से सेवा के कार्यों में नियमित रूप से लगाते थे। वे अपने नित्य कर्म के साथ ही साथ हर वक्त गंगा मैया का स्मरण करते रहते थे।

एक दिन गंगा स्नान के लिए जाते समय दो राहगीर रैदास के पास अपना जूता ठीक कराने के लिए रुके। जब रैदास जी को पता चला कि ये राहगीर गंगा स्नान को जा रहे हैं तो रैदास जी ने उन राहगीरों को कुछ पैसे देते हुए कहा कि आप लोग गंगा स्नान को जा ही रहे हो तो मेरी ओर से भी ये कुछ पैसे गंगा मैया को चढ़ा देना। राहगीरों ने रैदास जी से पैसे लिए और जूते ठीक करा कर गंगा स्नान को चले गए।

गंगा स्नान करने के बाद उन्होंने अपनी ओर से तो गंगा मैया को पैसे चढ़ा दिए लेकिन रैदास जी ने जो पैसे दिए थे उन्हें अपने पास ही रख लिए। जब राहगीर वहां से जाने लगे तभी गंगा मैया ने राहगीरों को आवाज लगाई कि रैदास जी ने जो पैसे दिए वो कहां हैं। अब राहगीरों के हाथ पांव फूल गए उन्होंने तत्काल अपनी भूल स्वीकार की और वो पैसे गंगा मैया को चढ़ा दिए। गंगा मैया ने प्रसन्न होकर उन्हें एक सोने का कंगन दिया और कहा कि यह कंगन मेरी ओर से रैदास को दे देना।

सोने का कंगन पाकर उन राहगीरों की नियत बिगड़ गई और उन्होंने वह कंगन सुनार को बेच दिया। सुनार ने वह कंगन राजा को बेच दिया। राजा ने वह कंगन रानी को जाकर दे दिया। एक कंगन को देखकर रानी ने कहा कि एक कंचन किस काम का। मुझे तो ऐसा ही दूसरा भी कंगन चाहिए। राजा ने सुनार को बुलाया। सुनार ने राहगीरों को बुलाया। तब

राहगीरों ने सारी बात राजा को बताई।

राजा तत्काल सुनार, राहगीरों व अपने सिपाहियों के साथ रैदास जी के पास पहुंचे। जब रैदास जी ने यह मामला सुना तो गंगा मैया से मन ही मन प्रार्थना की कि हे गंगा मैया ! आपने मुझे कैसे धर्म संकट में डाल दिया। तभी गंगा मैया ने रैदास जी को दर्शन दिए और कहा कि तुम्हारी भक्ति से मैं बहुत खुश हूँ। आप अपने इस पानी के पात्र में (जिसमें मोची चमड़ा भिगोते हैं) हाथ डाल कर एक बार गंगा मैया की जय हो बोल दीजिए। तत्काल दूसरे हाथ का भी कंगन प्रकट हो जायेगा।

बस रैदास जी ने राजा, सुनार, राहगीरों व सिपाहियों के सामने ही गंगा मैया को निस्वार्थ भाव से याद किया और पानी के उस पात्र में कंगन प्रकट हो गया। यह देखकर वे सभी दंग रह गए। रैदास जी की गंगा के प्रति सच्ची भक्ति का ही यह परिणाम था। तभी से यह कहावत प्रचलित हुई कि मन चंगा तो कठौती में गंगा।

कहने का मतलब यह है कि आप जो भी कार्य करें वह निस्वार्थ भाव से करें और पवित्र मन के साथ कीजिए। आपके हर कार्य हर समय सफल होंगे। अतः मन को साफ रखें।

जीवन में संयम को अंगीकार करें

आज की दुनियां चंट, चतुर व चालाक हैं जिनसे प्रेम पूर्वक शांति से वार्ता करके ही इन्हें जीता जा सकता है। संयम, धैर्य, सहनशीलता जैसे मानवीय गुणों के जरिए ही हम मन और मस्तिष्क को काबू में लाकर इनका हृदय परिवर्तन कर सकते हैं। प्रेम से ही हम अनैतिक कृत्य करने वालों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ते हुए सही मार्ग पर ला सकते हैं।

अणुव्रत आंदोलन नैतिक मूल्यों पर सर्वाधिक जोर देता है जिसका मूल उद्देश्य है कि जहां नैतिकता, ईमानदारी, देशप्रेम, कार्य के प्रति समर्पण व निष्ठा हो, वहीं अपार खुशियां नजर आती हैं। आज का युवा ऐसे चौराहे पर खड़ा है जहां उसे सही दशा व दिशा दिखाने वाला कोई नहीं है। अणुव्रत आंदोलन आज की युवाशक्ति को नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाते

हुए उन्हें नशे से दूर रहने, मांस मदिरा का सेवन न करने, पारिवारिक जीवन में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का अभ्यास करने, संयम, सादगी, श्रम, स्वालम्बन व अहिंसक समाज की संरचना पर लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ने का आव्हान करता है। अणुव्रत विश्व कल्याण की बात करता है यह तभी संभव है जब हम अपने जीवन में संयम को अंगीकार करें।

अणुव्रत हमें सदैव बेहतर जीवन व्यतीत करने का अधिकार देता है। अतः व्यक्ति को अपनी वाणी पर नियंत्रण रखते हुए कभी भी बेहूदी व गंदी बातें नहीं करनी चाहिए। कहते हैं कि जैसा खाओ अन्न, वैसा होता है मन। जैसा पीओगे पानी वैसी होगी वाणी। अतः वाणी पर कंट्रोल करें और जब जरूरत हो उतना ही बोलें। अनावश्यक बोल बोलकर कभी भी बुरे न बनें। यह जीवन तो एक अनमोल रत्न के समान है।

हमारी वाणी ही एक ऐसा माध्यम है जो अच्छा बोलने पर जीवन को स्वर्ग मय बना देती है व बुरा बोलने पर जीवन नर्क मय बन जाता है। प्रातः जब पुष्प खिलता है तो उसे स्वयं पता नहीं होता है कि वह माला बनकर किस प्रभु के, नेता व अतिथि के गले में हार स्वरूप पड़ेगी या फिर किसी मृतक की अर्थी पर चढ़ाई जायेगी।

ठीक उसी प्रकार यह वाणी ही वह माध्यम है जो हमारे रिश्ते को बिगाड़ भी सकती है और बिगड़े हुए रिश्तों को सुधार भी सकती है। इसलिए वाणी पर नियंत्रण रखें और सोच समझ कर ही बोलें वे लोग खुशनसीब है जो हम से दूर होने के बावजूद भी लोग उन्हें याद करते हैं।

मन एक मन्दिर

अगर आपका मन साफ है। उसमें किसी प्रकार का छल कपट नहीं है तो फिर मन ही मन्दिर है। आपको किसी धार्मिक स्थल पर जाने की जरूरत नहीं है। जब मन साफ होगा, तभी तो मन में उत्तम क्वालिटी के विचारों का आगमन होगा। जहां मन में बुराइयों का अंबार लगा हो भला वह मन कैसे एक मन्दिर बन सकता है।

उसे तो कूड़ादान ही कहा जा सकता है।

जिसका मन पवित्र होता है वहीं व्यक्ति परोपकारी, सेवाभावी, करुणा मय व धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति कहलाता है। अतः व्यक्ति को अपने जीवन में कभी भी अहंकार और घमंड नहीं करना चाहिए। यह इंसान का सबसे बड़ा शत्रु है। अतः इससे बच कर रहें। व्यक्ति को सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। आपका व्यवहार ही आपकी पहचान है। कहते हैं कि मन गंगा की तरह पवित्र होना चाहिए। मगर हम देख रहे हैं कि लोग पवित्र नदियों, जलाशयों, तालाबों में स्नान करने के बावजूद भी अपने व्यवहार में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं ला रहे हैं तो फिर ऐसे स्नान का क्या औचित्य है।

जब हमें यह मानव जीवन मिला है तो फिर इसे सेवा के काम में लगाइये और निस्वार्थ भाव से जरूरतमंदों की सेवा करें। अगर किसी की निस्वार्थ भाव से सेवा करने से उसका काम आसान हो जाता है या वह अपने ध्येय या उद्देश्य में सफल हो जाता है तो यह हमारे लिए गर्व एवं गौरव की बात है। बस हमारी सोच सकारात्मक होनी चाहिए तभी हम किसी की सेवा कर पायेंगे अन्यथा यह जीवन यूं ही तेरी मेरी करते निकल जायेगी और हम कुछ भी हासिल नहीं कर पायेंगे।

इंसान की कद्र कीजिए

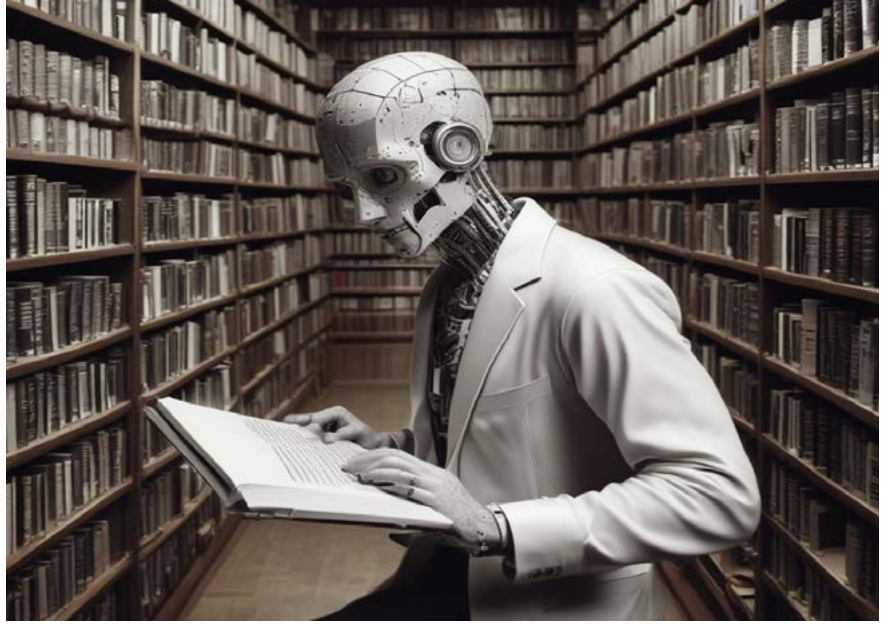
इंसान की कद्र उसके जीते जी कीजिए उसके चले जाने के बाद ऊसकी कद्र करने से कोई लाभ नहीं है जैसे दीपक जल रहा हो तभी तक उसमें घी डालकर उसकी लौ की लम्बे समय तक बनाए रखा जा सकता है। लौ के बुझ जाने पर दीपक में घी डालना केवल मूर्खता के सिवाय कुछ भी नहीं है। अतः इंसान की कद्र कीजिए। उसके अनुभवों का लाभ उठाइए। हम किसी पर गुस्सा होकर, गाली गलोज करके या ऊंची आवाज में बात कर उसके आदर्श संस्कारों को ग्रहण नहीं कर सकते। प्यार की भाषा ही एक ऐसी भाषा है जो इंसान को इंसान से जोड़ कर एक करती है।

ए आई से पुस्तकालय की जिज्ञासा खत्म



विजय गर्ग

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट
कौर चंद एमएचआर, मलोट, पंजाब



सदियों से, दुनिया भर में हमारे पुस्तकालय शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के साथ-साथ हमारी संस्कृति और इतिहास को भी संरक्षित कर रहे हैं। पुस्तकों, शोध पत्रों और पत्रिकाओं के पुस्तकालय संसाधन बिना किसी भय या पक्षपात के सभी को समान जानकारी प्रदान करते हैं। पुराने समय के कई साहित्यिक दिग्गजों, वैज्ञानिकों और विद्वानों को पुस्तकालयों में नियमित रूप से जाने की आदत से लाभ मिला है, जहां उन्हें पुस्तकों के प्राचीन खजाने के साथ-साथ हर विषय पर समकालीन पुस्तकों का भंडार भी मिलता है।

जिन लोगों के पास पुस्तकें खरीदने के लिए वित्तीय साधन नहीं होते, वे नई पुस्तकें पढ़ने के लिए हमेशा सार्वजनिक पुस्तकालयों पर निर्भर रहते हैं। इस सूचना प्रौद्योगिकी युग में, पुस्तकालयों ने पुस्तकों और अन्य संसाधनों को डिजिटल डेटाबेस में परिवर्तित करना शुरू कर दिया है। कई विकसित देशों में पुस्तकालय भी सर्वोत्तम सामुदायिक केन्द्रों में से एक साबित हुए हैं, जहां लोग सामुदायिक आयोजनों, कार्यशालाओं और कार्यक्रमों के लिए एक साथ आते हैं। बेहतर नागरिक भागीदारी और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकालय ऐसी बैठकों में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके बावजूद,

विकासशील देशों ने सामाजिक विकास को बढ़ाने के लिए पुस्तकालय संस्थाओं का अभी तक पर्याप्त लाभ नहीं उठाया है।

हमारे पास सार्वजनिक पुस्तकालयों की संख्या भले ही बड़ी हो, लेकिन दुख की बात है कि भारत में हम पुस्तकालय संचालन के मामले में अंतर्राष्ट्रीय मानकों से कई गुना पीछे हैं। वे पाठक-अनुकूल नहीं हैं। पुस्तकालयों के प्रति सरकारों और विश्वविद्यालयों की उदासीनता ने हमारे देश में अध्ययन और बौद्धिक अनुसंधान के लिए पुस्तकालय संसाधनों की उपयोगिता को बेहद कम कर दिया है। पुस्तकों के माध्यम से इन ढहती हुई शिक्षण संस्थाओं को बचाने के लिए कोई गंभीर प्रयास नहीं किए गए हैं।

केवल हमारे छात्र ही नहीं, बल्कि शिक्षक भी हर क्षेत्र में इंटरनेट पर उपलब्ध अप्रमाणिक और अवैध सूचनाओं के हमले का शिकार हो रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने पुस्तकालय में पुस्तकों से सीखने की हमारी जिज्ञासा को बुरी तरह प्रभावित किया है। हमारे पुस्तकालयों में हमें एक ही स्थान और समय पर एक ही विषय पर अनेक पुस्तकें, पत्रिकाएं, शोध पत्र, संदर्भ

पुस्तकें मिल जाती हैं। सामान्य पाठक और शोधकर्ता इंटरनेट पर वास्तविक जानकारी से अनभिज्ञ रहते हैं, जबकि पुस्तकालय में उन्हें अध्ययन के विषय पर विविध जानकारी मिल सकती है।

हमारे शिक्षक और छात्र दोनों ने अपनी मौलिक सोच खो दी है, जो एक परिपक्व समाज के लिए हमारे युवा मस्तिष्क के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। टी.वी. और बेलगाम पक्षपातपूर्ण सोशल मीडिया ने हमारी वह शांति छीन ली है जो हमें पहले अखबार या लाइब्रेरी में किताब पढ़कर मिलती थी। यहां, भले ही हम भारत को पुनः महान बनाने की बात करते हैं, लेकिन हम शायद ही कभी महसूस करते हैं कि भारत में पुस्तकालय और पुस्तक पढ़ने की संस्कृति तेजी से खत्म हो रही है। हमें अपनी पुस्तकालय प्रणाली को सुचारू बनाने तथा एक बार फिर से पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

यहां तक कि स्कूलों और कॉलेजों में किताबों की अलमारियाँ भी बंद रहती हैं। चाहे

विश्वविद्यालय परिसर हों, कॉलेज और स्कूल हों या नगरपालिका या पंचायत पुस्तकालय हों, सभी में मूल्यवान पुस्तकें हैं। पुस्तकालयों को केन्द्रीय एवं राज्य वित्त पोषण प्राप्त होता है। दुर्भाग्यवश, पुस्तकालय संसाधनों का उपयोग बहुत कम है। किताबें हमेशा उन आत्माओं से बातचीत करने के लिए तरसती हैं जो उन्हें पढ़ते हैं। आइये उन्हें जगाएं। कुछ सुझाए गए हस्तक्षेप जो हमारे पुस्तकालयों और पठन संस्कृति को सुरक्षित रखने में मदद कर सकते हैं, उनमें शामिल हैं:

पहला कारण यह है कि कई पुस्तकालयों में नियमित रूप से प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्ष नहीं होते। स्कूलों और कॉलेजों में पुस्तकालय कर्मचारियों की संख्या भी बहुत कम है। उनका वेतन बहुत कम है और शायद ही कोई ऐसा पुस्तकालयाध्यक्ष हो जो हमारे युवाओं में पढ़ने को प्रोत्साहित करने के लिए कोई सकारात्मक हस्तक्षेप करता हो। सभी कॉलेजों में पुस्तकालय विज्ञान को एक विषय के रूप में भी शामिल किया जाना चाहिए ताकि हम पुस्तकालयों के लिए प्रशिक्षित कार्यबल का आधार तैयार कर सकें।

दूसरा, पुस्तकालयों के खुलने और बंद होने का समय अब तक कार्यालय खोलने के लिए नौकरशाही दिशानिर्देशों के अनुरूप रहा है। नगर निगम के पुस्तकालय सुबह 9 बजे खुलते हैं और शाम 4 से 5 बजे के बीच बंद हो जाते हैं। पुस्तकालय सप्ताहांत पर बंद रहते हैं, जिनमें शनिवार, रविवार और अन्य अवकाश शामिल हैं। सप्ताहांत और छुट्टियों के दिनों में वाचनालय में समाचार पत्र की सुविधा भी उपलब्ध नहीं कराई जाती है। आमतौर पर हमारे स्कूल और कॉलेज के पुस्तकालय भी इसी पैटर्न का पालन करते हैं। विश्वविद्यालय परिसरों में कुछ पुस्तकालयों के खुले रहने के दुर्लभ अपवाद हो सकते हैं, लेकिन यह दृष्टिकोण अपर्याप्त है। सार्वजनिक पुस्तकालय पाठकों को पूरी तरह निराश कर रहे हैं। पुस्तकालयों को सप्ताह में अधिक दिन और

अधिक घंटों तक खुला रहना चाहिए।

तीसरा, अब सार्वजनिक एवं नगरीय पुस्तकालयों तथा विश्वविद्यालयों के सीमित विस्तार पुस्तकालयों में पुस्तक सुरक्षा शुल्क के संग्रह में काफी वृद्धि हुई है। इसके साथ ही सदस्यों से वार्षिक शुल्क के रूप में भारी खर्च भी वसूला जाता है, जिस पर 18% जीएसटी भी लगाया जा रहा है। अब ऐसा लगता है कि सरकारें भी किताबें पढ़कर पैसा कमाना चाहती हैं। हमारे पुस्तकालय इंटरनेट उपयोग के लिए भी शुल्क लेते हैं।

चौथा, अधिकांश सार्वजनिक पुस्तकालयों में बैठने की जगह अपर्याप्त है। पढ़ने के लिए उचित मेज और कुर्सियां, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, शौचालय, इंटरनेट संसाधन जैसी बुनियादी सुविधाएं बहुत खराब हैं। दुर्लभ पुस्तकों और धर्मग्रंथों में संदर्भ और ज्ञान के इन खजानों को पहुंच से दूर रखा गया है। पुरानी पुस्तकों को कभी भी छांटा या जनता को नहीं बेचा जाता।

पांचवां, पुस्तक सूचीकरण को डिजिटल बनाने के लिए कोई प्रयास नहीं किए गए। डिजिटल कैटलॉग उपयोगकर्ताओं को शीर्षक, लेखक, विषय या प्रमुख शब्दों के आधार पर पुस्तकों की खोज करने में सहायता करते हैं, जिससे रुचिकर पुस्तकें ढूंढना आसान हो जाता है। डिजिटल कैटलॉग किसी भी समय और कहीं भी उपलब्ध हैं। कई भारतीय सार्वजनिक और विश्वविद्यालय पुस्तकालयों ने दुर्लभ पांडुलिपियों और पुस्तकों को हमेशा के लिए संरक्षित करने के लिए उनके डिजिटलीकरण पर अभी तक कोई जोर नहीं दिया है। पश्चिमी विकसित देशों में पाठक कुछ ही क्लिक से पुस्तकों को ब्राउज़, खोज और यहां तक कि आरक्षित भी कर सकते हैं।

छठा, विकलांग पुस्तकालय उपयोगकर्ता पूरी तरह से उपेक्षित समूह हैं। हमारे पुस्तकालयों में उनके लिए कोई विशेष स्थान या पढ़ने की सुविधा नहीं है। अधिकांश भारतीय पुस्तकालयों में ब्रेल लिपि की पुस्तकें भी नहीं हैं।

सातवें, भारत ने अभी तक बच्चों के लिए विशेष पुस्तकालय खोलने या मौजूदा सार्वजनिक पुस्तकालयों में ऐसा स्थान आरक्षित करने के बारे में नहीं सोचा है। वरिष्ठ नागरिकों और शांति क्षेत्रों के लिए कोई अलग स्थान नहीं है। ऐसी अज्ञानता निराशाजनक है। सार्वजनिक पुस्तकालयों में पुस्तकालय समितियां होनी चाहिए। सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए अलग से वित्तीय बजट आवंटित किया जाना चाहिए।

आइये, हम भारत के पुस्तकालयों में कार्यरत अपने विद्वान मित्रों से कुछ सबक सीखें। हमारे नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने अपने नोबेल पुरस्कार की राशि का एक बड़ा हिस्सा कलकत्ता के ग्रामीण इलाकों में पुस्तकालय स्थापित करने के लिए दान कर दिया था और 1925 में अखिल बंगाल पुस्तकालय संघ के पहले अध्यक्ष भी चुने गए थे। पुस्तकालय आंदोलन के अग्रदूतों में से एक थे डॉ. एस.आर. यह रंगनाथन ही थे जिनकी पुस्तकालय विज्ञान की अवधारणाओं को टैगोर ने गांव के पुस्तकालयों में व्यावहारिक रूप दिया। दोनों ने भारत में पुस्तकालय आंदोलन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रंगनाथन, जिन्हें अक्सर 'भारत में पुस्तकालय विज्ञान का जनक' कहा जाता है, अपने पुस्तकालय विज्ञान के पांच सिद्धांतों के लिए जाने जाते हैं, जो पुस्तकालय प्रथाओं के लिए एक दार्शनिक आधार प्रदान करते हैं।

सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और युद्ध संबंधी समस्याओं से भरी दुनिया में पुस्तकालय और पुस्तकें रक्षक साबित हो सकती हैं। मानवीय चिंताओं के समाधान हमारी पुस्तकों में हैं, क्योंकि उनमें सदियों का ज्ञान समाया हुआ है। हालाँकि, वे हमारी अलमारियों में बंद हैं। हमारे पुस्तकालयों की स्थिति में गिरावट रुकनी चाहिए। आइए, हम अपने पुस्तकालयों में सोई हुई पुस्तकों को जगाकर अपने समाज को निरंतर पतन से बचाएं।



उमेश मानव

प्रकृति प्रवृत्ति आनन्द

‘प्रकृति आनन्द है’। यही जीवन का सार भी है। हमारा अस्तित्व इसी आनन्द के लिए ही है। मानव यह न समझकर भटक रहा है बस। सृजन ही आनन्द है। यह विज्ञान भी समझना सरल है। अवस्थाएं अपनी आवश्यकता के अनुसार जुड़ती हैं, आनन्द लेती हैं और सुगन्ध महसूस करते हुए अपनी यात्रा पूरी कर लेती हैं। गुरुवर कहते हैं कि यहाँ मनमानी नहीं चलती। हमारी सजीवता की गाड़ी एक दूसरे को ऊर्जा ही तभी दे सकती है, जब एक दूसरे के लिए बनी हो। दो अवस्थाएं एक दूसरे से तभी जुड़ती हैं जब वे आनन्द महसूस करती हैं।

गुरुवर अशोक मानवजी द्वारा कही बातों से आज शुरू करते हैं। गुरुवर कहते हैं कि ‘प्रकृति आनन्द है’। यही जीवन का सार भी है। हमारा अस्तित्व इसी आनन्द के लिए ही है। मानव यह न समझकर भटक रहा है बस। सृजन ही आनन्द है। यह विज्ञान भी समझना सरल है। अवस्थाएं अपनी आवश्यकता के अनुसार जुड़ती हैं, आनन्द लेती हैं और सुगन्ध महसूस करते हुए अपनी यात्रा पूरी कर लेती हैं। गुरुवर कहते हैं कि यहाँ मनमानी नहीं चलती। हमारी सजीवता की गाड़ी एक दूसरे को ऊर्जा ही तभी दे सकती है, जब एक दूसरे के लिए बनी हो। दो अवस्थाएं एक दूसरे से तभी जुड़ती हैं जब

वे आनन्द महसूस करती हैं। इसी प्राकृतिक विज्ञान में जब मानव ने दिमाग लगाना शुरू किया वहीं से मानव जीवन का संघर्ष शुरू होता है। यहीं से आनन्द का एहसास खत्म हो जाता है। दिमाग न लगाने पर, सहज रहने पर संघर्ष जन्म नहीं लेता। ऊर्जा का लेन देन तभी होता है जब उसकी आवश्यकता होती है। ऊर्जा का मिलान भी तभी होता है जब आनन्द का एहसास होता है। संघर्ष में मिलान नहीं होता है। गुरुवर कहते हैं कि जानबूझकर, जबरदस्ती जब कुछ जोड़ा जाता है तो वह संघर्ष होता है। वहाँ पीड़ा होती है। आज मानव समाज में यही शोषण की संघर्ष की भावना है जो पीड़ा का रूप लेकर सभी को दुखी कर रही है। संघर्षों की दुनिया भी ऐसी ही हो चली है पीड़ादायक। इसी कारण हम समाज में हर स्तर पर शोषण और दुर्व्यवहार देखते हैं। सहज रहने पर ऐसा नहीं होता। यही वजह है कि हम देख पाते हैं कि जानवर आनन्दित रहते हैं। जानवर

अपनी सहज प्रवृत्ति के अनुसार ही जीते है।

आज समाज मे अजीब सी होड़ लगी है। हर कोई अलग दिखने के लिए खास दिखने के लिए हर समय किसी न किसी प्रयास में लगा रहता है। यह घर्षण है, सहज नहीं। इसी प्रयास में वह संघर्ष से घिर जाता है। असहजता से शुरू हुई उसकी यात्रा ऐसी हो जाती है कि एक बार विवेक जागने पर भी ऐसे चक्रव्यूह में वह फंस चुका होता है कि वह वापस उन्हीं संघर्षों के बीच में रह जाता है। हम सभी की कमोबेस यहीं स्थिति है। जानते हुए भी समाज के फेर मे यूं फंसते है कि बच्चों को भी उसी संघर्ष में झोक देते है जिसमें हमारी जिंदगी बर्बाद हुई। इसी उठा पटक में जीनव लीला समाप्त हो जाती है। जीवन के जिस आनन्द का स्वाह चरते आये थे वह तो संघर्षों की बलि चढ़ गया।

गुरुवर बहुत ही सुन्दर बात बताते है कि प्रकृति यूं तो प्रकृति ही है। जब वह अपने को एक ईकाई में अभिव्यक्त करती है तब वह प्रवृत्ति बन जाती है, स्वभाव बन जाती है। यही स्वभाव यही प्रवृत्ति आनन्द है। अपने स्वभाव पर चलना, सहज होना आनन्द है। यही आनन्द से स्वयं के गुण का बनना ही पूर्ण होना है। जिसके लिए जीवन मिला है। गुरुवर कहते है कि आपने स्वभाव पर चलना ही आवश्यक है। यही हमें पूर्ण करता है। स्वभाव ही तो आनन्द है। यह प्रकृति विज्ञान में निहित है। कोई इससे अलग नहीं। जिसको जो करना है। जिसको करने मे वह पूर्ण होते, उसके बीजत्व में वही रासायन भरा होता है। जब जिसका समय आता है, परत दर परत वह खुलता रहता है। उसकी जरूरत का ईंधन बाहर से आकर्षित होकर सहज रूप से जुड़ जाता है। पर जुड़ता वही है जिस ईंधन की आवश्यकता होती है। अन्य अवस्थाएं उसके लिए निष्क्रिय हो पड़ी रहती है। इसके बाद दोनों मिलकर एक ऊर्जा बनाता है। इस मिलान से किसी गुण पदार्थ का निर्माण होता है। अपने आनन्द मे ही वह



प्रकृति यूं तो प्रकृति ही है। जब वह अपने को एक ईकाई में अभिव्यक्त करती है तब वह प्रवृत्ति बन जाती है, स्वभाव बन जाती है। यही स्वभाव यही प्रवृत्ति आनन्द है। अपने स्वभाव पर चलना, सहज होना आनन्द है। यही आनन्द से स्वयं के गुण का बनना ही पूर्ण होना है। जिसके लिए जीवन मिला है। गुरुवर कहते है कि आपने स्वभाव पर चलना ही आवश्यक है। यही हमें पूर्ण करता है। स्वभाव ही तो आनन्द है। यह प्रकृति विज्ञान में निहित है। कोई इससे अलग नहीं। जिसको जो करना है। जिसको करने मे वह पूर्ण होते, उसके बीजत्व में वही रासायन भरा होता है। जब जिसका समय आता है, परत दर परत वह खुलता रहता है।

निर्माण करता है, सृजन करता है। यह सब कुछ ज्ञान लगाकर, बल प्रयोग से नहीं होता। यह स्वतः गतिमान होता है। किसी के आदेश की जरूरत नहीं। मिलान उससे ही घेता है। जिसकी जरूरत होती है। जुड़ते ही ऊर्जा बनाता है। गुरुवर फिर कहते है कि यह स्वतः होने वाली प्रक्रिया है तो यह तब ही होगी जब आप सहज होंगे। एहसास पर गतिशील रहेंगे।

आगे समझते हुए गुरुवर कहते है कि हम जब सहजता छोड़कर बल से किसी की अवस्था जानने का प्रयास करते है। तप, जप या ध्यान के माध्यम से। तब हम वास्तव में उस अवस्था को छेड़ रहे होते है, उस अवस्था का शोषण कर रहे होते है। जिससे हमारे अंदर हलचल उत्पन्न होती है। जो हमारे अंदर घर्षण उत्पन्न करती है हम

बेचैनी में डालती है। ऐसे में हम अपना गुण नहीं बना पाते। जब गुण नहीं बना पायेगे तो देंगे क्या? हम कैसे पूर्ण हो पायेंगे।

मानव को अपना गुण पहचानना है। पर आज मानव स्वभाव पर नहीं नकल पर चलना चाह रहा है। इसमे दिक्कत यह है की हम वही कर सकते है जिसका गुण बीज रूप में हमारे अंदर पड़ा हो। हम दूसरे के गुण की नकल नहीं कर सकते। वही ऐसे प्रयास से न तो हम स्वयं का गुण बना पायेंगे और न ही दूसरे का। यह हमारे अस्तित्व को एक दुविधा में डालकर नष्ट कर देगा।

प्रकृति विज्ञान का सम्मान करते हुए हमे सहज होकर अपनी प्रवृत्ति पर चलकर आनन्दित रहना है।

Qnode ऑपरेटिंग सिस्टम



मानवेन्द्र त्रिपाठी

किसी भी कंप्यूटर की आत्मा उसका ऑपरेटिंग सिस्टम होता है। यह सिस्टम हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के बीच पुल का कार्य करता है और समूचे कंप्यूटिंग अनुभव का आधार होता है। आधुनिक ऑपरेटिंग सिस्टम जैसे Windows, macOS, और Linux बहुत ही जटिल और शक्तिशाली होते हैं, लेकिन इनके पीछे काम करने वाली अवधारणाएँ, प्रक्रियाएँ और संरचनाएँ अक्सर विद्यार्थियों और उत्साही प्रोग्रामरों की समझ से बाहर होती हैं। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए Qnode OS जैसे प्रोजेक्ट सामने आए हैं, जो ऑपरेटिंग सिस्टम की मूलभूत अवधारणाओं को सरल, लघु और प्रयोग योग्य रूप में प्रस्तुत करते हैं।

Qnode OS एक शैक्षिक ऑपरेटिंग सिस्टम है, जिसे विशेष रूप से उन लोगों के लिए डिज़ाइन किया गया है जो ऑपरेटिंग सिस्टम डिज़ाइन और सिस्टम प्रोग्रामिंग सीखना चाहते हैं। यह एक हल्का, माइक्रोकर्नल आधारित सिस्टम है जिसमें प्रमुख कार्यक्षमताएँ छोटे-छोटे स्वतंत्र मॉड्यूल्स के रूप में विभाजित होती हैं। इसकी यह मॉड्यूलर संरचना न केवल इसे समझने में आसान बनाती है, बल्कि प्रयोगात्मक दृष्टिकोण से इसे संशोधित करने में भी अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।



तकनीकी दृष्टि से Qnode OS का डिज़ाइन बेहद सुव्यवस्थित और सुस्पष्ट होता है। इसका कर्नल बहुत ही छोटा होता है जो केवल न्यूनतम आवश्यक कार्य करता है – जैसे कि CPU कंट्रोल, इंटरप्ट हैंडलिंग, बेसिक मेमोरी मैनेजमेंट और थ्रेड शेड्यूलिंग। बाकी सभी सेवाएँ जैसे फाइल सिस्टम, यूज़र शेल, इनपुट-आउटपुट मैनेजमेंट आदि यूज़र स्पेस कार्य हैं।

Qnode का मूल उद्देश्य है कि छात्रों और शुरुआती डेवलपर्स को कर्नल लेवल प्रोग्रामिंग की जानकारी दी जाए। इसमें प्रोसेस मैनेजमेंट, मेमोरी हैंडलिंग, फाइल सिस्टम, डिवाइस ड्राइवर्स, इंटरप्रोसेस कम्युनिकेशन और बेसिक नेटवर्किंग जैसी सुविधाओं की नींव रखी जाती है। इसके माध्यम से आप जान सकते हैं कि एक कमांड टाइप

करने से लेकर उस पर अमल करने तक सिस्टम के भीतर क्या-क्या होता है।

तकनीकी दृष्टि से Qnode OS का डिज़ाइन बेहद सुव्यवस्थित और सुस्पष्ट होता है। इसका कर्नल बहुत ही छोटा होता है जो केवल न्यूनतम आवश्यक कार्य करता है – जैसे कि CPU कंट्रोल, इंटरप्ट हैंडलिंग,

बेसिक मेमोरी मैनेजमेंट और थ्रेड शेड्यूलिंग। बाकी सभी सेवाएं जैसे फाइल सिस्टम, यूजर शेल, इनपुट-आउटपुट मैनेजमेंट आदि अलग मॉड्यूल के रूप में यूजर स्पेस में कार्य करती हैं। इस प्रकार की संरचना सिस्टम के स्थायित्व और सुरक्षा को बेहतर बनाती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई ड्राइवर क्रैश करता है, तो वह पूरा कर्नल नहीं गिराता – केवल उस ड्राइवर की सेवा ही बंद होती है।

Qnode एक अत्यंत हल्का और न्यूनतम संसाधनों में चलने वाला सिस्टम है। इसे आप एक साधारण वर्चुअल मशीन या पुराने हार्डवेयर पर भी चला सकते हैं। इसकी कोड संरचना विशेष रूप से शिक्षण उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। इसका अर्थ यह है कि कोड अच्छी तरह से कमेंट किया गया है, हर फ़ाइल और फ़ंक्शन का उद्देश्य स्पष्ट है और नए उपयोगकर्ता भी आसानी से इसे समझ सकते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि Qnode OS को कैसे इंस्टॉल और उपयोग किया जाए। Qnode को स्थापित करने के लिए किसी जटिल इंस्टॉलेशन प्रोसेस की आवश्यकता नहीं होती। सबसे पहले आपको GitHub से इसका सोर्स कोड डाउनलोड करना होता है। फिर आप अपने सिस्टम पर gcc जैसे C compiler और make utility इंस्टॉल करके कोड को बिल्ड कर सकते हैं। बिल्डिंग के बाद आपको एक बूटेबल इमेज मिलती है जिसे आप QEMU या VirtualBox जैसे वर्चुअल मशीन सॉफ्टवेयर में रन कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि आप QEMU का उपयोग कर रहे हैं तो एक सिंपल कमांड से Qnode OS को स्टार्ट कर सकते हैं:

```
bashCopy Editqemu-system-i386 kernel build/qnode.  
bin इसके बाद स्क्रीन पर एक कमांड लाइन
```

शेल आएगी, जहाँ आप बेसिक कमांड्स चला सकते हैं। यही वह बिंदु है जहाँ से वास्तविक सीखने की यात्रा शुरू होती है।

यदि आप Windows यूजर हैं, तो आप MinGW और QEMU for Windows जैसे टूल्स डाउनलोड कर सकते हैं। VirtualBox में एक नई वर्चुअल मशीन बना कर उसमें Qnode की .img फाइल लोड करके भी सिस्टम को रन किया जा सकता है। बिल्ड प्रोसेस के दौरान यदि आप make और gcc का प्रयोग करते हैं, तो आप यह भी सीखते हैं कि सोर्स कोड कैसे कंपाइल होता है, और एक रन करने योग्य बूट इमेज कैसे तैयार होती है।

Qnode OS का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह प्रयोगशाला की तरह कार्य करता है। यहाँ आप नया फाइल सिस्टम डिजाइन कर सकते हैं, थ्रेडिंग जोड़ सकते हैं, मल्टीटास्किंग का परीक्षण कर सकते हैं, सिंक्रोनाइजेशन प्रिमिटिव्स जैसे mutex और semaphores जोड़ सकते हैं, या नेटवर्किंग स्टैक का निर्माण कर सकते हैं। आप IPC (inter-process communication) तंत्र बना सकते हैं, या सेक्योरिटी लेयर का परीक्षण कर सकते हैं। इस तरह यह सिस्टम न केवल थ्योरी को प्रैक्टिकल रूप में बदलता है, बल्कि नवाचार को भी प्रेरित करता है।

अगर हम Qnode की तुलना Minix, xv6 या अन्य शैक्षिक OS से करें, तो पाएँगे कि Qnode का डिजाइन और कोड स्ट्रक्चर अपेक्षाकृत अधिक मॉड्यूलर और समझने योग्य है। इसमें unnecessary abstraction या कॉम्प्लेक्सिटी नहीं है। यही कारण है कि यह शुरुआती लोगों के लिए एक आदर्श प्लेटफॉर्म बन जाता है। इसके अलावा, इसमें C भाषा का प्रयोग होता

है, जो सिस्टम प्रोग्रामिंग की मानक भाषा मानी जाती है। इससे उपयोगकर्ताओं को न केवल OS डिजाइन की जानकारी मिलती है बल्कि C भाषा में दक्षता भी आती है।

Qnode का एक और विशेष उपयोग है एंबेडेड सिस्टम्स और IoT डिवाइसेज में। जहाँ पारंपरिक OS भारी होते हैं और बहुत अधिक संसाधन मांगते हैं, वहाँ Qnode जैसे लाइटवेट सिस्टम बहुत ही कुशल सिद्ध होते हैं। इसकी साधारण संरचना, सीमित हार्डवेयर आवश्यकताएँ और अनुकूलनशीलता इसे इन क्षेत्रों में प्रयोग करने योग्य बनाती है। आप इसे एक विशेष सेंसर डिवाइस, स्मार्ट होम कंट्रोलर या छोटे नेटवर्किंग उपकरण में जोड़ सकते हैं।

उद्योग जगत में भी Qnode जैसे प्रोजेक्ट्स की महत्ता बढ़ती जा रही है। बहुत-सी कंपनियाँ अपनी इन-हाउस प्रणालियों के लिए कस्टम OS बनाती हैं। Qnode जैसी परियोजनाएँ डेवलपर्स को यह कौशल देती हैं कि वे शुरुआत से एक OS डिजाइन करना सीख सकें, जो उनके करियर के लिए एक मजबूत आधार बनता है। यही कारण है कि कॉलेजों, तकनीकी संस्थानों और सॉफ्टवेयर कंपनियों में Qnode OS जैसे प्रोजेक्ट्स पर काम करने वालों की मांग बढ़ रही है।

यदि आप किसी अकादमिक परियोजना की तलाश कर रहे हैं तो Qnode OS को आधार बनाकर आप शानदार शोध कार्य कर सकते हैं। जैसे, आप इसमें सिंक्रोनाइजेशन एल्गोरिथ्म लागू कर सकते हैं, एक नया फाइल सिस्टम डिजाइन कर सकते हैं, या मल्टीप्रोसेसिंग का व्यवहार विश्लेषण कर सकते हैं। इसके अलावा, यदि आप ओपन-सोर्स में योगदान देना चाहते हैं, तो Qnode एक आदर्श प्रोजेक्ट हो सकता है

“लू” का प्रकोप बढ़ा, अनिवार्य सावधानी



डॉ. वी. आर. नलवाया

मंदसौर

मध्यप्रदेश के 6 जिलों में “लू” चली, इसमें पहली बार 18 अप्रैल को भोपाल में दिन का तापमान 42.2 डिग्री पहुंच गया। “लू” का प्रकोप दमोह, सागर, रतलाम, शिवपुरी, में कई गुना देखा गया। 20 अप्रैल को 43.1 डिग्री पहुंचने का अनुमान था। यहां देखा गया है कि राजस्थान और गुजरात से आई गर्म हवाओं के असर से पूरे मध्य प्रदेश में तपिश बड़ी है। उसी के कारण चक्रवात से भी गर्म हवा फैल रही है। मध्य प्रदेश के खजुराहो में सबसे गर्म 44.6 डिग्री पारा चल चुका है। अब इससे बचने के उपाय ध्यान की देने बहुत जरूरत है। इस तरह मध्य प्रदेश में गर्मी के तेवर तेज हो गये हैं। इसके साथ ही देश के अनेक भागों में अधिक तापमान बनता जा रहा है। गर्मी की तेज धूप और झुलसा देने वाली गरम हवाओं को ‘लू’ कहा जाता है। ‘लू’ लगना ग्रीष्मकाल की बीमारी है। ‘लू’ गर्मी के प्रकोप के कारण फैलती है। जब हवाएँ और गर्म हो जाती हैं। ये हवाएँ तेज और शुष्क होने के कारण वातावरण की नमी सोख लेती हैं। इसके कारण मनुष्य के शरीर में नमक और पानी का बड़ा हिस्सा शरीर से निकलता तो खून की गरमी बढ़ने लगती है। इसके कारण प्यास बहुत अधिक लगती और सिर में भारीपन मालूम होने लगता है। गर्मी बढ़ने से तन शिथिल हो जाता है व त्वचा झुलस जाती है। शारीरिक गर्मी बढ़ने से मनुष्य ‘लू’ की चपेट में आ जाता है ‘लू’ लगने के कई कारण हैं—इसमें अधिक देर तक गर्म

गर्मी की तेज धूप और झुलसा देने वाली गरम हवाओं को ‘लू’ कहा जाता है। ‘लू’ लगना ग्रीष्मकाल की बीमारी है। ‘लू’ गर्मी के प्रकोप के कारण फैलती है। जब हवाएँ और गर्म हो जाती हैं। ये हवाएँ तेज और शुष्क होने के कारण वातावरण की नमी सोख लेती हैं। इसके कारण मनुष्य के शरीर में नमक और पानी का बड़ा हिस्सा शरीर से निकलता तो खून की गरमी बढ़ने लगती है। इसके कारण प्यास बहुत अधिक लगती और सिर में भारीपन मालूम होने लगता है।



तेज हवा में घूमने-फिरने से, घूप में नंगे पावंचलने, शारीरिक रूप से कमजोरी, पोष्टिक आहार न लेना। ‘लू’ लगने की अवस्था में शरीर के अंदर तापमान को नियंत्रण में रखने वाली प्रणालियाँ काम करना बंद कर देती हैं जिससे शरीर के तापमान में वृद्धि होती और यह तापमान बढ़कर 106 से 108 डिग्री सेल्सियस हो जाता है। इससे ज्वर की तीव्रता से सिर में दर्द, बैचेनी, चक्कर आना, आँखों में जलन, अचानक

बेहोशी, नाड़ी की गति में तेजी, खून की गति में तेजी और शरीर में ऐंठन लगती है, कभी-कभी उल्टियाँ भी होती तथा हाथ और पैर के तलुओं में जलन भी होती है।

दिल्ली के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. डी.के. शर्मा ने बताया कि गर्मी में पसीने के कारण अधिक पानी निकल जाने से “डिहाइड्रेशन” यानि शरीर में पानी की कमी हो जाती है। डॉ. शर्मा का कहना है कि पसीना निकलना शरीर

के सही तापमान को बनाए रखने के लिए आवश्यक है, लेकिन समस्या तब होती है जब पसीना निकलने के अनुपात में शरीर में पानी की पूर्ति नहीं हो पाती है जाहिर है कि पानी की कमी से शरीर का तापमान बढ़ने लगता है इससे शारीरिक अंगों को नुकसान होने लगता है।

डॉ. यासिर रिजवी के मुताबिक सादा पानी हमारे शरीर के लिए उत्तम होता है इसलिए धूप में बाहर निकलने से पहले पानी पी लें और अपने साथ हमेशा पानी की बोतल रखें। वैसे तो बाजार में ज्यूस और कई सपोर्ट ड्रिंक भी उपलब्ध होते हैं लेकिन डॉ. रिजवी कहते हैं कि इनका सेवन नहीं करना चाहिए इनसे शरीर को फायदा नहीं होता।

डॉ. एस.के. बोस के अनुसार धूप में निकलने से पहले सन स्क्रीन क्रीम लगाना लाभदायक होता है।

लू के घरेलू उपचार -

लू लगने पर तत्काल चिकित्सा उपलब्ध नहीं होने पर निम्न उपचार करना चाहिए -

- ◆ डाक्टर के आने तक रोगी को तौलिया या चादर को पानी में भिगोंकर ओढ़ा देना, पहने हुए वस्त्र को हल्के वस्त्र में बदल देना और थोड़ी-थोड़ी देर में चादर को बदलना चाहिए।
- ◆ यदि बुखार 104 डिग्री से अधिक होने पर बर्फ की पट्टी सीर पर रखना चाहिए। इसको बार-बार बदलते रहने से बुखार जल्दी से उतारने का प्रयास करना चाहिए।
- ◆ लू लगे रोगी को प्याज का रस में शहद देकर चटाने के साथ प्याज का रस को पैरों के तले पर बार-बार रगड़ना चाहिए।
- ◆ रोगी को कुछ खिलाएँ नहीं इससे उल्टी हो सकती है।
- ◆ जौ का आटा व पीसा प्याज मिलाकर शरीर पर लेप करने से लू से तुरन्त आराम मिलता है। क्योंकि जो शीतलता प्रदान करता है व गर्मी दूर भगाता है।
- ◆ कैरी का पना विशेष लाभदायक होता है।



कच्ची कैरी गरम राख पर मंद आँच वाले अंगार में भुनकर उसे गुदा को पानी में मसलकर उसमें जीरा, धनियाँ, शक्कर, काली मिर्च डालकर पना रोगी को पिलाना चाहिए इसके साथ बाहर जाने के पहले इसका सेवन कर लू से बचा जा सकता है।

- ◆ घर का वातावरण शीतल रखने का प्रयत्न करना चाहिए। सर्वप्रथम यह प्रयास करना आवश्यक है कि मरीज को ठंडे स्थान पर आराम करवाया जाए।
- ◆ इन उपायों के साथ ही गरिष्ठ वस्तुओं को कुछ समय के लिए तिलांजलि दे दे तो अच्छा होगा। भोजन में खटाई, आम-इमली की चटनी, नींबू, पुदीना व जीरा के उपयोग की मात्रा बढ़ा देना चाहिए।
- ◆ मौसम्बी फलों का सेवन लाभदायक रहता है जैसे - अंगूर, संतरा, खरबूजा, तरबूज, आम, लीची, आलू बुखारा आदि। बे मौसमी फलों का सेवन हानिकारक हो सकता है।

लू से बचने के तरीके

‘लू’ से बचने के लिये दोपहर के समय घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। अगर बाहर जाना आवश्यक हो तो सिर और गर्दन को तौलियाँ से ढक लेना आवश्यक है। सूरज की परा बैंगनी किरणों से बचाव वाले चश्मे का उपयोग करना चाहिए। वैसे तो साधारण चश्मे का उपयोग भी किया जा सकता है। पैट की जेब

में ताजा प्याज रख लेने से लू से बचा जा सकता है। पसीने में तरबतर रहने पर भूल से जल्दबाजी में पानी नहीं पीना चाहिए। धूप के बाहर जाने के पूर्व गर्मी से बचने के लिए हल्के नरम, मुलायम, सूती कपड़े पहनना चाहिए। जिससे हवा और शरीर के पसीने को कपड़े सोखते रहेंगे। प्रातः काल नियमित स्नान किया जाए तो अच्छा है इससे शरीर की त्वचा स्वस्थ, पसीन के त्वचा में जीम धूल की सफाई हो जाती है। इस ऋतु में शरीर को पानी व नमक भी बेहद जरूरत होती है। पानी की कमी से व्यक्ति को लू लगने की शत-प्रतिशत संभावना रहती है। अतः पानी खूब पीना चाहिए इसमें नींबू व नमक मिला लेना चाहिए। लीची व गुलाब का शरबत, पुदीने का पानी, लस्सी, गन्ने का रस, ताजे फलों का रस और ठंडाई पिये जा सकते हैं।

गर्मी के मौसम में चाय-काफी आदि गर्म वस्तुओं का सेवन कम करना है। इससे ‘लू’ की संभावना बढ़ती है। पानी में बर्फ का प्रयोग नहीं करना क्योंकि इसमें लाभ की अपेक्षा हानि हो सकती है। मिट्टी के घड़े या सुराही के पानी का प्रयोग करना लाभप्रद रहता है। इस प्रकार खान-पान संबंधी थोड़ी-सी सावधानी से ‘लू’ लगने से बचा जा सकता है।

बहुत ज्यादा परेशानी होने पर डॉक्टर से संपर्क “लू” इलाज चालू किया जाए - शीघ्रताशीघ्र, कोताही न बरते।

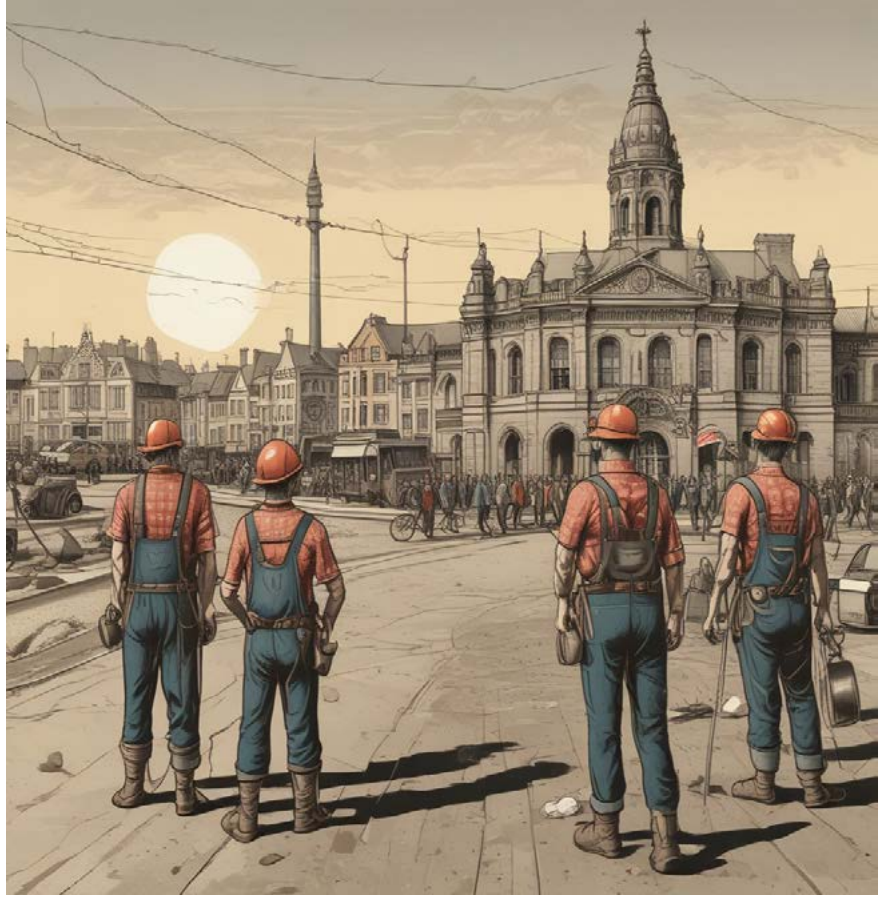
समाज और राष्ट्र की धुरी हैं मजदूर



सुनील कुमार महाला

युवा साहित्यकार, उत्तराखंड

एक मई को हर वर्ष अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस या मजदूर दिवस या मई दिवस के रूप में मनाया जाता है। वास्तव में, यह दिवस मजदूरों और श्रमिक वर्गों का उत्सव है, जिसे अंतरराष्ट्रीय श्रम आंदोलन द्वारा बढ़ावा दिया जाता है और यह हर साल 1 मई, या मई के पहले सोमवार को होता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि 1 मई महाराष्ट्र दिवस और गुजरात दिवस के साथ भी मेल खाता है, जो 1960 में दो भारतीय राज्यों के गठन का प्रतीक है। बहरहाल, यहां यह कहना गलत नहीं होगा कि किसी भी देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति में मजदूरों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण और अहम होती है और यह दिवस मजदूरों को उनके अधिकारों, रोजगार, उनकी कड़ी मेहनत और समाज और देश को उनके योगदान विशेष को सम्मान देने के क्रम में हर साल मनाया जाता है। कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला अपनी एक कविता में मजदूरों की दशा पर कुछ यूँ लिखा है—वह तोड़ती पत्थर, देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर, वह तोड़ती पत्थर, कोई न छायादार पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार, श्याम तन, भर बंधा यौवन नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन गुरु हथौड़ा हाथ,



उन मेहनती श्रमिकों को सम्मान देने का दिन है जो अपने पसीने से देश की प्रगति की नींव रखते हैं। चाहे खेतों में काम करने वाले किसान हों, कारखानों के मजदूर हों या निर्माण स्थलों पर कार्य करने वाले श्रमिक इन सभी की मेहनत ही हमें ऊँची इमारतें, सजे हुए बाजार, और संपन्न समाज प्रदान करती है। श्रमिक दिवस हमें यह याद दिलाता है कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति में श्रमिकों का योगदान सबसे महत्वपूर्ण होता है।

करती बार-बार प्रहार, सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।' बहरहाल, हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि किसी भी समाज और राष्ट्र का विकास तभी संभव हो सकता है, जब वहां के श्रमिक/मजदूर सुरक्षित और सम्मानित हों। यहां यह गौरतलब है कि इस दिवस की नींव सर्वप्रथम

वर्ष 1886 में रखी गई थी, जब इस दिन को मनाने की मांग अमेरिका के शिकागो शहर में उठी, जब वहां के मजदूर अपने सम्मान और अधिकारों के लिए सड़क पर उतर आए थे। हालांकि, पहली बार मजदूर दिवस वर्ष 1889 में मनाने का फैसला लिया गया था। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1886 से

पहले अमेरिका में मजदूरों ने अपने हकों के लिए हड़ताल की। दरअसल, मजदूरों की कार्य अवधि (काम के घंटों) को लेकर यह आंदोलन हुआ था, क्योंकि उस दौर में मजदूर 15-15 घंटे काम किया करते थे। आंदोलन के दौरान पुलिस ने मजदूरों पर गोलियां चलाई, जिसमें कई श्रमिकों की जान चली गई और कई घायल हो गए। घटना के तीन साल बाद 1889 में अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें हर मजदूर की प्रतिदिन कार्य-अवधि 8 घंटे तय कर दी गई। वहीं एक मई को मजदूर दिवस के तौर पर मनाने का फैसला लिया गया। बाद में अमेरिकी मजदूरों की तरह ही दूसरे देशों में भी श्रमिकों के लिए 8 घंटे काम करने का नियम लागू कर दिया गया। यहां पाठकों को बताता चलूं कि पिछले साल मजदूर दिवस 2024 की थीम 'जलवायु परिवर्तन के बीच कार्यस्थल पर सुरक्षा और स्वास्थ्य सुनिश्चित करना' रखी गई थी, जिसमें मजदूरों को सामाजिक न्याय और सभ्य कार्य, उनकी सुरक्षा एवं स्वास्थ्य, डिजिटलीकरण और कार्य का भविष्य तथा कार्यस्थल पर लैंगिक समानता को शामिल किया गया था। कहना ग़लत नहीं होगा कि अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस हमें मजदूरों और ट्रेड यूनियनों के संघर्षों और उपलब्धियों की याद दिलाता है। सच तो यह है कि यह सामाजिक आंदोलनों और मजदूरों की बेहतर अधिकारों, सभ्य मजदूरी और उचित व्यवहार की माँगों को दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि भारत में पहला मजदूर दिवस समारोह वर्ष 1923 में चेन्नई (तब मद्रास) में लेबर किसान पार्टी ऑफ हिंदुस्तान द्वारा आयोजित किया गया था। पाठकों को बताता चलूं कि इस दिन की शुरुआत चेन्नई में कम्युनिस्ट नेता सिंगारवेलु चेट्टियार ने की थी। उन्होंने मजदूरों के हक और अधिकारों की माँग को लेकर मद्रास हाई कोर्ट के सामने पहली बार मजदूर दिवस की सभा आयोजित की थी। इसी सभा



में पहली बार भारत में 'मई दिवस' मनाया गया। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि मजदूरों को काम करने के अधिकार (पसंद का काम करने का अधिकार), भेदभाव के विरुद्ध अधिकार (समान कार्य, समान वेतन), न्यायोचित और मानवीय कार्य स्थितियाँ (कार्यस्थल पर स्वास्थ्य और सुरक्षा, उचित कार्य समय, और अवकाश का अधिकार), सामाजिक सुरक्षा (बेरोजगारी, बीमारी, और अन्य स्थितियों में), मजदूरी की सुरक्षा (समय पर और पूरी मजदूरी का भुगतान, और न्यूनतम मजदूरी का अधिकार), संगठित होने और ट्रेड यूनियन बनाने का अधिकार आदि प्रदान किए गए हैं। इतना ही नहीं, मजदूरों को कार्यस्थल पर गोपनीयता का अधिकार, शिकायतों का निवारण, और प्रबंधन में भागीदारी का अधिकार भी है। आज मशीनीकरण, औद्योगिकीकरण, तकनीक का युग है। आज भी मजदूरों को कम वेतन दिया जाता

है, उनका शोषण किया जाता है और कठिन परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है, जो कि सरासर ग़लत और मजदूरों के साथ घोर अन्याय है। मजदूरों के समर्पण, परिश्रम और योगदान का ही नतीजा होता है कि देश और समाज तरक्की के पथ पर अग्रसर होता है। मजदूर अपने कठिन परिश्रम से आम जनमानस के जीवन को आसान और सरल बनाते हैं, इसलिए देश और समाज निर्माण में उनकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। वे किसी भी राष्ट्र के विकास के असली स्तंभ और धुरी होते हैं। अंत में अदम गॉडवी जी के शब्दों में बस यही कहूंगा कि - 'वो जिसके हाथ में छाले हैं पैरों में बिवाई है, उसी के दम से रौनक आपके बंगले में आई है।'

दक्षिण भारत की कुंभनगरी : कुंभकोणम



विभा कन्न (शिक्षिका)

कोयंबटूर तमिलनाडु

कम ही लोग जानते हैं कि उत्तर भारत जैसी ही दक्षिण में भी एक कुंभनगरी है। नाम है - कुंभकोणम। यहाँ भी हर 12 वर्ष में विशाल कुंभ मेला लगता है। कुंभकोणम उत्तर में कावेरी नदी और दक्षिण में अरसलार नदी के बीच बसा हुआ है। कुंभकोणम नाम का अर्थ है - बर्तन का कोना।

हम उत्तर भारत के चार लोकप्रिय महाकुंभ स्थल प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक से भलीभांति परिचित हैं, जहाँ निर्धारित अंतराल पर अर्द्धकुंभ और महाकुंभ मेला का

आयोजन बड़े मानव समागम के रूप में होता है। अभी जनवरी और फरवरी 2025 में प्रयागराज में महाकुंभ का महाआयोजन सम्पन्न हो चुका है, जिसका शुभ संयोग 144 वर्षों के बाद प्राप्त हुआ था।

कम ही लोग जानते हैं कि उत्तर भारत जैसी ही दक्षिण में भी एक कुंभनगरी है। नाम है - कुंभकोणम। यहाँ भी हर 12 वर्ष में विशाल कुंभ मेला लगता है। कुंभकोणम उत्तर में कावेरी नदी और दक्षिण में

अरसलार नदी के बीच बसा हुआ है।

कुंभकोणम नाम का अर्थ है - बर्तन का कोना। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब सुनामी के कारण दुनिया नष्ट हो गई, तब भगवान ब्रह्मा ने भगवान शिव से पूछा कि सृष्टि को फिर कहाँ से शुरू कर सकते हैं। उन्होंने उन्हें विभिन्न पवित्र स्थानों से एकत्र की गई रेत से एक



जादुई बर्तन बनाने और उसे बाढ़ के पानी में प्रवाहित करने का सुझाव दिया। कुंभकोणम वह स्थान है, जहाँ बर्तन रुक गया और भगवान शिव ने एक बाण मारा, जिससे इस स्थान पर कुछ अमृत छलक गया और इस तरह पृथ्वी पर जीवन पुनः शुरू हो गया।

एक दूसरी पौराणिक मान्यता है कि शिव जी ने हर युग की सृष्टि के पहले अमृत और जैविक बीज भरा अलौकिक घड़ा निकालने की घोषणा की थी। कलयुग के आने से पहले वह घड़ा जहाँ रुका, वहाँ कुंभकोणम (घड़ा टूटना) हुआ। कोणम का अर्थ है - टूटकर बिखरा हुआ। लोक मान्यता है कि इस घड़े को शिव जी ने बाण मारकर तोड़ा था। जहाँ - जहाँ इसके टुकड़े गिरे, वहाँ तीर्थ और मंदिर बन गए।

इस कथा से जुड़ा एक श्लोक इस प्रकार प्रचलित है -

*कुंभस्य कोणतो यस्मिन् सुधापुरं
विनिस्सृतम्।
तस्मात् तत्पदं लोके कुंभकोणकं
वदन्ति हि॥*

इसका अर्थ है कि जिस स्थान पर कुंभ से अमृत बहकर निकला, उस स्थान को संसार में 'कुंभकोणम' कहा जाता है।

यह श्लोक कुंभकोणम की पौराणिक महिमा को संक्षेप में प्रस्तुत करता है। जो इस तीर्थस्थल के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व को दर्शाता है।

भारत के तमिलनाडु राज्य का कुंभकोणम एक छोटा-सा धार्मिक शहर है, जो जिला मुख्यालय तंजाऊर से 40 किलोमीटर और चेन्नई से 273 किलोमीटर दूर है। इसकी पहचान मठों - मंदिरों से है। अकेले कुंभकोणम में ही 188 हिन्दू मंदिर हैं। आसपास के गाँवों की बात करें, तो यह संख्या हजारों में है। इसलिए इसको मंदिरों का शहर भी कहा जाता है। यहाँ राजा चोल द्वितीय ने 12 वीं सदी में ऐरावतेश्वर मंदिर का निर्माण कराया था, जिसे यूनेस्को ने



विश्व विरासत सूची में सम्मिलित किया है। तमिल के तुलसी नाम के सुप्रसिद्ध विद्वान डा एम. गोविंद राजन के अनुसार कुंभकोणम में अगला कुंभ 2028 में लगना है।

संगम नगरी प्रयागराज में प्रतिवर्ष लगने वाले माघ मेले की भाँति कुंभकोणम में भी प्रतिवर्ष मेला लगता है। यह महामाखम पर्व कहलाता है। ध्वजारोहण के साथ शुरू होने वाले इस पर्व में महामण्डलेश्वर, मठाधीश पूरे दल-बल के साथ जुलूस निकालते हैं। यहाँ चतुर्भुज आकार में करीब 6 एकड़ का एक पवित्र तालाब है, जिसे महामहम (महामाखम) कहते हैं। इसके जल को अमृत का अंश माना जाता है। तालाब के



चारों ओर 16 मण्डप, और 21 कुएं हैं। लोग आरती के बाद इन कुओं में देश की 20 प्रमुख नदियों का जल मिला देते हैं। इस जल में डुबकी लगाने से सम्पूर्ण नदियों में स्नान का पुण्य मिलता है।

ब्रिटिशराज के समय यह शहर अपनी समृद्धि के चरम पर पहुँच गया था और यूरोपीय शिक्षा और हिन्दू संस्कृति का प्रमुख केन्द्र होने के कारण इसे दक्षिण का कैम्ब्रिज नाम दिया गया था।

कुंभकोणम के प्रमुख मंदिरों में काशी विश्वनाथ मंदिर, आदि कुंभेश्वर स्वामी मंदिर, नागेश्वर मंदिर, चक्रपाणि मंदिर, उष्णिलियप्पन मंदिर, महालिंग स्वामी मंदिर, ब्रह्मा मंदिर आदि हैं। अधिकांश मंदिर शिव के या विष्णु के हैं।

नागेश्वर मंदिर कुंभकोणम के सबसे अच्छे पर्यटन स्थानों में से एक है। यह मंदिर शिव को समर्पित है। इतिहास में रुचि रखने वाले दर्शकों को इसकी अनूठी विस्तृत चोल शैली की वास्तुकला आकर्षण का केंद्र है।

कुछ अन्य प्रमुख दर्शनीय स्थल निम्नवत हैं -

श्रीनिवास रामानुजन अंतर्राष्ट्रीय स्मारक

प्रसिद्ध गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के नाम से स्थापित यह अंतर्राष्ट्रीय स्मारक



उनको श्रद्धांजलि देता है। यहाँ सारंगपानी स्ट्रीट में स्थित उस घर को देख सकते हैं, जहाँ रामानुजन रहते थे। पास के टाउन हाई स्कूल में झाँकें, जहाँ उन्होंने 1898 के आसपास से 6 वर्ष तक पढ़ाई की थी।

कुंभकोणम कांची मठ

इसकी स्थापना कांचीपुरम मठ की एक शाखा के रूप में की गई थी। मठ एक वेद पाठशाला चलाता है। यहाँ बहुत ही शांत वातावरण रहता है। जहाँ आप ध्यान में एक सुबह बिता सकते हैं।

महामहम टैक

यह तालाब एक पवित्र जल निकाय है। मंदिरों से घिरा यह स्थान आध्यात्मिक साधकों के लिए अत्यंत शांति एवं आनंद प्रदान करता है।

स्वामीनाथ स्वामी मंदिर, स्वामी मलाई

भगवान मुरुगन को समर्पित यह मंदिर पवित्र स्थानों में गिना जाता है। यह पहाड़ी पर स्थित है। जहाँ मनोरम दृश्यों और शांत वातावरण का आनंद लिया जा सकता है। यह कुंभकोणम से 6 किलोमीटर दूर है।

उक्त के अतिरिक्त राजा चोलम का स्मारक, रामास्वामी मंदिर, श्रीविट्टल रुक्मिणी संस्थान, कुंभकोणम टाउन हाल

आदि दर्शनीय स्थल हैं।

कुंभकोणम में तीर्थयात्रियों के लिए अनेक दर्शनीय स्थल हैं। वहाँ खरीदने के लिए कई चीजें हैं। यहाँ पीतल, कांस्य, ताँबे और सीसा के बर्तन, चीनी मिट्टी की चीजें, रेशम और सूती कपड़े, पान के पत्तों और मेवों की अनेक दूकानें तथा बड़े शोरूम हैं। आगन्तुकों के लिए यहाँ इडली, डोसा, पूरी के साथ कई प्रकार के व्यंजन उपलब्ध रहते हैं। यात्रियों के ठहरने के लिए होटल, यात्री निवास एवं धर्मशाला हैं, जिनमें उचित मूल्य पर स्थान आरक्षित कराया जा सकता है।

कुंभकोणम पहुँचने के मार्ग

कुंभकोणम जाने के लिए हवाई मार्ग, रेल मार्ग तथा सड़क मार्ग तीनों विकल्प उपलब्ध हैं। इसके लिए पर्याप्त समय पूर्व योजना बनाकर आवागमन के साधनों को सुविधा - साधन सहित आरक्षित एवं सुरक्षित कर लेना चाहिए।

हवाई मार्ग - निकट का हवाई अड्डा तिरुचिरापल्ली अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है। यहाँ से टैक्सी से 2 घंटे में पहुँचा जा सकता है।

रेल मार्ग - तमिलनाडु के सभी शहरों से जुड़ा हुआ है तथा देश के प्रमुख रेलवे स्टेशनों से सीधी सेवाएँ प्राप्त की जा सकती हैं।



बस मार्ग - स्थानीय बस स्टैंड सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है।

कुंभकोणम के लिए यात्रा वर्षभर की जा सकती है। समुद्र तटों का आनंद पाने के लिए आगंतुक चेन्नई या पाण्डिचेरी जैसे शहरों की यात्रा कर सकते हैं।

सनातन की दिव्यता, देश की विविधता, प्रकृति की सुन्दरता, तीर्थयात्रा की पवित्रता और जीवन में पुण्य - लाभ की सकारात्मकता का अनुभव करने के लिए देशाटन से अच्छा और औकोई सुअवसर क्या हो सकता है! इस प्रयोजन सिद्धि के दूरियाँ कौन देखता है! तो चलो चलें, इस बार कुंभकोणम आमंत्रित कर रहा है।

खाली घोंसला सिंड्रोम



डॉ इरा त्रिपाठी

मानो सामाजिक सलाहकार
जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम
एस एस पी जी वाराणसी



विगत कई महीनों से मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्तियों की काउंसलिंग करते समय बरबस ही ध्यान उनके उम्र एवं उनके मानसिक लक्षणों के प्रकार पर गया तो पाया कि वो सभी लगभग 30-55 की आयु के मध्य थी और उन सबों की कॉमन समस्या उदास रहना, चिंता, खालीपन, एकाकीपन, स्वयं के प्रति रूखा व्यवहार, किसी भी काम को करने में उत्साह की कमी जैसी थी। जैसे की हम सभी मानसिक रूप से परेशान व्यक्तियों की पूरी व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक स्थिति खंगालते हैं और उसमें छिपे कारणों का पता लगते हुए मानो सामाजिक उपचार करते हैं। यहां भी खंगलते वक्त जो पाया वो था लगभग प्रत्येक के परिवार रूपी घोंसले में से उनके प्रिय और सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां यानी उनके बच्चों का किसी न किसी कारण वश घर से दूर जाना जैसे कुछ बच्चों को अपनी उच्च शिक्षा हेतु, तो कुछ को अच्छे पैकेज के साथ नौकरी हेतु तो कुछ को शादी के उपरांत निवास हेतु, कुछ बच्चों की बिगड़ी संगत के कारण परिवार से दूर रहना तथा कुछ बच्चे तो मात्र पीढ़ी के अंतराल से होने वाली कलह एवं माता पिता से मतभेद के कारण परिवार से दूर

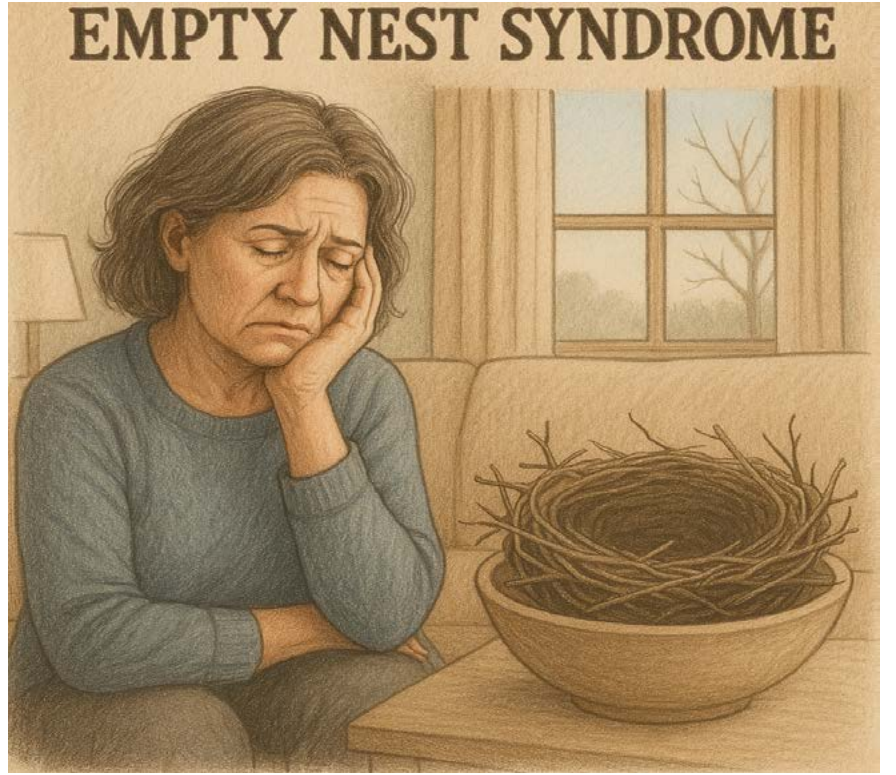
एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जिसमें माता-पिता अपने बच्चों के घर से चले जाने के बाद दुख अकेलापन और उदासी उद्देश्य हीनता चिंता जैसी भावनाओं का अनुभव करते हैं। कुछ माता-पिता को अपने बच्चों की अनुपस्थिति में अकेलापन दुख और उदासी का अनुभव हो सकता है। कुछ जीवन पर्यंत अपने बच्चों की देखभाल और परवरिश में इतना खो जाते हैं कि उनके घर से जाने के बाद चाहे वह कॉलेज हो नौकरी हो या अलग स्वतंत्र रूप से रहने का कारण निरंतर उनकी चिंता में ही ग्रसित रहने लगते हैं।

चले जाना इत्यादि सामने आया। ये सारे कारण ही इतने गंभीर थे अभिभावकों खास कर माताओं में खाली घोंसला सिंड्रोम के रूप में सामने आया है। ये अधिकतर वो अभिभावक थे, जो स्वभावतः अति संवेदनशील थे और जो बच्चों के जाने के बाद अपनी पहचान बनाए रखने के लिए अत्यधिक संघर्ष कर रहे होते थे। उदाहरण के तौर पर सयुक्त परिवार में पले बढ़े उन वयस्कों की करना चाहेंगे जो बचपन से लेकर अपने स्वयं के परिवार में बच्चों के आगमन से विकास तक अपने बुजुर्गों की छत्र छाया में रहते हुए अपने जीवन गुजार देते हैं। परंतु किसी कारणवश जब एक दिन उनको स्वयं के परिवार का पालन पोषण

एवं संरक्षण करना होता है तो वो अपना सारा संसार और अस्तित्व ही अपने बच्चों के इर्द गिर्द ही देखते एवं बुनते हैं। और एक दिन यही बच्चे उपरोक्त दिए गए किन्ही कारणों से घर से बाहर रहने लगते हैं तो अभिभावकों को अपना अस्तित्व ही समझ नहीं आ पाता ऐसे में अगर बहुत जायदा सीधे साधे या बाहरी दुनिया से बहुत संपर्क न रखने वाले हो तो खाली घोंसला सिंड्रोम से बहुत जायदा ही ग्रसित ही जाते हैं। जिसमें प्रमुखता एकाकीपन एवं असुरक्षा की भावना होना है।

एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जिसमें माता-पिता अपने बच्चों के घर से चले जाने के बाद दुख अकेलापन और उदासी उद्देश्य हीनता

चिंता जैसी भावनाओं का अनुभव करते हैं कुछ कुछ जीवन पर्यंत अपने बच्चों की देखभाल और परवरिश में इतना खो जाते हैं कि उनके घर से जाने के बाद चाहे वह कॉलेज हो नौकरी हो या अलग स्वतंत्र रूप से रहने का कारण निरंतर उनकी चिंता में ही ग्रसित रहने लगते हैं उनकी भलाई और सुरक्षा के लिए परेशान होते रहते हैं। कई कई बार तो देखा गया है की माता-पिता का वैवाहिक बँड अब उनके बच्चों की वजह से ही रुक होता है का तात्पर्य कि वह माता-पिता या वह अभिभावक एक साथ रहना इसीलिए तैयार होते हैं कि वह बच्चों की अच्छी सी परवरिश करके उनको कुछ बना सके, और जब ऐसे बच्चे घर किन्ही किन्ही कारणों से बाहर जाते हैं तो माता पिता एक साथ नहीं रह पाते और उनके बीच का संबंध विच्छेद हो जाता है माने तो वह एक दूसरे से अलग रहने लगते हैं या फिर तलाक ले लेते हैं। बार माता-पिता का बच्चों के बिना घर में अकेलापन महसूस होने के कारण वह अपने जीवन में आए इस महत्वपूर्ण बदलाव को भावनात्मक एवं शारीरिक हर स्तर के संघर्ष के रूप में बढ़ा लेते हैं। उनकी शारीरिक और भावनात्मक क्षमता इस बुरी तरह प्रभावित हो जाती है की वो आत्म हत्या तक कर बैठते हैं।



क्लास सिंड्रोम एक नैदानिक निदान नहीं है या एक सामान्य जीवन संक्रमण है जिसमें माता-पिता को अनेक प्रकार के प्रबंध करने होते हैं कभी-कभी यह इतना खतरनाक हो जाता है की माता-पिता आत्महत्या करने को भी मजबूर हो जाते हैं

माता-पिता के तनाव की यह स्थिति निम्नलिखित चरणों में पाई गई है। जिसको

मनोवैज्ञानिक कॉबलर रॉस के द्वारा बताए गए नियमों से समझ जा सकता है। मनोवैज्ञानिक ने बताया है कि किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में जो की व्यक्तिगत उदासी या शोक से जुड़ा हुआ है उसको निम्नलिखित चरणों में बाटा जा सकता है है जैसे शुरुआत में

- ◆ परिस्थितियों से इनकार या उसको स्वीकारना नहीं।
- ◆ उसके विरुद्ध क्रोध या गुस्सा करना।
- ◆ उम्मीद बनाए रखने के लिए भावनात्मक सौदेबाजी करना।
- ◆ अब परिस्थितियों से आई उदासी या मायूसी महसूस करना।
- ◆ उन परिस्थितियों को स्वीकार लेते हैं।

अब बारी आती है कि खाली घोंसला सिंड्रोम कब तक रहेगा इस परेशानी का अंत कब और कैसे होगा। तो इसका उत्तर उस परिस्थिति से जूझ रहे माता-पिता के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है क्योंकि यह एक अकाट्य सत्य है कि बच्चों के बड़े होने पर उनका स्वयं की पहचान बनाना, जीवकोपार्जन एवं



सामाजिक प्रक्रियाओं को निरंतर आगे बढ़ाते रहने की आवश्यकता होती है और इसके लिए उनको परिवार या घर से बाहर कदम रखना ही होता है। अब प्रश्न ये भी आता है को माता पिता में से इस प्रकार समस्या का सामना किसको जायदा करना पड़ जाता है। तो हम सब ये जानते हैं कि इस विश्व भर में और खास के हमारे परिवेश में माताएं ही घर का आधार स्तंभ होती है और घर गृहस्थी को चलाने एवं बच्चों के पालन पोषण उनकी एक अहम भूमिका होती है, ऐसे में बच्चों के पालन पोषण में सबसे जायद समय और भावनाएं माता की ही जुड़ी होती है और वो स्वभाव से बहुत संवेदनशील भी होती है अतः स्वाभाविक रूप से महिलाएं ही इस सिंड्रोम से ज्यादा ग्रसित होती है। परंतु आज के परिवेश में जहां एकल अभिभावक का भी बहुतायत से चलन है,, वहा पुरुषों को भी इस प्रकार का सामना करना पड़ जा रहा है। कही कही पर दादा दादी या नाना नानी अपने बच्चों के बच्चों की देखभाल में अहम भूमिका निभाते और इस प्रकार के सिंड्रोम से ग्रसित देखे जा सकते है।

क्या आता है कि खाली उसका सिंड्रोम से किस प्रकार से उबरे कि हम सब जानते हैं खाली घोंसला सिंड्रोम जीवन के एक संक्रमण कालीन चरण के दौरान का घटनाक्रम है, जिसमें माता-पिता को बच्चों के चले जाने से दुख और एकाकीपन के साथ माया में छले जाने, व्यक्तिगत एवं भावनात्मक हानि का अनुभव होने का एहसास होता है। अब क्योंकि बच्चों को भी अपने जीवन के विभिन्न चरणों में अपनी प्रगति एवं भूमिकाएं जारी रखनी होती हैं अतः माता-पिता को भी इसको समझते हुए और खुद को भी आगे बढ़ने के लिए सक्षम बनाना होगा। आजकल तो वैसे भी विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है जिससे कि संचार के उन्नत तकनीक के कारण हमको यात्राओं पर जाना, फोन कॉल, टेक्स्ट मैसेज, वीडियो कॉल, ईमेल तथा सोशल



मीडिया के माध्यम से घर से बाहर गए बच्चों से नियमित संपर्क बनाए रखना आसान हो गया है। अतः निरंतर संपर्क से माता-पिता अपने बच्चों के प्रति जो काल्पनिक असुरक्षा की भावना, उनके स्वास्थ्य की चिंता, रहने खाने इत्यादि की चिंता मुक्त हो कर अपना तनाव अथवा अवसाद कम कर सकते हैं। दूसरा माता-पिता अपनी सी समसार्थों से जुड़ रहे अन्य अभिभावकों को एक साथ जोड़कर एक छोटा सा सेल्फ हेल्प बना सकते हैं जिसमें वो सब मिल कर छोटे-छोटे स्वच्छ, सरल मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकते है। उन लोगो के साथ मिलकर कुछ सामाजिक सुधार के कार्यक्रमों को आयोजित कर सकते है, या स्वयं से मिलते जुलते विषयों पर सहयोग या चर्चा प्रदान कर सकते हैं। वह अपने जीवन शैली में सुबह और शाम की चलकादामी को शामिल कर सकते है। अथवा छोटी-मोटी एक्सरसाइज, एक नियमित बागवानी, जीवन के अनुभव से जुड़ी चोटी चोटी पाठशाला इत्यादि को अयोजित करके अपना समय व्यतीत कर सकते हैं। माता-पिता अपने आध्यात्मिक प्रगति पर भी समय व्यतीत कर सकते हैं, जैसे ध्यान, साधना प्राणायाम। इसके अलावा माता-पिता बच्चों के जाने के

बाद अपना समय अपने लिए कुछ मूल्यवान कौशल विकास को सीखने में भी व्यतीत कर सकते हैं, जो कि उनके खाली समय में उनके काम आ सकती है। ज्यादा और गंभीर स्थिति होने पर माता-पिता को चाहिए कि वह अपने आसपास चिकित्सीय सलाह एवं उपचार भी करवाये।

सब जानते हैं हम सब जानते हैं की सामाजिक प्रक्रिया में बच्चों को घर से बाहर जाकर विद्यार्जन, जीवकोपार्जन, धनोपार्जन, इत्यादि करना ही पड़ता है ऐसे में प्रत्येक माता-पिता को अपने बच्चों को बाहर भेजने के बाद स्वयं के लिए पहले से ही रणनीति बनाकर रखनी चाहिए। अपने व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन में नए अवसरों को सकारात्मक रूप से देखना एवं बढ़ाना चाहिए। यद्यपि अभिभावकों को बच्चों से अलगाव की चिंता हो जाया करती है फिर भी उनको अपने भावनात्मक एवं व्यवहारिक संतुलन को बनाए रखते हुए बच्चों को उनके सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए आगे बढ़ाने और फलने फूलने के लिए संघर्ष मार्ग पर जाने के लिए प्रेरित करते रहना चाहिए। जिससे वे परिवार और समाज के उत्थान में अपना सहयोग दे पाए।

सामाजिक परिवर्तन के सात चरण



सुषमा त्रिपाठी

परिवर्तन के साथ चरण ज्ञान इच्छा कौशल सुविधा आशीर्वाद उत्तेजना और शुद्धिकरण का पालन करके व्यक्ति व्यक्ति और समुदाय। उन मुद्दों पर स्थाई और सार्थक परिवर्तन लाने की दिशा में कामगार कम कर सकते हैं जो उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है-

सामाजिक परिवर्तन के कई कारण हैं जिसमें पर्यावरण, जनसंख्या प्रौद्योगिकी मेंनावाचार और अविष्कार आदि प्रक्रिया। सामाजिक आंदोलन और राजनीतिक प्रक्रियाएं भी शामिल हैं यह सभी कारण मिलकर और भी बड़े सामाजिक परिवर्तन पैदा करते हैं। सामाजिक परिवर्तन एक जटिल प्रक्रिया है जो एक ही गति में नहीं है हालांकि से निश्चित चरणों में बांटना मुश्किल है लेकिन कुछ एक प्रक्रिया है और पहलू हैं जिन्हें अक्सर सामाजिक परिवर्तन के साथ सम्मिलित किया जाता है।

संतोष और पहचान

सामाजिक परिवर्तन अक्सर समाज के हिस्से में मौजूद व्यवस्था के प्रति असंतोष की भावना से शुरू होता है लोग महसूस करते हैं कि उनकी ज़रूरतें पूरी नहीं हो रही यह एक और बेहतर विकल्प मौजूद है इस चरण में समान विषय वाले लोग एक साथ आना शुरू कर देते हैं और अपनी साहस और लक्षण की पहचान करते हैं।



सामाजिक परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है। जो समय के साथ समाज की संरचना संगठन मूल्य और व्यवहारों में बदलाव लाती है। यह कोई अचानक होने वाली घटना नहीं बल्कि धीरे-धीरे विकसित होती है और विभिन्न चरणों से होकर गुजरती है।

आंदोलन का उदय

संतोष बढ़ाने पर यह सामाजिक आंदोलन का रूप ले सकता है। यह विरोध प्रदर्शन रेलिया संगठित समुदायों आदि की प्रयासों के माध्यम से व्यक्त हो सकता है। इस चरण में नई विचारधाराएं विकसित होती हैं और परिवर्तन के लिए रणनीति बनाई जाती है।

संघर्ष और धुवीकरण

जैसे-जैसे आंदोलन गति पकड़ता है। स्थापित होता है शक्ति संरचनाओं के साथ संघर्ष आदि से गुजरा जाता है वैसे-वैसे संघर्ष विभिन्न रूपों में विकसित होता है राजनीतिक बहस कानून नागरिक अवज्ञा यहां तक की हिंसा भी समझ में अक्सर कहीं ना कहीं किसी न किसी के माध्यम से देखने को मिल जाती है क्योंकि समर्थकों और विरोधियों के बीच

धुवीकरण हो जाता है समर्थकों और विरोधियों के बीच पढ़कर उसी में घूमता रहता है

संस्थागत स्वरूप

यदि आंदोलन पर्याप्त शक्ति और समर्थन प्राप्त करता है तो उसके कुछ लक्ष्य संस्थागत हो जाते हैं। इसका मतलब है कि नए कानून नीतियां संगठन या सामाजिक मानदंड स्थापित किए जाते हैं जो आंदोलन की मांगों को संबोधित करते हैं।

सामाजिक परिवर्तन समय के साथ-साथ सांस्कृतिक व्यवहार सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक संरचना का परिवर्तन है। जो अक्सर जनसंख्या वृद्धि जैसे कारकों से प्रभावित होता है। समाजशास्त्री इस समय के साथ मानवीय अंतः क्रिया और संबोधकों के प्राकृतिक और सामाजिक संस्थाओं में सम्मिलित होना

मानते हैं। सामाजिक सांस्कृतिक कारकों में उपभोक्ताओं की जीवन शैली खरीदारी की आदतें शिक्षा धर्म विश्वास मूल्य जनसंख्या की सामाजिक वर्ग और दृष्टिकोण शामिल है। सामाजिक विकास के चार चरण शिकार संग्रह पशु चल और खानाबदोश इत्यादि शामिल है।

सामाजिक परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है। जो समय के साथ समाज की संरचना संगठन मूल्य और व्यवहारों में बदलाव लाती है। यह कोई अचानक होने वाली घटना नहीं बल्कि धीरे-धीरे विकसित होती है और विभिन्न चरणों से होकर गुजरती है।

असंतोष और तनाव

किसी भी बड़े सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत अक्सर समाज के कुछ वर्गों में व्याप्त संतोष तनाव से होती है। यह असंतोष विभिन्न कर्म से हो सकता है जैसे- आर्थिक असमानता धन संसाधनों का सामान वितरण लोगों में निराशा और आक्रोश पैदा कर सकता है।

सामाजिक अन्याय

जाति लिंग धर्म या अन्य आधारों पर भेदभाव लोगों के पीड़ित और असंतुष्ट करता है।

राजनीतिक उत्पीड़न

नागरिक स्वतंत्रता पर प्रतिबंधों लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का अभाव लोगों में असंतोष को जन्म दे सकता है।

संस्कृत विरोधाभास

पारंपरिक मूल्य और आधुनिक विचारों के बीच टकराव तनाव पैदा कर सकता है।

तकनीकी परिवर्तन

नई तकनीक का आगमन पारंपरिक जीवन शैली और रोजगारों को बाधित कर सकता है। जिससे असुरक्षा की भावना पैदा हो जाती है। इस चरण में असंतुष्ट समूह अपनी-अपने स्तर पर विरोध प्रदर्शन कर सकते हैं। नए विचारों और समाधानों की तलाश कर सकते हैं।

जागरूकता और गोलबंदी

संतोष के बढ़ने के साथ समाज के कुछ जागरूक का प्रभावशाली व्यक्ति या समूह परिवर्तन की आवश्यकता को पहचानते हैं। और दूसरों को इसके बारे में जागरूक करना शुरू करते हैं। इस चरण में निम्नलिखित गतिविधियां शामिल हैं।

विचारों का प्रसार

भाषण चर्चा और मीडिया के माध्यम से विचारों को फैलाना।

समूहों का गठन

समान विचारधारा वाले लोगों का एकजुट होकर संगठन बनाना।

ऐसे व्यक्तियों का सामने आना जो परिवर्तन के आंदोलन का नेतृत्व कर सके।

संसाधनों का जुटना

परिवर्तन के लक्षण को प्राप्त करने के लिए धन समर्थन और अन्य संसाधनों को इकट्ठा करना।

संघर्ष और टकराव

जब परिवर्तन के समर्थक मजबूत शक्ति बन जाते हैं तो उनका मौजूदा व्यवस्था और उसके समर्थकों के साथ संघर्ष टकरा होना स्वाभाविक है। यह संघर्ष विभिन्न रूपों में हो सकता है। अहिंसा के विरोध प्रदर्शन, हड़ताल, सविनय अवज्ञा इत्यादि, राजनीतिक दबाव, लोगों का याचिका चुनाव में भागीदारी इत्यादि सामाजिक शांति देंगे हिंसा तोड़फोड़ आदि यह लेकिन कई बार सामाजिक परिवर्तनों का हिस्सा बन जाता है इस चरण में दोनों पक्ष अपने-अपने विचारों और हितों की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। यह चरण तनावपूर्ण और अनिश्चितताओं से भरा हुआ है तकनीकी और सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन अलग-अलग हैं। सामाजिक परिवर्तन सामाजिक व्यवहार समाज मूल्य और जीवन यापन के तरीकों के माध्यम से परिरक्षित होता है सामाजिक परिवर्तन निश्चित रूप से घटित होते रहते हैं

अनुकूलन और संस्थागत कारण

संघर्ष टकराव के कारण समाज धीरे-धीरे

नए विचारों और मांगों के प्रति अनुकूलन शुरू कर देता है परिवर्तन के कुछ पहलू मौजूदा सामाजिक संरचना और संस्थानों में शामिल कर लिए जाते हैं इन चरणों में कुछ प्रक्रियाएं यहां पर बताना चाहेंगे

समझौता और बातचीत

विभिन्न हिट समूहों के बीच समझौते और बातचीत के माध्यम से समाधान खोजना

कानूनी और नीतिगत परिवर्तन-

में कानून और नीतियों को लागू करने के लिए परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ना

संस्थाओं का पुनर्गठन

सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक संस्थानों में बदलाव करना ताकि वे नए मूल्यों और मानदंडों को समायोजित कर सकें

नई सामाजिक मानदंडों का विकास

समाज में नए व्यवहारों और अपेक्षाओं का स्थापित होना

यह चरण सामाजिक परिवर्तन को स्थाई और व्यापक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक परिवर्तन समय के साथ संस्कृति व्यवहार सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक संरचना का परिवर्तन है। जो अक्सर जनसंख्या वृद्धि जैसे कारकों से प्रभावित होता है।

समाजशास्त्री से समय के साथ मानवीय अतः क्रियो और संबंधों के प्राकृतिक विकास ग्रुप में देखते हैं जिससे संस्कृति को सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन होता है। इसके अंतर्गत मूलतः प्रस्तुति स्टार तथा व्यवहार के अनेक अनेक प्रतिमान बनते और बिगड़ते हैं। सामाजिक परिवर्तन के कई कारण हैं और वे अक्सर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। जिसमें से मुख्य कर्म में आता है राजनीतिक प्रक्रियाएं पर्यावरणीय प्रक्रिया सामाजिक आंदोलन आर्थिक प्रक्रियाएं और तकनीकी प्रगति ज्यादातर परिवर्तन तात्कालिक नहीं है। समझ में परिवर्तन अक्सर बहुत धीमा होता है यह लोगों के जीने की पद्धति को संशोधित करता है।

वह आदमी

मैं परेशान था,
वह परेशान था,
वह क्या सोचता था,
मुझे पता नहीं था !
मैं सोचता था,
वह आदमी,
आदमी नहीं हो सकता था,
पता नहीं वह क्या था !

सब सूटेड - बूटेड,
महंगी गाड़ियों में,
सजी - धजी गाड़ियों में,
बारात जा रहे थे !
कुछ खुसर-पुसर,
कुछ सन्नाटा,
एक बाजार में,
कुछ दूढते थे !

जाने कब वो,
पा गए थे शराब,
जिसके लिए वह,
सभी थे बेताब !
जनवास में पहुंचे,
इधर-उधर ताकते,
गंदगी ठौर एकांत में,
पी ली थी शराब !

सुंदर उछाह में,
वह आदमी,
नहीं हो सकते,
धुत होकर नशे में !
उनके लिए कोई भी,
उत्सव नहीं था,
वह आदमी,
आदमी नहीं था !

अपनी छवि,
बिगाड़कर,
पीते हैं जो शराब,
उसे क्या कहेंगे !
वह बेवड़ा,
आदमी नहीं होता,
वह किसी का रिश्तेदार,
नहीं हो सकता !

वह कोई शैतानी,
आदम - हौआ,
भी नहीं हो सकता,
वह नाली का कीड़ा था !
कीड़े से भी गया बीता,
वह आदमी,
आदमी के पास नहीं,
अपनी प्रजाति के साथ था !!

- डॉ. सतीश 'बब्बा'

अगर धरती पे पानी है

अगर धरती पे पानी है
तो समझो ज़िन्दगानी है

जहाँ हैं पेड़ और पौधे
हवा कितनी सुहानी है

लगानी है तुम्हें फैक्ट्री
हमें बगिया लगानी है

बिना जल के तुम्हीं बोलो
क्या खेती है किसान है !

न सूखे कूप- सरिता- सर
जुगत ऐसी लगानी है

निगाहें भी नहीं बोलें
ये कैसी बेजुबानी है

- धर्मन्द्र गुप्त साहिल

बदल गया संसार

प्रकृति नहीं बदली
 पेड़ पौधे नहीं बदले
 सूर्य चंद्र तारे नहीं बदले
 बदले हैं इंसान बदल गया है संसार
 जो इंसान निर्मित है
 मन बदल बुद्धि बदली
 बढ़ गया लोग लाभ
 जोड़ने के चक्कर में
 आपस की टक्कर में
 क्या कुछ नहीं बदला
 आदमी अब आदमी ना रहा
 आदमी की कीमत नहीं
 बैंक बैंकेस तिजोरी में रखे धन से
 होती है आदमी की कीमत
 आदमी ने पेड़ काटे
 जंगल नष्ट किया
 और अब ना शुद्ध हवा ना पानी
 आदमी की विकराल आबादी
 अनाज में मिलावट महंगाई
 भ्रष्टाचार काल बढ़ भुखमरी
 ना रोजगार न शुद्ध हवा
 बिकता हुआ पानी
 बढ़ता ताप संताप असंतोष
 भीड़, भीड़ अब आदमी ही आदमी
 आदमी का दुश्मन आदमी
 दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की कगार पर
 हां बदल गया संसार
 मर्यादा एकता प्यार सब तार तार

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

शतकवीर हुए वैभव

बिहार के समस्तीपुर का युवा किशोर,
 चौको व छक्कों से खूब मचाया शोर।
 5 साल की ट्रेनिंग का था ये परिणाम,
 राजस्थान रॉयल्स के खूब आया काम।
 17 में पचास और 35 में बना दिए सौ,
 पिता के ख्वाबों को पंख लगाएँ देखों।

बिहार के समस्तीपुर का युवा किशोर,
 चौको व छक्कों से खूब मचाया शोर।
 14 साल की उम्र में जड़ दिया शतक,
 धुरंधरों की गेंदें सीमा पार दिया पटक।
 वे दुनिया के सबसे युवा बल्लेबाज बनें,
 आईपीएल डेब्यू कर रहे खिलाड़ी बनें।

बिहार के समस्तीपुर का युवा किशोर,
 चौको व छक्कों से खूब मचाया शोर।
 पहली गेंद पे शार्दुल ठाकुर का सामना,
 छक्का लगाकर बता ही दिया दम हैं ना।
 पिता ने क्रिकेट के लिए जमीन बेच दी,
 बेटे वैभव ने करियर की ज़मीं सींच दी।

बिहार के समस्तीपुर का युवा किशोर,
 चौको व छक्कों से खूब मचाया शोर।
 परिवार काफी संघर्षों से गुजरना पड़ा,
 उम्र पर भी सवाल उठे वो अडिग खड़ा।
 उसने 7 चौके और 11 छक्के लगा दिए,
 टीम, अभिभावकों के नाम रोशन किए।

- संजय एम तराणेकर

तपता सूरज

सुबह जल्द तुम आ जाते हो।
 ताव हमें क्यों दिखलाते हो।।

तरदूतर बहता माथ पसीना।
 हुआ कठिन अब जीवन जीना।।

ऐसा क्या खा कर तुम आते।
 जो इतनी ऊर्जा हो पाते।।

दुबके बैठे हैं सबघर में।
 नरमी लाओ कुछ तेवर में।।

हमसे क्यों नाराज हुए हो।
 बरसों से या आज हुए हो।।

सूरज दादा प्यार जताओ।
 इतना तो अब नहीं सताओ।।

- प्रिया देवगन



प्रकृतिमेल डेस्क

गूलर



प्रकृति के चिकित्सालय में मिलने वाले अनगिनत और निःशुल्क औषधीय पेड़ों में एक नाम गूलर का भी आता है। इस पेड़ के सभी अंग किसी न किसी बीमारी में लाभ देने वाले होते हैं। गूलर में एंटी.पायरेटिकए एंटी.इंफ्लामेटरीए एंटीमाइक्रोबियलए और एंटीडायबिटिक गुण होते हैं जो डायबिटीजए लिवर डिसऑर्डरए डायरिया और फेफड़ों की बीमारी के इलाज में मदद करते हैं।

गूलर मधुमेह में लाभ देता है। गूलर में एंटीडायबिटिक गुण होते हैं जो रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। जिससे मधुमेह रोगियों को लाभ मिलता है। आज कल के अनियमित खानपान और अव्यवस्थित जीवनशैली कि वजह से अधिकांश लोगो का पाचन तंत्र खराब रहता है। गूलर खराब पाचन को दुरुस्त करता है। गूलर पाचन शक्ति को सही करता है। पेट में गैसए खराब हाजमें को अच्छा करता है। यह डायरिया की दिक्कत में भी लाभकारी है। हमारे पाचन तंत्र का संबंध लिवर से होता। गूलर लिवर की समस्याओं में भी काफी लाभकारी है। सांस संबंधी दिक्कतों

में भी गूलर काफी लाभकारी होता है। यह फेफड़ को स्वस्थ रखता है और सांस संबंधी बीमारियों में लाभ देता है। खांसीए सांस चढ़ना जैसी दिक्कतों में गूलर लाभकारी है।

गूलर घाव को ठीक करने में लाभ देता है। पुराने से पुराने घाव को भी गूलर ठीक करता है। फोड़े.फुंसियों को ठीक करने में भी गूलर लाभकारी है। रक्तस्राव को रोकने में मदद करता है। गूलर ल्यूकोरिया की समस्या में फायदेमंद

होता है। गूलर के गुण शारीरिक कमजोरी को दूर करने में मदद करते हैं। शरीर को स्वस्थ करके यह रोग प्रतिरोधक शक्ति को मजबूत करता है। गूलर हड्डियों को भी मजबूत बनाता है। गूलर शरीर को स्वस्थ रखकर नींद से जुड़ी समस्याओं में भी लाभ देता है। माना जाता है कि गूलर दांत और मसूड़ों की समस्याओं को भी दूर करता है।



प्रकृति के रंग



लक्ष्मीकांत
लखीमपुर



“

“ प्रकृति संरचना का हर निर्माण एक आनन्द है जो एक दूसरे से जुड़ता ही तभी है जब निर्माण करना रहता है जो अपने स्वभाव पर गतिमान होने से पूर्ण होती है, सिर्फ मानव अपने वैचारिक ज्ञान की दृष्टि से स्वभाव के विपरीत चलकर अपने जीवन में संघर्ष कर रहा है।”

- अशोक मानव

”

स्थापित 1948

74 वर्षों का विश्वास

लाला जुगल किशोर गोटे वाले

परिधान वही जो
व्यक्तित्व को निखार दे



55 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। सम्पर्क: 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

Mahindra
Rise.

MAHINDRA TRACTORS
Technology se Surakhi

नई महिंद्रा XP PLUS सीरीज़

श्रेणी में पहली बार

माइलेज शानदार

पावर दमदार



✉ durgaautosale2000@gmail.com ☎ 9919528830 ☎ 0545-4242216

📍 इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मदली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।